2507

करमा

आदिवासी लोकगीतों का संग्रह

डॉक्टर अर्जुनदास केसरी

प्रकाशक : **लोकरुचि प्रकाशन**
सिनेमारोड, राबर्ट्सगंज
मिरजापुर 231216 (भारत)

वितरक : **केसरी पुस्तक भण्डार**
राबर्ट्सगंज, मिरजापुर 231216 (भारत)

© **अर्जुनदास केसरी**

आवरण : **ब्रह्मदेव मधुर**

मूल्य : पच्चीस रुपये
प्रथम संस्करण : अनन्त चतुर्दशी '81

मुद्रक—गौरीशङ्कर प्रेस मध्यमेश्वर, वाराणसी

KARAMA

By

Dr. Arjundas Kesari

[Lokruchi Prakashan, Cinema Raod Robertsganj, Mirzapur (India)

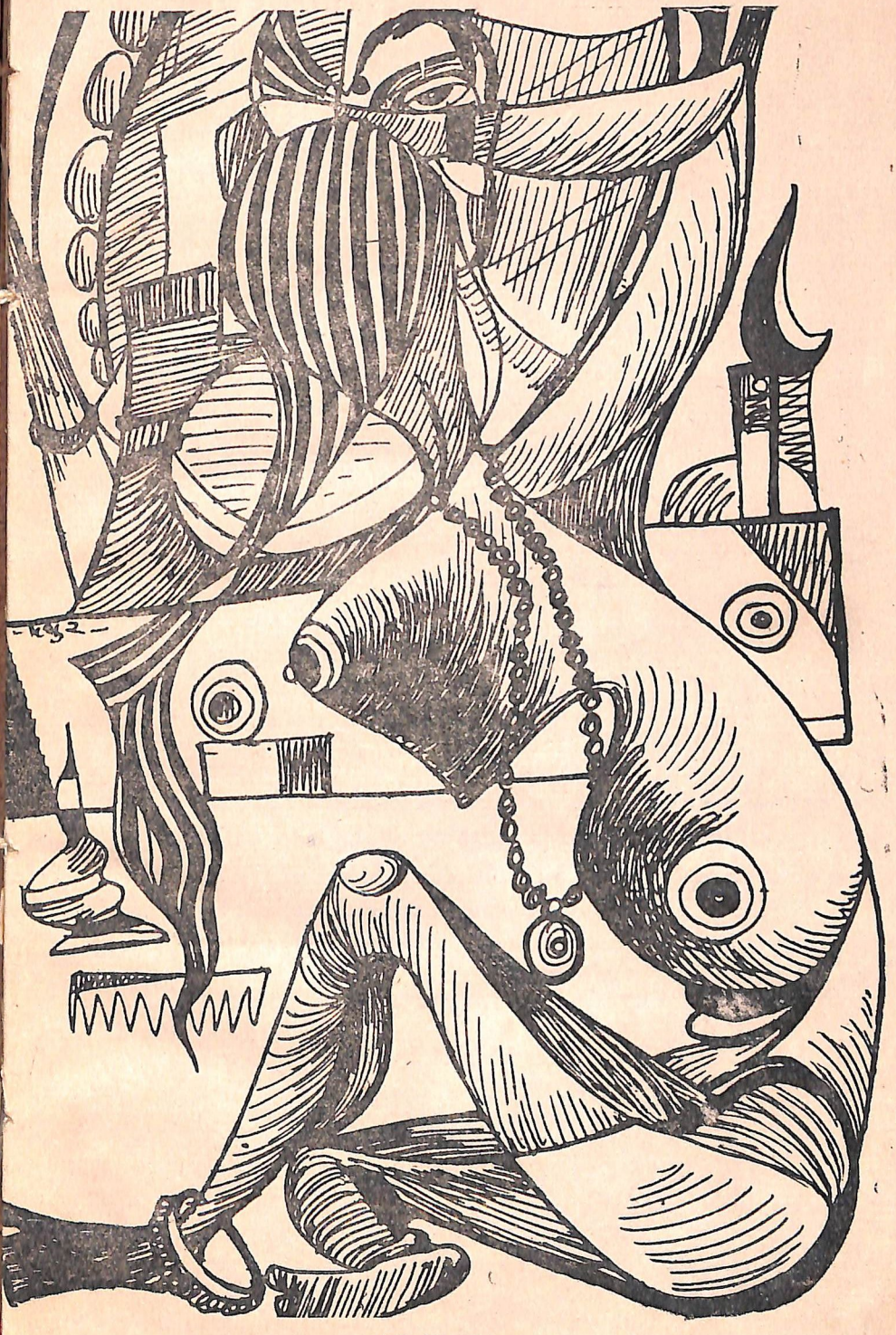

क र मा

सुख-दुःख

"कवनी चिरइया सुख सोवे भइया रेऽऽऽ
कवनी चिरइया रोवे रातऽऽऽ ?"
"सुखिया चिरइया सुख सोवे रेऽऽऽ
दुखिया चिरइया रोवे रातऽऽऽ।"

For the tribal peaple the dance is not an obtional luxury. It is a way of life, a source of life. Rhythm and poetry means everything to them. "The tribe that dances does not die".

—Verrier Elwin

संगीत नाटक अकादमी
पुस्तकालय
दि०.........

।। प्रकाशक की बात ।।

डॉक्टर अर्जुनदास केसरी की कृति 'लोरिकायन' का प्रकाशन एक जोखिम भरा काम था लेकिन प्रकाशन के बाद 'लोरिकायन' की लोकप्रियता ने हमें साहस दिया और उसी का परिणाम है 'करमा' का प्रकाशन ।

आदिवासियों के लुप्तप्राय गीतों का यह संकलन सुधीजनों के स्नेह का भागीदार होगा, ऐसा विश्वास है ।

—कन्हैयालाल, रामगोविन्द दास

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ
पुस्तकालय
2507

॥ संग्रह के बारे में ॥

लोकगीत जन-मानस के हृदय से उमड़े वे भाव हैं जिनके लिए किसी प्रकार के आवरण की आवश्यकता नहीं होती। उनका जन्म अधिकतर आनन्द–आह्लाद के वातावरण में होता है, क्योंकि लोक-मानस दुःखी होने का अभ्यासी नहीं है। वहां तो सुख सुख ही सुख, सन्तोष ही सन्तोष और आनन्द ही आनन्द है। वही आनन्द उसकी आत्मा है। आदिवासी गीतों में उसकी सर्वोत्तम अभिव्यक्ति होती है। वैरियर एलविन के अनुसार नृत्य आदिवासी जीवन की अनिवार्य शर्त है।[1] इसलिए कि उसकी एक अलग-थलक दुनियां है। उसकी उस दुनियां में पेड़ हैं, पौधे हैं, नदियां हैं, नाले-झरने हैं, पशु-पक्षी और कीड़े-मकोड़े हैं, सभी उसके मित्र हैं।

आदिवासी, कबीलों और बनजारों का जीवन जीता है। सूरज की किरणों के संग उठना, शिकार, कन्द-मूल-फल या महुआ, पत्ता, लकड़ी की तलाश में निकल जाना, कुछ है तो खेती-बारी करना, भेंड़-बकरी चराना, मजूरी करना और सूरज के अस्ताचलगामी होने के साथ रैन-बसेरा के लिए पुनः अपनी राम-मड़ैया में आना, रूखा-सूखा खाकर या दारू पीकर नाचना-गाना, फिर सो जाना, उसकी दिनचर्या है जिसकी अभिव्यक्ति वह अपने गीतों में करता है। भवानी इनाक्षी के अनुसार लगभग 15 हजार वर्ष पूर्व से ही आदिवासी फसलों के कट जाने के उपरान्त हर्षातिरेक में नाचने-गाने का उत्सव मनाता आ रहा है।[2]

आदिवासी-नृत्य के लिए किसी प्रकार के साज-बाज की आवश्यकता नहीं होती। स्त्री-पुरुष दो दलमें आमने-सामने खड़े हो जाते हैं, बस मादल की आवाज पर नृत्य शुरू हो जाता है तो रात-रात भर चलता रहता है। आदिवासी झूम-झूम कर नाचते हैं, आदिवासियोंका सर्वप्रमुख और महत्वपूर्ण नृत्य करमा है जिसे घसिया, गोंड, खरवार, मझवार, कोल, पनिका, धांगर, चेरो, कोरवा आदि सभी जातियां नाचती हैं। वैसे तो, करमा इनके मनोरंजन का मुख्य साधन, जीवन की प्रेरणा है तथापि उसमें साहित्य, संगीत और संस्कृति की त्रिवेणी भी प्रवाहित होती है। विशेष पर्वों-त्योहारों पर करमा-पूजन भी वे करते हैं। अपने देश का आदिवासी-नृत्य अन्य देशों की अपेक्षा अधिक मौलिक तथा प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति को अभिव्यक्ति देने वाला है[3]।

करमा का क्षेत्र—भारत में अनेक प्रकार के आदिवासी नृत्य प्रचलित हैं जिनमें राजस्थान और पश्चिमी भारत का बनजारा नृत्य, मेवाड़ के भीलों का होली नृत्य, सन्थाल छोटा नागागपुर के आदिवासियों का रोमांस प्रधान नृत्य, बिहार की 'हो' जाति का 'मघा' नृत्य, छोटा नागपुर का सरहुल नृत्य, दीवाली के अवसर पर नाचा जाने वाला मध्य प्रदेश के बैगाओं का रीना, विलमा, सुआ, तपदी, मध्य प्रदेश के तिन्दोरी जिले के बैगाओं का सैला नृत्य, बस्तर के मुरियाओं का मन्द्री नृत्य, छेरता नृत्य, हर-इन्दन्ना नृत्य, हुल्की नृत्य, करसनाज नृत्य बस्तर में मुरियाओं द्वारा विवाह के अवसर पर नाचा जानेवाला विसन नृत्य आदि मशहूर हैं, किन्तु उन सब में करमा सबसे महत्वपूर्ण तथा देश के अधिकांश आदिवासियों द्वारा नाचा जानेवाला नृत्य है।

मध्य भारतकी सबसे प्राचीन जनजाति गोंड जो मण्डला के सतपुरा पहाड़ियों के मैकाल पहाड़ी में निवसित हैं, मध्य प्रदेश के दक्षिण-पूरब में रहते हैं तथा जो उड़ीसा और आंध्र प्रदेशके रहने वाले हैं, अपने विविध पर्वों-त्यौहारों तथा सांस्कृतिक सामाजिक समारोहों में करमा नाचते तथा गाते हैं।

करमा बैगाओं का भी सर्वप्रमुख नृत्य है। ये मध्य प्रदेश के गोंडों की तरह पगड़ी बांध कर, नये वस्त्राभूषण में पूरे परिवार के साथ मुक्त भाव से नृत्य करते हैं तथा मादल बजाते हैं।

पूर्वी भारत के उड़ीसा राज्य में मयूरभंज इलाके के भुमिया जाति के लोग भी करमा, अन्य नृत्यों की अपेक्षा अधिक चाव और उत्साह से ग्यारह दिन तक लगातार नाचते हैं। 'उड़ीसा के ही संभलपुर के भिजल खरिया, उरांव, किसान और कोल भी कर्म-रानी की पूजा करके अपने उत्तम भाग्य के लिए 11 दिनों तक करमा नाचते हैं।[4] यहीं के गोंड और पाना भी 'देशी करमा' नाचते हैं। आसाम के जेमी जनजाति के लोग (नागा) पहाड़ियों में हार्न और ढोल बजाकर 'करमा जिम' नाचते हैं।

करमा के प्रकार और प्रतीक—करमा के कई प्रकार हैं। भिन्न-भिन्न प्रदेश के आदिवासी भिन्न-भिन्न प्रकार से करमा नाचते और त्योहार मनाते हैं जिनमें मुख्य हैं—टाडी करमा, लहाकी करमा, खलहा करमा, झूमर करमा, झारपत करमा आदि। ऐसा प्रतीत होता है कि करमा उनका मुख्य और आरंभिक नृत्य है जिससे बाद में अन्य प्रकार के नृत्य विकसित हुए हैं। करमा आदिवासियों के रोम-रोम में रमनेवाला और जन-जन के आह्लाद-आनन्द का प्रतीक है। भवानी इनाक्षी के शब्दों में करमा 'अच्छे भाग्य' का प्रतीक है और यह खरीफ और रवी की फसल के बीच में शिव

पूजनोत्सव के रूप में मनाया जाता है ताकि फसल उत्तम हो,[6] किन्तु मेरा विचार है कि करमा पुरुषार्थ का प्रतीक भी है। आदिवासी कर्म को ही पूजा मान कर 'करमा' या 'कर्मा' नाचते हैं। करमा गीतों में न केवल शिव की प्रार्थना की जाती है अपितु उसमें सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक तथा मनोवैज्ञानिक भावनाओं, नियमों तथा विश्वासों का उद्घाटन भी होता है। मुक्तभाव से गाये जाने के बाद भी उसमें कहीं अश्लीलता, अशिष्टता अथवा मर्यादाहीनता के दर्शन नहीं होते।

करमा की कहानी—एक राजा के चार लड़के थे। तीन बड़े थे और एक छोटा था। छोटा भौजाई के ताने या मेहने का शिकार होकर मारा-मारा फिरने लगा, किन्तु सत्यनिष्ठ और ईमानदार होने के कारण उसका सर्वत्र सम्मान भी होने लगा। उसे पैसे की कमी न थी, पर वह धन के प्रति अनासक्त था। उसके इस गुण से प्रसन्न होकर एक राजा ने उससे अपनी कन्या का विवाह कर दिया। वह सुखपूर्वक रहने लगा और बारह वर्ष का समय देखते ही देखते बीत गया।

इधर शेष तीनों भाइयों की दशा दिन-प्रति-दिन खराब होने लगी। वे दाने-दाने को मुहताज होने लगे। छोटे भाई ने राजकुमार के रूप में अपनी पत्नी के साथ अपने घर की ओर प्रस्थान किया तो गांव के लोगों ने उसे दूर से ही देख कर सोचा, कोई राजा चढ़ाई करने आ रहा है। लेकिन जब वह निकट आया तो गांव के लोग उसे पहचान कर आनन्द-विभोर हो गये। सम्पन्नता और विपन्नता के मिलन-पर्व को करमा नाम दे दिया। इसलिए कि कर्मदेव की पूजा के परिणाम स्वरूप ही यह शुभ दिन देखने को मिला था। आदिवासी कर्म एकादशी, विजयदशमी, जीवित पुत्रिका, होली, अनन्त चतुर्दशी के अवसर पर करमा का विशेष आयोजन करते हैं।

करमा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में 'मिर्जापुर गजेटियर' में एक कथा इस प्रकार दी गयी है—एक मझवार या मांझी परिवार में एक पिता के सात पुत्र थे जिनमें से छह नित्य प्रातः कमाने के लिए काम पर चले जाते। सातवां लड़का जो सबसे छोटा था, घर पर रहता और अपनी भाभियों से भोजन बनवा कर भाइयों को खिलाने के लिए काम पर ले जाता था। वह आते समय 'करम की डाल' काट लाता और घर के सामने उसे गाड़ कर अपनी छहों भाभियों के साथ नाचता था। एक दिन भोजन पहुंचाने में जब विलम्ब हुआ तो एक बड़ा भाई अचानक आ धमका। देखा तो सभी नाचने में मग्न थे। क्रोध में आकर उसने 'करम की डाल' उखाड़ लिया और नदी में डाल दिया। इससे दुःखी होकर छोटे भाई ने गृह-त्याग कर दिया। नदी में बहती उस डाल को वह पकड़ना चाहता था, किन्तु ज्योंही पकड़ने की कोशिश करता आवाज आती—"तुम पापी हो, मुझे नहीं छू सकते।" वह सहम जाता। कुछ समय बाद उसे किसी अज्ञात शक्ति से घर लौटने की प्रेरणा मिली

तो लौटा। किन्तु तब तक घर की दशा बिल्कुल बिगड़ चुकी थी। सभी प्राणी दाने-दाने को मुहताज थे। छोटे भाई ने कहा, "इस कष्ट का कारण है डाल फेंकना वे 'करम देवता' थे। हमें उनकी पूजा करनी चाहिए।" वे पूजा करने लगे तो उनके दिन पुनः लौटे, तभी से करमा पूजा की परम्परा चल पड़ी[6]।" इन दोनों कथाओं का कथ्य एक ही है। दोनों से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि करमा-पूजा के पीछे लोक-विश्वास मुख्य है। करमा की पूजा हर प्रकार की सम्पन्नता और समृद्धि के लिए की जाती है।

करमा कैसे—करमा आदिवासियों का सबसे बड़ा त्योहार है जिसकी तैयारी वे महीनों पहले से करने लगते हैं। करमा के पहले वे सबके लिए नये कपड़े, सम्भव हुआ तो आभूषण आदि बनवा लेते हैं। नये वाद्य-यंत्र खरीद लेते हैं। स्त्रियां कुछ दिन पूर्व जौ को जमीन में बोकर जरई तैयार कर लेती हैं। फिर प्रायः अनन्त चतुर्दशी के दिन 'करमडाल' (कदम की डाली) काटने के लिए गाँव के तमाम आदिवासी समूह में नृत्य करते, गाते-बजाते जंगल में जाते हैं। वहां क्वांरी बालिका डाल काटती है जिसे अन्य बालिकाएं जमीन पर गिरने से पूर्व ऊपर ही लोक लेती हैं और फिर सभी लोग नाचते-गाते गाँव में आकर एक निश्चित स्थान पर बैगा की सहायता से उस डाल को गाड़ते तथा शराब चढ़ाकर होम-शाकला करके उसकी पूजा करते हैं। शराब का प्रसाद पाकर नाचना-गाना आरंभ करते हैं तो प्रायः 12, 24 या 36 घन्टे तक लगातार नाचते ही रहते हैं। इसमें हर अवस्था के लोग हाथ में हाथ मिलाकर बीस-बीस, पच्चीस-पच्चीस की पंक्तियां बनाकर उस डाली के चारों ओर घूम-घूम कर, धूम-झूम कर नाचते-गाते हैं। उनके पांव एक साथ बिच्छू की तरह कभी आगे तो कभी पीछे होते रहते हैं। दूध की तरह धवल चाँदनी में किसी प्रकाश की आवश्यकता नहीं पड़ती।

हर अवसर के लिए अलग-अलग गीत होते हैं और कहीं-कहीं कुल 160 गीत तक गाये जाते हैं। प्रातः नये-नये परिधान में एकत्र होकर स्त्रियां जई या जरई चढ़ाकर पूजन करती हैं फिर समूह में ही सभी आदिवासी मिलकर उस करम डाल को उखाड़कर किसी नदी में प्रवाहित कर देते हैं।

करमा की भाषा—करमा की भाषा कोई एक भाषा या बोली नहीं है। उस पर स्थानीय भाषाओं और बोलियों का प्रभाव है। उड़ीसा के करमा की भाषा उड़िया है तो बिहार के करमा की भाषा बिहारी। उसी प्रकार मध्य प्रदेश के करमा की भाषा भी स्थानीय बोलियों से प्रभावित है।

जहां तक मिरजापुर के करमा की भाषा का सम्बन्ध है, वह मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश की अनेक भाषाओं और बोलियों की मेलजोल खिचड़ी है, क्योंकि मिरजापुर का कक्षिणांचल मध्य प्रदेश और बिहार की सीमा पर ही स्थित है। तीनों प्रदेशों कीं संस्कृति और भाषा दोनों का आदान–प्रदान होता रहता है। यही कारण है कि यहाँ 62·8% बिहारी बोली जाती है जिस पर पश्चिमी भोजपुरी का प्रभाव अधिक है। जहाँ तक सोनपार के आदिवासियों की भाषा का प्रश्न है, पश्चिमी हिन्दी से प्रभावित बघेली ही अधिक बोली जाती है। सुदूर दक्षिण में 'कोलवरियन परिवार' के मुन्डाओं की कोरवारी भी बोली जाती है[7]।

प्रस्तुत संग्रह में सोन के आस-पास दोनों ओर बसे प्रायः सभी जाति के आदिवासियों के गीत संकलित हैं, अतः उन पर भी क्रमशः बिहारी, भोजपुरी, बघेली, कुछ छत्तीसगढ़ी और कुछ अवधी का प्रभाव हैं। भाषा में बहुत अंतर न होते हुए भी उच्चरण मैं भारी अन्तर है। आदिवासी किसी शब्द का उच्चारण खींचकर करता है। अतः उसमें ध्वन्यात्मकता और संगीतात्मकता अपने आप आ जाती है। संज्ञा शब्दों के प्रयोग में थोड़ा अन्तर है, किन्तु सर्वनामों के प्रयोग में भारी अंतर आ गया है। विशेषणों का प्रयोग तोड़-मड़ोर कर किया गया है। वे सुन्दर को 'सुन्नर' अच्छा को 'नीक' बोलते हैं। क्रियाओं के प्रयोग में भी बहुत अन्तर है। इसी प्रकार अव्यय और कारकों के प्रयोग में भी बड़ा अन्तर देखा जाता है। वास्तव में इनकी भाषा और बोलियों के शब्दों का कोश तैयार किया जाना चाहिए और अलग से भाषा वैज्ञानिक अध्ययन भी किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से भी प्रस्तुत संग्रह की उपादेयता अपने आप सिद्ध हो जाती है। 'करमा' में आये धांगरी भाषा के शब्दों की एक सूची उदाहरण के तौर पर दी जा रही है– अरखी (शराब), अम्ब (पानी), मंडी (भात), असमा (रोटी), एकवा (घर), मन्न (पेड़), तठगा (आम), खेखेल (जमीन), अहो (बैल), बेंजा (विवाह), बाड़ा (गाना), बेड़हो (बकरी), चिच्च (आग), पनहीं (जूता), तथा क्रियाओं में—बरखोय (आओ), कला (जाओ), ओना (खाओ), अलरवा (हँसना), आदि। इसी प्रकार अन्य जातियों की बोलियों में भी अन्तर होता गया है।

करमा का संग्रह

आदिवासी गीतों का संग्रह अत्यन्त दुरूह, दुष्कर, श्रमसाध्य व्ययसाध्य और खतरनाक है। करमा के संकलन का संकल्प मैंने आज से लगभग 10 वर्ष पूर्व किया था। उन दिनों आदिवासी बहुल-क्षेत्र चोपन के एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक था। उसी समय आदिवासियों के बीच रहने, उनके रीति-रिवाज, खान-

पान, रहन-सहन, आचार-विचार, पहनावा तथा बहुत कुछ उनके साहित्य से भी परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ था। 'लोरिकायन'[8] के संकलन के दौरान उनका परिचय क्रमशः आत्मीयता और सौहार्द्रता में परिणत होता गया। उसी समय उनके कुछ आयोजनों में भी सम्मिलित होने के अवसर मिले थे।

सन् 1972-73 की एक घटना याद आती है। अनन्त चतुर्दशी का दिन था। उस दिन आदिवासियों के गांव सिल्थम में करमा होना था। सिल्थम राबर्टसगंज से लगभग 15 किमी० पूरब पहाड़ी गांव है। वर्षा के दिनों में वहाँ जाना कष्टसाध्य तो था। ही, खतरनाक भी था। चारों ओर पानी भरा था। कीड़े मकोड़ों का भय था हम लोगों ने 4 बजे दिन जीप से प्रस्थान किया जो रामगढ़ से आगे जाकर कीचड़ में फंस गयी। उसे निकानने के प्रयास में सूर्यास्त हो गया। फिर, जीपको रामभरोसे छोड़कर हम गांव की ओर चल पड़े। रात का समय था। पांव कहीं के कहीं पड़ते उद्धव के पांव हो गये थे। हर कदम लगता जैसे किसी सर्प के फन पर पड़ रहा है।

खैर, गांव पहुंचते आठ बजने लगे। हाथ-पांव धोया गया तो मकई सामने आयी। लोग टूट पड़े उस पर। खाने-पीने के बाद गांव के एक छोर से मादल की आवाज सुनायी पड़ी तो सब लोग नाच देखने चले गये। देखा, एक पेड़ (कदम) की डाल गाड़ी गयी थी। उसके पास बैठा बैगा पूजा कर रहा था। ठर्रा की बोतलें पास सबके प्रसाद के लिए रखीं थीं। पूजनोपरान्त प्रसाद बांटा गया और नर्तक-नर्तकियों ने झूमकर गाना आरंभ किया। नाच देखने और गीत सुनने का आनंद तो मिलता था, किन्तु अर्थ कम ही पल्ले पड़ता था। तब भी, कुछ गीत नोट कर लिये गये।

इसी तरह का एक दूसरा आयोजन सन् 75–76 में राजपुर (राबर्टसगंज) में हुआ था। जेठ की दुपहरी आग उगल रही थी। लोकवार्ता शोध संस्थान की ओर से सचल शिविर का आयोजन किया गया था जिसका एक पड़ाव राजपुर में था। इसकी सूचना राजा साहब को पहले ही दे दी गयी थी। उन्होंने आदिवासियों को करमा नृत्य के लिये आमंत्रित कर रखा था। दूर-दूर के आदिवासी दिन में ही आ गये थे और उनको भर पेट सूअर का गोश्त खाने और छककर दारू पीने की व्यवस्था कर दी गयी थी। रात के नौ बजते नृत्य प्रारंभ हो गया। पुरुष सिर पर पगड़ी बांधे थे। धोती की कछनी काछ कर ऊपर से गमछा बांध लिये थे। पांवों में घुघरू बंधे थे। स्त्रियां साड़ी पहने थीं। मादल बजने लगे। सबसे पहले एक बूढ़े ने गीत की एक पंक्ति दुहराई। फिर क्या था! उसे लेकर झूम-झूम कर सभी गाने लगे। बिना किसी रुकावट के, एक-पर-एक गीत गाये जाने लगे। एक अजीब उतार-चढ़ाव था उनके स्वरों में। पूरा वातावरण जो मुखर हुआ तो रातभर आनन्द की वर्षा करता रहा। यहाँ से भी कुछ गीत नोट किये गये।

एक बार चोपन से आगे तेलगुड़वा में एक आदिवासी-सम्मेलन का आयोजन किया गया था। उसमें घसिया जाति के लोगों ने कुछ करमा-गीत गाये थे जो सचमुच बड़े अच्छे लगे थे। उनमें से कुछ को मैंने संकलित कर लिया था।

एक बार मैं दुद्धी गया हुआ था। वहां आदिवासी महिलाएं बालू लादने, उसे ट्रक से नियत स्थान पर ले जाने तथा फिर उतारने का कार्य करती हुई गोदना गीत गारही थीं जिसकी पंक्तियां हवा में गूंज रही थीं, उस मर्मस्पर्शी गीत को लिखने के लिए मैं उतावला हो उठा और जब उनके पास पहुँचा तो उन्होंने गाना ही बन्द कर दिये। गाड़ी के ड्राइबर से बात की तो उसने उपेक्षा की। फिर उस स्थान पर गया जहाँ बालू उतारी जा रही थी। उसके मालिक से कहा तो वह किसी तरह तैयार हुआ। वहीं एक बूढ़ी महिला ने दो-तीन गीत नोट कराये जो बड़े मार्मिक थे।

यहीं कुछ महिलाऐं धान के बीज रोप रही थीं। वे रोपते हुए गीत भी गा रही थीं जो बहुत ही भावपूर्ण थे। इन्हें सुनने के लिए मैं थोड़ी दूर पर स्थित एक पेड़ पर जा चढ़ा, क्योंकि जानता था कि मेरे बारे में उन्हें तनिक भी जानकारी हुई तो वे यातो गाना ही बन्द कर देंगी, या फिर उसे मन और तल्लीनता से न गा सकेंगी। खैर, उस पेड़ पर चढ़कर ही मैंने उनके गीत टेप किये।

इसी तरह की एक घटना मुझे राबर्ट्सगंज के पास की ही याद आती है। एक सज्जन की छत कूटी जा रही थी। कोल जाति की महिलाएं उसे कूटती हुई 'कोल छाँटइ कोदइया कोलिन मुसुकाइ' पंक्ति बार-बार दुहरा रही थीं। यह पंक्ति मुझे बड़ी अच्छी लगी थी। उसे लिखने के लिए मैं व्याकुल हो उठा था, लेकिन महिलाएं उसे लिखाने के लिए तैयार न थीं। फिर, मैंने गाँव के एक अस्सी वर्षीय बुड्ढे को मिलाया। शायद उसकी बहू थी जिसे कुछ और गीत याद थे। सम्पर्क बढ़ाने के बाद वह कुछ और स्त्रियों को बुलाकर गाने के लिए तैयार हुई और कुछ महत्वपूर्ण गीत मुझे प्राप्त हो गये।

राबर्ट्सगंज से लगभग ४० किमी० पूरब घनघोर पहाड़ में एक स्थान है चिचिली पनौरा। वहाँ खरवार जातियां अधिक रहती हैं। गर्मी का मौसम था। महुआ चू रहा था। बीड़ी पत्ता भी तोड़ा जा रहा था। पानी की बड़ी किल्लत थी। गांव की महिलाएँ भोर ही में उठतीं और दो-दो घड़े सिर पर रखकर एक बगल में दबाये, फिर एक हाथ में लेकर पानी की तलाश में निकल पड़ती थीं। वे अपनी उसी यात्रा में गीत भी गाती थीं। खैर, उनके गीतों को लिखने का सवाल बड़ा टेढ़ा था। मुझे पता चला कि वे महिलाएँ पहाड़ी चुएँ के पास जाती हैं और वहीं से नहा धो कर पानी लेकर आती हैं। मैंने गांव के एक व्यक्ति को वहाँ चलने के

लिए तैयार किया। हम दोनों चल पड़े उस चुएँ की ओर। पीछे-पीछे महिलाएं भी जा रही थीं। हम वहीं जाकर एक पहाड़ी के नीचे सो रहे। मैंने टेपरेकार्डर खोल दिया और महिलाओं ने पूरे हास-परिहास के साथ गीत गाने आरम्भ किये। जब वे चलने लगीं तो मैंने टेप सुनाया। वे आश्चर्य-चकित रह गयीं और हमें कुछ बुरा-भला भी कहने और मारने की धमकी देने लगीं।

अनपरा की एक और घटना मुझे याद आती है। ईसरलाल धरकार गांव में भीख मांग रहे थे और डफला बजा रहे थे। वे देखने में 70 वर्ष से कम के न लगते थे। मैंने उन्हें गांव से बाहर एक पेड़ के नीचे बुला लिया। पहले तो वे डरें और कहा, "बाबू! थाने मत ले जाये।' पर बाद में समझाने-बुझाने पर तैयार हुए। पेड़ के नीचे डफला बजा कर, नाचते हुए उन्होंने तीन-चार गीत जो सुनाये, बड़े मार्मिक थे।

इसी अनपरा में, एक दूसरी मात्रा में मुझे कुछ देवी-गीत मिले थे। नवरात्र-दुर्गाष्टमी का दिन था। गांव की ओर से आदिवासियों का जुलूस लाल-लाल झण्डे, भाले, बरछे के साथ हाथ में उपली पर आग लिये, रोली लगाये, रक्षा बांधे, नारियल [illegible] गाता चला आ रहा था। देखते ही मैं दौड़ पड़ा और लगा डायरी [illegible] गीत नोट करने। इतने में जुलूस एक मन्दिर में पहुंच गया। मैं भी व[illegible]ा तो मुझे देखते बैगा जोर से उछलते हुए धमाक से जमीन पर गिर पड़ा और लगा हबुवाने "हाको! हाको!! हाको!!! दोहाई देवी की। नाश हो जाय मेरे दुश्मन का। यह देवी का दुश्मन है। मारो इसे।" और सब लोग मेरी ओर देखने लगे। मुझे भगा दिया गया, यह कहते हुए कि बाबा क्रुद्ध हो गये हैं। भूत कर देंगे। देवी रुष्ट हो जायँगी इत्यादि। अब मेरी हालत ऐसी कि काटो तो खून नहीं। बाद में मैंने अपना मन्तव्य बताया तो बाबा ने क्षमा किया। जान बची लाखों पाये। मगर गीत तो नोट करना ही था, किया।

ऐसी ही एक घटना कोटा में भी घटी थी। देवी-धाम पर स्त्रियां गीत गा रही थीं। मैं पहूंच कर लिखने लगा तो उन सबों ने मुझे घेर लिया और कहा, "जादू से भेड़ा बना कर छोड़ दूंगी।"

प्रस्तुत संग्रह में ऐसे ही अवसरों से प्राप्त गीतों का संग्रह किया गया है जिसमें मिरजापुर जनपद में रहनेवाली प्रायः सभी जनजातियों के गीत आ गये हैं। इन गीतों से उनके सम्पूर्ण जीवन, साहित्य, समाज, संस्कृति, कला, धर्म और आर्थिक ढांचे पर प्रकाश पड़ता है।

इन गीतों की मौलिकता और प्रामाणिकता में कोई सन्देह नहीं है। इनकी भाषा विचित्र है, इसीलिए गीतों के भावार्थ और कुछ कठिन शब्दों के अर्थ भी दे दिये

गये हैं। आरम्भ की भूमिका से पाठकों जो विषय का पूरी तरह ज्ञान भी हो जायगा, गीतों के साथ बीच-बीच में दी गई विशेष टिप्पणियों से साधारणीकरण में भी सुविधा होगी। गायन की सुविधा के लिए परिशिष्ट–1 में स्वरलिपि भी दे दी गयी है। परिशिष्ट–2 में दी गयी गायक-गायिकाओं की सूची से इस तरह के कार्य की भावी योजनाएं बनायी जा सकती हैं।

इन गीतों के संग्रह की प्रेरणा मुझे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी से मिली थी। श्रद्धेय श्री अमृतलाल नागर, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, ठाकुर प्रसाद सिंह, डॉ० श्याम तिवारी, अजयशेखर आदि भी मुझे इस कार्य के लिए प्रेरित करते रहे। मैं उन सबके प्रति श्रद्धावनत हूं। इस संग्रह के प्रकाशन में अपनेअभिन्न श्री एस० अतिबल का विशेष सहयोग रहा है।

—o—

1—There have indeed been attempts only arising from the sophisticated among the people themselves, to stop dancing on the grounds that it is not respectable and the life of their villages becomes dull and drab as a result.

The dance of India : Bhawani Enakshi (Prefaces.) By Verrier Elwin XVIII.

2—Tribal dances, like the folk dances of India are full of the same spontaneous freedom and religious like all rural dances of peasant India XXX. There are among these our tribal people, group that can trace their origins to almost ten to fifteen years ago.

The Dance of India : Page 201.

3—The Dance of India, Page 201

4—In the Mayurbhanj area af Orissa state, the Bhumiya tribal people have a number of dances, among which one of the most popular is the Karma, which is danced on the eleveenth night of the month of Bhodon (springtime) on which is called a day of Akadasi.

—The Dance of India. Page 211

5—वही पृ० 211

6—Gazetteer of Mirzapur : (1911) Page 103-104

7—Gazetteer of Mirzapur : (1911) Page 103-104

8. डॉक्टर अर्जुनदास केसरी, लोकरुचि प्रकाशन, रार्बट्सगंज, मिरजापुर

करमा

करमा-पूजन

अइले करम के दीन !

भादौं के रतिया हो निति अन्हियरिया हो–
अइले करम के दीन ।
आगे-आगे जाला बइगा हो बइगिन,
पीछे जवइया सब लोग ।
एक कोसा जाले, दूसर कोसा जाले,
कतहूं न करमा पवदेस[1] ।
पांच पइयां जाले संचारी[2] अंगुल जाले,
पहुचै ले करमा के देस ।
बइगा के बेटवा हो मस्ते जवनवां,
काटे करम के डारि—
चलि भइले घरवां-दुवार ।
गउवा न गोबरे हो अङना लिपवले,[3]
गाड़ै करम कै डार ।
चलु बहिन करमा सेवै
कइसे के सेईं हो तोहरी करमवां,
मोर कोरा बालक रोवे ।
बालकइ देबइ हो दूध-भात खोरवां
चल बहिन करमा सेवइ ।
कइसे के सेईं हो तोहरी करमवां–
मोर कोरां सइयां हो बीरान[4] ।
सइयां के देबा हो सेजिया लगाइ
चलु बहिन करमा सेवइ ।

कइसे के सेईं हो तोहरी करमवां
मोर कोरां ससुरा बीरान।
ससुरा के देबा हो हुंकवा[5] -तमाखू
चलु बहिन करमा सेउ।
करमा खेलत-खेलत सुधि भूलि जाले–
कोरे क बलक मरि जाइ।

अतना के बतिया सुनत नाहीं पावै हो,
रोवते झिझकि घर जाइ
देत s तूं सासु हो सोने के कुदरिया
हो हम जावे बलकवा गड़ावे।

नहिं मोरे सोने क कुदारी हो
नइहर से माडी पठाव
अगिया लगउतू अइसन ससुररिया
कह बेरी नइहर जाब।

1––आहट, पता, 2––चार, 3––पोताया, 4––एकांत, 5––गड़गड़ा।

(भादों की अंधियारी में करम-पूजा का दिन आ गया। आगे-आगे बैगा-बैगिन (पुजारी-पुजारिन) और उसके पीछे अन्य लोग करमडार काटने चले। एक-दो कोस चलकर करम-देश पहुंचे। वहाँ बैगा के बेटे ने करमडार काटा और लेकर चल पड़ा। गाय के गोबर से अंगना पोतकर करमा गाड़ा गया। भाई द्वारा बहिन से करमा की सेवा करने (गाने) के लिए कहा गया तो उसने कहा—"मेरी गोद में तो बालक है, कैसे चलूं? भाई ने कहा––"बालक को दूध-भात खिलाकर सुला दो।" "आखिर स्वामीजी भी तो अकेले हैं, छोड़कर कैसे जाऊं?" "उन्हें सेज बिछाकर सुला दो।" "ससुर जी भी तो हैं, उन्हें छोड़कर कैसे जाऊं?" "उन्हें हुक्का तमाखू दे दो।" भाई की बात मानकर बहिन करमा खेलने जाती है तो इधर बालक मर जाता है। इसकी जानकारी होने पर वह घर दौड़ पड़ती है। वह अपनी सास से सोने की कुदाल मांगती है बालक को गाड़ने के लिए। पर सास कहती है कि सोने की कुदाल नहीं है, नैहर से मंगा ले तो वह बिगड़ती हुई कहती है कि ऐसी ससुराल आग लगे कि सोने की कुदाल भी नहीं है, वह नैहर चली जाती है।)

विशेष–इस गीत को भुइंहार करमा गाते समय मंगलाचरण के रूप में गाते हैं।

—o—

मुरली मधुर रोवऽलीन होऽऽऽ

मुरली मधुर सुनऽ मुरली मधुर सुनऽ होऽऽऽ।
गइयवा चराला, मुरली मधुर रोवऽलीन होऽऽऽ
कवाने बने गइयवा चरावलीन, सारी राती होऽऽऽ
कवाने बने गइयवा हेराऽलीन होऽऽऽ।
कवाने बने किसुना जी गइयवा चरावऽलीन होऽऽऽ
कवाने बने गइया भूल जानी होऽऽऽ
गइया चरा के पनियां पियावऽलीन होऽऽऽ
पनियां पिया के करलेन समतुले[2] होऽऽऽ
गइनऽ सिकार के त गइया भूलऽलीन होऽऽऽ
मुरली मधुर रोवऽलीन होऽऽऽ।
जब साम धीरे-धीरे मुरली बजवलीन
राधारानी ऊठें जकलाई[3] होऽऽऽ
अइनऽ भिनुसारे[4] होऽऽऽ।
हंथवा में लेले रहनी गइया दुहनवां
दूधे के बहाना आगे जाति बाईं होऽऽऽ
मुरली मधुर बजऽलीन होऽऽऽ।
किया देके किसुना जी गइया हिंहिकरलीन
किया देके रानी हिंहिकारे होऽऽऽ
लेवरू[5] देके किसुना जी गइया हिंहिकारे
नूना[6] दे-दे रानी हिंहिकारे होऽऽऽ।

1—भूलीं, 2—स्थिरे, 3—धबराकर, 4—भोर में, 5—बछड़े, 6—नमक।

(श्रीकृष्ण गाय चराने गये, बन में गायें भूल गयीं जिसके कारण पूरी रात उन्हें गायों को खोजते बन में ही बीत गयी। उनकी मधुर बजने वाली बंशी गायों के भूल जाने के कारण मानो रोने लगी। गायें भूलीं कैसे ? गायों को चराकर पानी पिलाकर उन्हें वृक्ष के छांव तले स्थिर करके स्वयं जब शिकार खेलने चले गये, तभी गायें खो

गयीं। क्या करें ? फिफिया-फिफिया कर बंशी बजाने लगे। इतने में भोर हो गयी। तब जब गायों के लेकर घर आये तो राधा ने उनका स्वागत किया। काफी समय के वियोग के कारण दुखी राधा कृष्ण की बंशी की आवाज सुनकर समुत्सुक हो मिलने के बहाने दूध की दुहनी लेकर आगे बढ़ती हैं। श्रीकृष्ण बछड़ों को छोड़कर और रानी (राधा ?) नमक खिलाकर गायों को हिहिकारती हैं।)

विशेष—इस गीत में गायों के भूल जाने का प्रसंग सर्वथा नया प्रतीत होता है। गायों के भूल जाने पर कृष्ण की बंशी के रोने की कल्पना अभिजात साहित्य में भी कम मिलती हैं। यह गीत दुल्लर घसिया, चिरुई भड़कुड़ी (मिर्जापुर) द्वारा राबर्टसगंज बाजार में भीख मांगते हुए गाया जा रहा था।

—०—

कृष्ण-लीला

पूरबे-पछिमवां से आयल जोगिया

पूरबे पछिमवां से आयल जोगिया—
पेंड़तरे[1] आय डेरा डाले।
सिरी किसुन बंसिया बजावे,
साब सखी सूनि आवे,
कवन गोरी हांसे ?
कवन गोरी मुसुके ?[2]
एत बड़की[3] त हांसे,[5]
मझली गोरी मुसुके,
छोटकी त चील्ह नियर झपटे।
सिरी किसुन बंसिया बजावे॥

1—नीचे, 2—मुस्कराती है, 3—चील्ह की तरह, 4—बड़ी, 5—हंसती है।

(पूरब और पश्चिम दिशा से योगी (कृष्ण) आया। आकर एक वृक्ष के नीचे डेरा डाल दिया। श्रीकृष्ण जी बंशी बजाने लगे तो सभी सखियों ने आकर घेर

लिया। अरे वह तो योगी नहीं कृष्ण ही हैं जो बंशी बजाकर मोह लेते हैं। उनकी बंशी की धुन सुनकर बड़ी सखियां हंसती हैं, मछली मुस्कुराने लगती हैं और छोटी चील की तरह उन पर झपट पड़ती हैं।)

विशेष—इस गीत में उपमा के माध्यम से मर्यादित कृष्ण-लीला का चित्र अंकित है।

—०—

जीवन

ननदो हो ! सिरी किसुना[1] बंसिया बजावें !

ननदो हो ! सिरी किसुना वंसिया बजावें,
बिन्द्राबन सिरी किसना बंसिया बजावें।
कवन बन गइयारे चरावें, ननदो ?
कवन घाटे पनियां रे पियावे ?
जमुन घाटे पनियां पियावे रे।
ननदो धीरे-धीरे गइया टुकरावे,
ननदो हो धीरे-धीरे घटवा चढ़ावें।
ननदो, कदमतर गउवा डहवरावें
नीबीतर बछरू[2] छनावे—
ननदो अपने कदम चढ़ि जाइ।
जब लगि अपने कदम चढ़ि जाइ—
बाघिन लपसत आवे।
केकर धइले छेरिया-बोकरिया—
ननदो हो, केकर, धइले धेनुगाइ ?
ननदो हो, लंकवा में कइले बा गोहारि
ननदो हो कोई नाहीं धावले गोहार[3]।
ननदो हो, राम—लखन धवले गोहार।
के तोरा लिहले तीर रे धनुहियां
ननदो हो, के तोरा लिहले बनूक[4] ?
छोट भइया लिहले तीर रे धनुहियां,
ननदो हो, बड़ भइया लिहले बनूक;

ननदो हो, कटले सिखुइया[5] कर डार।
ननदो हो, बाघिन लपसत[6] आवे,
दूनों भाई बइठे जंघा जोर।
के तोरा छोड़े तीर रे धनुहियां
ननदो हो, के तोरा छोड़ले बनूक।
छोट भइया छोड़े तीर रे धनुहियां,
ननदो हो, बड़ भइया छोड़े रे बनूक।
कइसन बोले तीर रे धनुहियां,
ननदो हो, कइसन बोले ले बनूक।
सांप अस छूटेला तीर रे धनुहियां,
ननदो हो, बादर जइसे घहरे बनूक।

1—श्रीकृष्ण, 2—बछड़ा, 3—पुकार, 4—बन्दूक, 5—साखू, 6—मस्ती में, झटके से।

(हे ननद ! श्रीकृष्ण विन्द्रावन में वंशी बजा रहे हैं। वह किस वन में वंशी बजाते और किस घाट पर गायों को पानी पिलाते हैं ? वे यमुना-तट पानी पिलाते और धीरे-धीरे गायों को बहोर कर ले जाते हैं। वह कदम के वृक्ष के नीचे गायों को ठहराते और नीम के वृक्ष-तले बछड़ों को बांध देते हैं। स्वयं कदम के ऊपर चढ़ जाते हैं। जैसे ही कदम पर चढ़ते, बाघिन लपसती हुई आती और छेंड़ी-बकरी-गाय सभी को पकड़ खाती है और गुहार होने पर भी जब कोई उन्हें बचाने नहीं आता तो वनवासी राम-लक्ष्मण जो वन में घूम रहे हैं, दौड़कर आते और बाघिन के मुख से उन्हें बचा लेते हैं। हे ननद ! बताओ तो सही, किसके हाथ में तीर-धनुष है और किसके हाथ में बन्दूक है ? छोटे भाई के हाथ में धनुष-बाण है, बड़े भाई के हाथ में बन्दूक है। वे साखू पेड़ की डाल काटते हैं, बाघिन आती है, दो जांघों को जोर कर बैठे हैं। वे धनुष-बाण और बन्दूक से उसे मार गिराते हैं जिसकी आवाज क्रमशः सर्प के चलने और बादल के घहरने जैसी होती है।)

विशेष—इस गीत में जीवन-चित्र अंकित है। संघर्षों में जूझने की प्रेरणा है और है कृष्ण के गोचारण के साथ राम-लक्ष्मण के लोक-रक्षक रूप का सहज उद्घाटन। आदिवासियों का जीवन भी तो ऐसा ही है। वे तीर-कमान से बाघ तक को मार गिराते हैं।

—o—

सीता बन में गइल

सीता बन में गइल, देखि पखलावे[1] रेऽऽऽ।
एक बन जाले रामा, एक बने लछिमन॥
कौने बने जानकी दुलारे रेऽऽऽ।
तेकरे पीछे लछिमन हो, सीता गुहल चलि जाइ होऽऽऽ।
बने चलि जाले लछिमन, डगर[2] धरे जाइ होऽऽऽ॥

"भूखि जागी कहां भोजन पइबऽऽऽ?"
"एक कंदामूल खोदि खाइब।
पीयब हाथ जोरि पानी"
बन में चले रघुराई होऽऽऽ।
"नींदा लगी कहां आसन पइबऽ?
गड़ि जइहं क़ासा-कुसी[3] होऽऽऽ॥"

बन में चले रघुराई।
टपकि—टपकि[4] बून्द बरसे,
भींजत राम-लखन दूनों भाई होऽऽऽ।

1—दुखी होती हैं, 2—मार्ग, 3—कास, कांटा, 4—बूंद-बूंद पानी बरसता है।

(राम-लक्ष्मण-जानकी के बन-गमन पर अयोध्यावासी दुखी होते हैं। कहते हैं, एक बन में राम, दूसरे में लक्ष्मण जायंगे, लेकिन जनक-दुलारी किस बन में जायंगी? राम के पीछे जानकी गुंथी चली जा रही हैं। गांव की नर-नारियां पूछती हैं—"आप को खाने के लिए भोजन कहां मिलेगा?" तो राम उत्तर देते हैं—"कन्द-फूल खोद कर खा लूंगा। अंजली से पानी पी लूंगा।" "नींद लगेगी तो सोवेंगे कहां? जमीन पर सोने से कांटे गड़ जायेंगे।" मार्ग में जाते पानी बरसने लगता है, वे भींगते हुए चले जा रहे हैं।)

—०—

रामा क पुतवा बहेलिया हे राम !

रामाक पुतवा बहेलिया[1] हे राम !
चलऽ भइया केदली के बनवां हे राम ! रामाकऽ···।
चलऽ भइया धरती अहेरे, माई ओकर हरके —
बहिनी ओकर बरजे।
मर जइबऽ भूखे पियासे हे राम !
नाहीं माने हरकल, नाहीं माने बरजल हे राम !
आपन रगरी[3] पुजावे हे राम !
खाइ के लेब भइया सातु-सामरहिया[4] हे राम !
भू भोर[5] के लेब माई मुच-मुच पनहीं हे राम !
घाम लागी छतवा चढ़ावा हे राम !
अब चल भइलंऽ परधी अहेरे हे राम !
त लछिमन गोड़े लागइ[6] हे राम !
तब एक कोस गइलंऽ, दूसर कोस गइलंऽ हे राम !
कतहूं न परधी अहेरे हे राम !
पांच अंडुरिया पांच पउना सोर[7] हे राम !
पहुंचि गइलंऽ परधी अहेरे हे राम !
तूं त ऽ जाब ऽ भइया घाट-घाट ओरियां हे राम !
हम जाब रोझनी[8] बिड़ोरइ[9] हे राम !
राम बन हिंड़ली[1] के दुइ बन हिंड़ली–
नाहीं मिलइ हरिना मेरुगवा हे राम !
घरे मूहें लौटलि आवइं हे राम।
हर्रा के आंवां बहेरा के ओलटे[11] हे राम !
अब रोझिनि कान्हं डोलावें हे राम !
बड़ भइया जा तूं घाट-घाट ओरियां हे राम !
हम जाब रोझनी बिड़ोरे हे राम !
कान्हें ले सब तीर छंटकउलें हे राम !

मरला सहोदर जेठ भइया हो राम !
तब रामे रमइया कहि गरिइं हे राम !
मरिले सहोदर जेठ भइया हे राम !
पहिले तऽ सुमिर ऽ ल ऽ भुइयां हे धरतिया हे राम !
चीउंटी त जीनि बटुरुवाव ऽ[12] हे राम !
तिसरे तऽसुमिरऽ लंऽ जटाई गिधिलियां हे राम !
गिद्धा जनि मेड़राया[13] हे राम !

चौथे सुमिरलऽ सुरुज देवतवा हे राम !
घामें न जानि कुम्हिलायें हे राम !
हर्रा के छाहंवां, बहेरा के ओल्टे हे राम !
तुलसी क मुहं ढांपे हे राम !

चल भइलें घरवां दुवारे हे राम !
पहुंचलंऽ घरवां दुवारे हे राम !
डेहरी बइठऽ मन मारे हे राम !

तीरवा धनुहियां के फेंकलंऽ ओसवरवां हे राम !
भउजी देवरा तूं न हंसतऽ न पदनवां हे राम !
आजु देवर काहे मन मारे हे राम !
मारलीं सहोदर जेठ भइया हे राम !

इतना क बोलिया सुनहीं न पावें हे राम !
खाटी छोड़ि भुइयां बदलावें हे राम ।
अब सेन्हुर तूं धोवलऽ हमारे हे राम !
अब केकर भरब जलपानी हे राम !

1—घूमने वाला, घुमन्तू, 2—रोकती है, 3—टेक, हठ, 4—एक प्रकार का अखाद्य खाद्य, 5—भूभूरि, गर्मी में पैर का जलना, 6—प्रणाम करने की प्रक्रिया, चरण स्पर्श, 7—थके पांवों को दबाना, 8—मादा रोझ, 9—हांका करना, 10—खोजा, 11—आड़ से, 12—इकट्ठा किया, 13—चक्कर काटना।

(राम-लक्ष्मण और बड़े भाई की पत्नी। तीनों साथ-साथ अहेर खेलने जंगल के लिए निकल पड़े तो मां ने कहा—"वन जाते तो हो, किन्तु वहां खाने-पीने को कुछ नहीं मिलेगा, इसलिए वन मत जाओ। वहाँ डहती दुपहरी में तुम्हारे पांव भी जलेंगे।" लेकिन भाइयों ने कहा—"नहीं, मां ! हम भूख लगने पर सत्तू खा लेंगे, प्यास लगेगी तो चुल्लू से पानी पी लेंगे, पैर जलने पर 'मुचमुच' (चररमरर

वाली पनहीं) पहिन लेंगे ।'' इस बात पर सब शांत हो गये । तीनों जंगल में गये तो खोजने पर भी रोझनी, शिकार के लिए नहीं मिली । फिर हांका करने का सोचा । जब हांका में भी कुछ नहीं मिला तो वे थककर एक हर्रा के छाँव-तले बैठ गये । थोड़ी देर में नींद आ गई । बाद में छोटे भाई की नींद खुली । उसे लगा कि आगे एक झाड़ी में 'रोझनी' बैठी है । उसने धनुष-बाण उठा लिया और चल पड़ा, लेकिन जब पास पहुंचा तो क्या देखता है कि उसका भाई मरा पड़ा है । वह बेहोश होकर वहीं गिर पड़ा ।)

—०—

सीता-हरण

बराभन जोगी आवति बा होऽऽऽ

सीताजी त घूमति बा अकेल, बराभन[1] जोगी आवति बा होsss
गोड़वा में पहिरी जोगी सोने खड़उवां
कमरी में बान्हें मिरिगा-छाला । बराभन···
जाई सीता घर पर ठाढ़ । बराभन···
धरमाधरम बराभन जोगी गोहरावल[2]
देता भीछा घरवां चलि जाइत
तीला-चउरा लेबड़िन[3] देला छितराये
भइया लेबड़िन के मारैं डंडा चार । बराभन···
एक हांथे झोंटा[4] धइला, एक हांथे सोंटा,
मरला गनियगनि चार । बराभन···
इतना कहानी सीता जनहूं न पवलू
लेकिन दुवरां झलक्कै ढावांढार
एक हाथे लेवड़िन के मारे डंडा चार । बराभन···
तरे-तरे[5] सोनवां ऊपर तिलचउरा
चलत सीता भिच्छा देवे । बराभन···
डहरी[6] में लीखि देला पांच खण्डा खपड़ा
सीता पल्हवा में घूमति बा अकेल । बराभन···
एक पयर बाहर कइला, एक पयर भीतर
लेकिन चलल सीता भीछा देवे । बराभन···

इतना कहानी सीता जनहूं न पवले
लेकिन अंखिया बहति ढारीढार[7]
पराभूत होति जाति बाईं होsss। बराभन···
करे के धरम रानी राकछ[8] भिच्छा दिहलन
लेकिन कहलेन के दीहा भात-दूध। बराभन···
राम-लखन गइनऽ मिरगा के अहेरे
लेकिन पिदुकी-पिदूकि[9] मिरगा चले
लखन भइया मांगति बाईं होsss। बराभन···
एक मन नियरे हो एक मन दुवारे
भइया एक मन जमुना जी के तीर। बराभन····
एक पयरा बाहर कयलू एक पयर भीतर
रानी चलल सीता परीच्छा देवेऽ। बराभन···
तीला-चाउर जोगी झारि-पोंछि लिहला
अइसे सीता करंथा[10] में छिपावइ। बराभन···
बराभन हरि लिहला होsss। बराभन···

1—ब्राह्मण, 2—पुकारता है, 3—सेविका, 4—सिर के बाल, 5—नीचे। 6—देहरी, 7—अनवरत, 8—उछल-उछलकर, 9—राक्षस, 10—झोली।

(रावण, ब्राह्मण-योगी का रूप धरकर आता है। सीता जी अकेले घूमती रहती हैं। योगी के पावों में सोने की खड़ाऊँ है और मृगचर्म कमर में पहने हुए हैं। उसे देखते सीता घरपर खड़ी हो जाती हैं। योगी धर्म का नाम लेकर उन्हें पुकारता है और भिक्षा की याचना करता है। सेविका तिल चावल लेकर योगी को देने जाती है किन्तु सीता उसे रोकती और उसका झोंटा पकड़कर चार डण्डे लगाती हैं। योगी की दशा देखकर उनकी आंखों में आंसू आ जाते हैं और स्वयं भिक्षा देने जाती हैं। भिक्षा के पात्र में ऊपर तो दिखाने के लिए तिल-चावल है, किन्तु उसके अन्दर सोना रखा हुआ है ताकि योगी संतुष्ट हो जाय। सामने कपड़े के पांच टुक्के बिछाये गये हैं जिनके भीतर से ही एक पांव आगे बढ़ाकर ज्योंहीं भिक्षा देने के लिए आगे बढ़ती हैं, और बदले में दूध-भात की कमी (बाल-बच्चों के लिए) न रहने का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहती हैं कि राम-लक्ष्मण दोनों अहेर के लिए गये मृग को दौड़ाते सामने आ जाते हैं। वे सीता को देख भी नहीं पाते कि इसी बीच योगी भिक्षा लेने के साथ-साथ सीता को भी हर कर ले जाता है।)

विशेष—अन्य राम-कथाओं की तरह इसमें स्वर्णमृग का वर्णन नहीं आया है।

—०—

भइया जीवा जाति बा होsss !

भइया जीउ जाति बाऽ हो sssss !
कइसे भइया लछिमन जीवा जाति बा होsss !

आइ गइली बनवां में छूटत लखन भइया
दाखिने लंगे लछिमन भइया गीरल जात बा होsss ।

एक ठे सजीवन बूटी आनि देता
भइया जीवा जाति बाऽ होsss

अदिमी[1] क पुत्र अहलमां के बीरे
रामनिरुधार गइनऽ परवत के ऊपरां

बायां हांथे हनुमत जी परवत उठावल
तब से परवत मैं दीपक बारल[2]

चलि आवें परवत के समान हो sss
भइया जीवा जाति बा हो sss
पीयत के सधुवाना बूटी[3]
जीवा बंचि जात बा हो sss ।

खूस भइनऽ रामचन्नर[4] खूस भइनी सीता
लछिमन जी ऊठि बइठनऽ, जीवा बंचि जात बा हो sss ।

1—आदमी, 2—जलता है, 3—जड़ी, संजीवनी बूटी, 4—रामचंद्र ।

(भाई की जान जा रही है । क्या कहूं बन को आया तो लगता है भाई का संग छूट जायगा । लक्ष्मण का मुख दक्षिण की ओर लटक गया है । हे हनुमत ! संजीवनी बूटी ला देते तो भाई की जान बच जाती । हनुमान सोचते—'यह आदमी का पुत्र और एक वीर है' और राम की बात मान कर पर्वत के ऊपर जाकर पर्वत ही उठा लाते हैं जिसमें संजीवनी बूटी दीपक के समान प्रकाशित है । वह सधुवानी बूटी लक्ष्मण को पीने के लिए दी जाती है और वे जी उठते हैं ।)

—o—

घसिया : करमा–पूजा

रेऽ करम देवताऽ होऽऽऽऽ

रेऽ करम देवताऽ होऽऽ···।
बनवां में रहलीं उपासेऽ···
करम देवताऽ होऽऽ···
आजु[1] काहे मनवां पतेर[2]। रे करम···
रनियां आजु काहे अनमन[3] बाऽ रेऽ···
आजु काहे भवना में ठाढ़ेऽ···
करम देवताऽ होऽऽ···।
कोरवां[4] में खइली दूध–भात।[5]

1—आज, 2—पत्ता, 3—उदास, 4—गोद, 5—चावल

(हे करमदेवता ! आज बन में उपासा क्यों रह जाना पड़ा ? आज मन पत्ते की तरह चंचल क्यों हो रहा है ? आज रानी का मन उदास क्यों है ? आज वह घर में अकेली क्यों खड़ी है ? अर्थात् तुम्हारे रहते हमें तकलीफ क्यों है ? तुम हमारा दुख-दर्द दूर करो। बचपन में तो दूध-भात खाने को मिला, अब यह गरीबी क्यों है ?)

विशेष—कर्म आदिवासियों के देवता हैं जिनको प्रसन्न करने के लिए यह गीत गाया गया है।

—०—

घांगरी : पक्षी–प्रेम

सूगा बिजुल बन में

बाले[1] सूगा[2]ऽ बिजुल[3]–बन मेंऽऽ···
बनवां में रहतूऽ[4] बन–फल खातूऽ। सूगा···।
गइलू शहर दूध–भातेऽ। सूगा···।
के तोरा गाढ़े लोहे सिकरिया[5]—
के रे गाढ़े रूनझुन[6] होऽ···। सूगा···।

लोहरा त गाढ़ै सूगा लोहे के सिंकरिया—
सोनरा गढ़ेला रुनझुन होऽ। सूगा···।
कै दिन रहे सूगा लोहे के सिकरिया ?
दस दिन रहे लोहे के सिकरिया—
सिर माटी रहे रुनझुन होऽऽ। सूगा···।

1—है, 2—तोता, 3—बिजुल, एक नदी का नाम है, 4—रहतीतो 5—सिकड़ी, 6—पायल जैसा कोई आभूषण।

(तोती बिजुल-बन में बोलती है। उसे देखकर कोई दयावती कहती है कि हे तोती ! तू बन में रहती तो बन का फल खाती, किन्तु दूध भात के मोह में शहर चली गयी। बताओ, तुम्हारी इस लोहे की सीकड़ी को किसने गढ़ा है और किसने पायल गढ़ी है ? वह तोती बोलती है कि लोहार ने तो सीकड़ी और सोनार ने पायल बनायी है। लोहे की सीकड़ी दस दिन रहेगी और पायल सदा रहेगी।)

विशेष– यह प्रतीक गीत है। इसमें तोती को वियोगिनी का प्रतीक माना गया है। इसमें लालच को बुरी बला कहा गया है।

—०—

घांगरी : राम–भक्ति

सिरी किसुन बिनराबन

सिरी किसुन बिनराबन रामजी के डेरा होऽऽ···
हर्रा–बहेरा तर पर गइले डेरा होऽऽ···
कुसवा न कटि–कटि सथरी[1] लगावे हौऽऽ···
सूते लागल राजा–रानी दूने रे बेकाती[2] होऽऽ····
चिवटी[3] के कटलक[4] दयिया कइले हंड़होर होऽऽ···
ऊठा–ऊठा परभू जी करा इजोर[6] होऽऽ···
अइसन तिरिया रनात बड़े अच्छर बुद्धि होऽऽ····
मरद के जात बड़ा अरमोठ[7] होऽऽ···

1—बिचावन, 2—बिभोर होकर, 3—चींटी, 4—काटने से, 5—अशान्त, 6—प्रकाश, सूर्योदय, अंजोर, 7—कठोर प्रकृति का।

(विन्द्रावन में श्री कृष्ण और रामजी का डेरा पड़ा है। हर्रा-बहेड़ा पेड़ के नीचे, कुश काट-काट कर उन्होंने विस्तर बना लिया है। उस पर राजा-रानी (राम-जानकी) सो रहे हैं। इसी बीच चींटियां आकर जानकी को काटने लगती हैं और वह घबराकर जाग जाती हैं। जानकी ऐसी हैं कि पति को जगाना, यानी उनकी निद्रा-भंग करना नहीं चाहतीं लेकिन राम को क्या कहा जाय कि उठते नहीं। वास्तव में मर्द की जाति ही कठोर होती है।)

विशेष— इस गीत में नारी जानकी की मर्यादा-पालन और नर राम की कठोरता का कारुणिक चित्र उपस्थित किया गया है।

—०—

पनिका : नवरात्र—पूजा

कंठा खुलइ भगवान हो माऽऽइ

कंठा खुलइ भगवान हो माऽइ
जीभी फुनियां बइठ माई शरधा
भूला अछर दीहे बताइ
एको अच्छरिया भूलि जइहीं माई
छोड़ि देव तोहार सेउवा हो माऽऽइ।
कंठा खुलइ भगवान हो माऽऽइ॥

(हे मां दुर्गे ! मेरा कण्ठ खोल दो। हे मां शारदे ! मेरी जीभ के अग्र भाग पर आ बिराजो और यदि गाने में कहीं कोई भूल हो तो आकर अक्षर बतादो। अगर एक भी अक्षर भूला तो तुम्हारी सेवा-पूजा करना बन्द कर दूँगा।)

विशेष— यह गीत नवरात्र के अवसर पर अनपरा मंदिर में पनिका और बैसवार जाति के आदिवासियों द्वारा जुलूस के साथ नाचते हुए वाद्य यंत्रों के साथ गाया गया था।

—०—

बिन : अहेर

केंवटा छोकड़वा बड़ा बा हड़मुड़वा

केंवटा छोकड़वा बड़ा बा हड़मुड़वा
बूड़ि-बूड़ि ना
दहवा मारऽला मछरिया, बूड़ि-बूड़ि ना।
अपने के मारइ केंवटा सिधरी सेउरिया[1]
गुरुजी के ना—
मारइ मंङर घरियरवा, गुरूजी के ना।
किया गंङा माई तोहार ओहरल करखवा
किया हो पनियां तोहार भइनऽ भौंड़रवा[2]
किया हो गंङाजी पनियां तोहरा ना[3]।

1—मछली का नाम, 2—मिट्टीयुक्त, गंदा, 3—इस गति को प्रायः बिन, बियार आदि जातियां गाती हैं। इसे शंकर बियार, ओरमौरा ने ओझाई के समय गाया था।

(केंवट का लड़का कितना हिम्मती है कि पानी में डूब-डूब कर दह के अंदर मछली मार रहा है। वह अपने लिए तो सीधरी और सउरी मछलियां मारता है, किन्तु अपने गुरुजी के लिए मगर और घड़ियाल मारकर लाता है। हे गंगा मां ! तुम्हारा पानी गंदला है अथवा थीर होकर साफ हो गया है, बताओ तो सही ताकि केवट के लड़के का कोई अनिष्ट न हो जाय।)

—०—

बैगा–बियार : ओझाई

आने दिनवां कऽहइं देउ मोर

आने दिनवां कहंइं देउ मोर--
बरुवा[1] संघवा जुझबइ, गाढ़े निनवां[2] ना।
देउ मोर पछवा देखावइं हो गाढ़े दिनवां ना॥
नकिया त देखल देउ मोर सुगना क ठोरवा[3],
अंखिया त तोहरी ना--

देखल अमवां क फंकिया, अंखिया हो तोहरी ना ।
देउ मोर पछवा देखावइं हो गाढ़े दिनवां ना ।।
बहियां तोहरी देखल जइसे चढ़ल बा कमनियां–
जंघिया तोहरी ना––

जइसे केदली क खम्हियां, जंडिया तोहरी[4] ना,
देउ मोर संडवा जूझइं गाढ़े दिनवां ना ।।

1––कमउम्र, पति के लिये, 2—बुरे दिनों में, 3––चोंच, 4––तुम्हारी

(मेरा देव कहता था कि वह गाढ़े दिनों में साथ निभायेगा, भक्त के लिए जूझ मरेगा, किन्तु जब गाढ़े दिन आये तो खोज-खबर ही नहीं ले रहा है। उसकी नाक तोते की ठोर जैसी, आंखें आम की फांकी की तरह, बांहें चढ़ी हुई प्रत्यंचा की तरह हैं और जांघें भी केदली-खम्भ की तरह सुन्दर हैं। सचमुच वह बिपत्ति के दिन काम अवश्य आयेगा।)

विशेष—इस गीत में आये उपमानों से ऐसा प्रतीत होता है कि अभिजात साहित्म के सारे के सारे उपमान (प्रतीक) लोक-साहित्य से ही ग्रहण किये गये हैं।

—०—

धांगर : ग्राम्य-जीवन

भाले साजन

भाले साजन, बिचे रे तिरबेनी बहल जाय
बीचे रे तिरबेनी बहल जाय, साजन··· ।

बिचे रे बहेले तिरबेनी
किया[1] रे चढ़ियाऽ गोर बेटी दाल धोवेऽऽ ?

पाथर[2] चढ़िया दाल धोवेऽऽ
साजन रसिया गुलेल[3] खेले जाये साजन

हंथवा पसार मांङे दाऽऽल
धोवल दाल कैसे लागे साजन ?
धोवल दाल सूरत[4] लागे, धोवल दाऽऽल ।

1—किस पर, 2—पत्थर, 3—गोटी-गुलेल जिससे चिड़ियों का शिकार किया जाता है, 4—अच्छा।

(बीच से त्रिवेणी बहरही हैं। गोरी तीर पर पैठकर दाल धोरही है। सुन्दर साजन आते और खाने के लिए दाल मांगते हैं। गोरी कहती-धोई दाल भला कैसी लगेगी ? वे कहते अच्छी लगेगी और हाथ पसार देते हैं।)

—०—

भुइंयां : शृंङ्गार

लीपऽ लीपऽ पिपरी क पात डोलै

लीपऽ लीप[1]ऽ पिपरी[2] क पात डोलै
दीपऽ दीपऽ उगेले जोन्हइया[3]
तीलऽ तीलऽ[4] बढ़ेले गोरी क देहियां[5]
अड़हर खोजै बड़हर[6] खोजै
कतहूं न मिले जोड़ी जवान।

केकर घरे तेल माङे, केकर घरे ककही[7]
केकर घरे माङ संवारे
बान्हऽले सुरूजा मेंड़र खोंपा[8]
भरि माङ सेन्हुरा भरावै
भरि माथ टिकुल दमकावै
टकटक मथवा निहारे निलजिया।[9]

1—चंचल होकर, 2—पीपल, 3—चांदनी, 4—तिल भर रोज, 5—शरीर, 6—परगना विशेष जो मिर्जापुर में है, 7—कंघी, 8—सूरज की शकल का जूड़ा, 9—निर्लज्ज।

(चंचलगति से पीपल का पत्ता डोलता है और चांदनी क्रमशः प्रकाशित होती, खिलती है; उसी प्रकार गोरी का शरीर भी बढ़ता है। उसके लिए योग्य वर खोजा जाता है पर पूरे बड़हर परगने में नहीं मिलता। गोरी किसी के घर तेल किसी के घर कंघी मांगती और मांग संवारकर, सूरज-मण्डल की तरह बड़ा जूड़ा

बांधकर, मांग भरकर टिकुली पहन लेती है। अपलक दृष्टि से निर्लज्ज युवक-युवतियां उसके माथे को निहारती हैं।)

विशेष– इस गीत के उपमान भी दर्शनीय हैं।

—०—

भुइंहार : शृंङ्गार

कलङी संवारे नैना तोरे जादो बीर

कलङी संवारे नैना तोरे जादो बीर, कलङी संवारे।
कवन आनय सोने–रूपक बेरवा[1]
कवन अनाले कलङी तोरे जादो बीर, कलङी संवारे।
सोनरा लियाये सोने–रूपक बेरवा
मनिहार[2] अनाले कलङी तोरे जादो बीर, कलङी···

केरे जनम लीहे ओरिया रे खोरिया
केहो जनम लीहे माझे अङने।
कुकुरा जनम लीहे ओलिया रे कोलिया
पंडा जनम लीहे माझे अंङने
सब रे देवता मिलि देखइ चलि जाले
सब देवता मिली मरऽमुक्खे
तुंमा[3] लउकी लेके जल भरइ जाले
कंदा[4] कोड़ियकोड़ि कइले अहारे।

1—सोने चांदी का कंगन, 2—बिसातबाने की दुकान करने वाला, 3—तुमड़ी, 4—कंद।

तुम्हारी कलंगी ने तो मानो मुझ पर जादू कर दिया। तुम्हारे लिए सोने चांदी का कंगन और फिर कलंगी भी किसने लाया। लगता है इन्हें क्रमशः सोनारों और मनिहारों ने लाया है। कोई कुत्ते की तरह कगर-किनार जन्म लेता है तो कोई आंगन में, कोई देबी-देवता, साधु-संत जंगल में जाकर भूखों रहकर तपस्या करते और तुमड़ी का पानी पीकर दिन काटते हैं और कंदे पर निर्भर रहते हैं।)

विशेष—इस गीत में समाजवाद की कल्पना की गयी है।

—०—

खरवार : योग्य पुत्र

धनि–धनि भागि भउजी तोहार

लइका तोहार फुलइ--
जैसे बने कऽ मेहुड़ी क फुलवा।
टेसू जइसन गाल,
बोली ओकर महुआ जइसन--
मीठे रेऽऽऽ।
हाथ ओकर सेखुवा अस हरठिया
गोड़ जइसे कुल्ली क पेंड़वा।
छाती जइसे सेर क करेजवा
धनि–धनि भागि भउजी तोहार।

(तुम्हारा लड़का वन के मेहुड़ी के फूल की तरह विकसित हो। उसके गाल टेसू की तरह लाल-लाल दिखें और बोली महुआ की तरह मीठी हो, उसके हाथ साखू की टहनी की तरह, पांव कुल्ली के वृक्ष की तरह और छाती शेर के कलेजे की तरह हो। हे भाभी ! तुम्हारा भाग्य धन्य है जो तुम्हे ऐसा पुत्र प्राप्त हुआ।)

विशेष—इस गीत में आये उपमान बड़े सार्थक तथा प्रभावोत्पादक हैं। शैली अलंकृत है।

—०—

धांगर : प्रकृति और मनुष्य

भाले नवा चांन उगेऽऽ

चवदी से भइले बिहान[1] नवा चांन उगे ऽ...ऽ।
पुरुवे से उगेऽ पछिम डूबेऽ नव चांन
उठा संवर अङना, बहोरै,[2] नव चांन उगेऽ...ऽ
अङना बहोरत के न छूटल आंचर,[3] नव चांन उगेऽ ऽ
सासु-ननद गार[4] देवे, नव चांन उगेऽ...ऽ

रूसी[6] चलले नइहरे, नव चान उगेऽ....ऽ
अंचरा न फारि के कागद बनावेऽ...ऽ
बीच पोथे लिखे दुखारे-सखाऽ... ऽ
ओरयओर लिखे बढ़नी सनेस, नव...।
अङुरी कलम बन जायेऽ...ऽ
सेन्हुर कजर[6] रोसनायेऽ...ऽ
गोरी सांवर चलले नइहरे—
नदिया छेंकलै चरीओरे[7] साजन। नव ..।
हंथवा उलाटी बुलावे केंवटा छोकरवाऽ
नइया लेले आवे नादलालेऽऽ
का रे खियैबो का रे ओढ़ैबो ?
दिनवां खियैबो खण्डा रे मछरिया—
रतिया ओढ़इबो भंवर जाऽऽल।
केंवटा छोकरवा अगिया लगैबो खण्डा रे मछरिया
रतिया के अगिया लगइबो भंवर जाऽऽल।
हंथवा उलाटी बुलावेऽ, नइया लेले आवेऽ नादलाले
टेढ़े गुलरिया[8] गोरी सांवर पार होईके अङूठा दिखावेऽऽ
जाई पार ठाठ होई जायेऽ...ऽ
पार होई के गोरी अङूठा दिखावे होऽ....ऽ

1—प्रातःकाल, 2—बुहारती है, 3—आंचल, 4—गाली, 5—रूठकर, 6—काजल 7—चारों ओर, 8—गुलेल।

(नया चांद पूरब से उगकर पश्चिम डूब गया। उसे देख सांवरी उठकर आंगन बटोरने लगी तो उसका आंचल ही खुल गया। सास-ननद उसे गालियां देने लगीं। वह रूठ कर नैहर भाग चली। आंचल फाड़कर कागज बनाया, उस पर बीच में सुख-दुख, किनारे-किनार सन्देश लिख भेजा। उसने अंगुली की कलम और सिन्दूर तथा काजल की रोशनाई बनाई थी। नैहर चलने लगी तो आगे नदी के तट पहुंचने पर साजन ने रास्ता रोक लिया, अब पार उतरे तो कैसे उतरे, यह समस्या थी, किन्तु तभी केवट के बेटे ने हाथ उठाकर आवाज दी कि मैं नाव ला रहा हूं। सांवरी को मजाक सूझी तो पूछा—"हे छोकरे ! बताओ, मैं तुम्हारे साथ चलूंगी तो क्या खिलाओगे क्या पहनाओगे ? छोकरे ने कहा—"दिन में खण्डा मछली खिलाऊंगा और रात को भंवर-जाल ओढ़ाऊंगा।" लेकिन छोकरे ने जब गोरी को पार उतार दिया तो गोरी अंगूठा दिखा कर चली गयी।)

—०—

भुइंहार : रसिया

हंतऽ गोईं माटी लेबै

हंतऽ गोईं माटी लेबैऽ...
ओही मटखानी माटी लेबै ऽ...ऽ
हं तऽ गोईं बंटिया न देवरा रहैं ऽऽऽ
ठाढ़ बंटिया[1], हंतऽ भइया माटी लेबै
हंतऽ लपकी धरे ले गोरी बांह
छोड़-छोड़ रसिया, छोड़ रे रंगिनियां जाइयो देबेऽऽ
रे मटिया धइ[2] आवै, जाइयो देबेऽऽऽ
मटिया त धरै ओरियां रे खोरियां[3]
घूसि जाले सांवर भितरी महल होऽऽऽ
घूसी जाले हं तऽ हो लेइयो निकले—
ऊ तऽ सोने झपोली[4] हो लेइयो निकलेऽऽ
हं तऽ हो चलऽ चलीं सांवर हो देस-बिदेस
तूं त सांवर लेबा गठरिया[5]-मोटरिया--
हम लेबै ढोल तरवारी।
तूं तऽ सांवर जइबा ओनियां रे कोनियां[6]
हम जाबै सबहै खोर[7]
एक कोस जाले दूसर कोस जालेऽ...ऽ
पहुंचे ले रे जमुती दूर छाहें रे पहुंचे ऽ...ऽ
उलटी-पुलटि कमरी बिछावै
भूखे-भूखे लेबा सुसताइ[8]
करबा तूं रसिया—कुल्ला-मुखारी होऽऽऽ
मूठा-पसर चिउरा[9] चबाइ
काहे नीतां[10] रसिया हो कुल्ला-मुखारी होऽऽऽ
काहे नीता ढऽरल आंसु
भूखे नीतां रसिया हो कुल्ला-मुखारी
सोये नीतां ढारल आंसु।

1—आधे रास्ते, 2—एक प्रकार कीडांट या गाली, 3—मार्ग, 4— पिटारी, 5—गट्ठर, 6—कोने-अंतरे, 7—सामने से, 8—विश्राम कर लेना, 9—चूड़ा, 10—कारण।

(रसिया देवर ने आखिरकार मटखाने जाते मेरा हाथ पकड़ ही लिया। किसी तरह यह कह कर मैंने जान छुड़ायी कि मिट्टी तो घर रख आने दो, तो भी वह घर चला आया। सोची, जब उससे लगन लग ही गयी है तो चलो सोने की पिटारी लेकर भाग चलें। फिर, उससे बोली—"तुम गट्ठर ले लो और मैं ढोल और तलवार ले चलती हूं।" दोनों चले, लेकिन कैसे ? देवर रास्ता छोड़कर चला कि किसी की दृष्टि न पड़ जाय, लेकिन गोरी सही रास्ते से चलने लगी। आगे जाने पर एक जामुन के पेड़ के नीचे दोनों ने डेरा डाल दिये। कम्बल बिछाकर सो रहे, लेकिन भूख के कारण नींद कैसे आये ? गोरी ने एक मूठा चूड़ा निकाल कर देवर को खाने के लिए दिया, लेकिन देवर की आंखों से आंसू बहते देख, उसने पूछा—"क्यों रोरहे हो ? कुल्ला-मुखारी तो कर लो।)

—०—

संयोग : शृंगार

हाथ धरे छैला होऽऽऽ

कनपट में किलिप लगाके फीता बांधे होऽऽऽ
रेसम के डोर सीता गांथइ ले होऽ...ऽ
पहिर लेला सारी होऽ···ऽ लहालोट[1]
हांथे मुनरी[2] हो—
सीता रोपइ लीं लहालोट होऽ...ऽ
नजरा लड़ावे होऽ···ऽ
हाथ धइले छैला होऽ...ऽ
दूनों हाथे मुनरी पहिरले बा गोरी होऽ...ऽ
चोटिया बांधे ले लहालोट होऽ...ऽ
चोलिया बांधे होऽ···ऽ
दूनों आंखे कजरा[3] लगावे होऽ...ऽ
हाथ धरे धैला होऽ...
गोरी के होऽ···ऽ।

1—पांव के अंगूठे को स्पर्श करने वाली, 2—अंगूठी, 3—काजल।

(गांव की गोरी कनपट में विलप लगाकर, फीते से बालों को बांधकर, उसे रेशम की डोर से गांथ कर और लहालोट (पांवों के नीचे नाखून को छूनेवाली) साड़ी पहनकर, हाथ में मुदरी पहनकर जब बाहर निकलती है तो उसकी नजर किसी छैल-छबीले से जा लड़ती है। वह छैला गोरी का हाथ पकड़ लेता है। वह दोनों हाथों में मुदरी पहिने, चोटी (लहालोट) बांधे, चोली कसे, दोनों आंखों में काजल लगाये जब-जब बाहर निकलती है, नायक उसका हाथ पकड़ ही लेता है।)

विशेष—इस गीत से आदिवासियों की शृंगार-प्रियता एवं सौंदर्य के प्रति सहज आकर्षण का पता चलता है।

—०—

शृंगार-प्रसाधन

कलङी संवारे नैना तोरे होऽऽ

कलङी संवारे नैना तोरेऽ···ऽ, हो जो बिरमेई कलङी।
कै दिन तेल लगावेऽ, कै दिन ककही संवारेऽऽ?
कै दिन माङ संवारे होऽ···ऽ, जो बिरमेई कलङी संवारेऽ...
दस दिन तेल पावे, बीस दिन ककही
सीरा भर कलङी संवारेऽ, ई बीर कलङी होऽ...ऽ
ई सोरह क बिला आस जोरेऽ...ऽ

परभूजी के आसन डोलेऽ...
कहां सोहै अंङा कुरताऽ, कहां सोहै धोती?
कहां सोहै खनी मदारी हो। हम का जानी····
अंङे सोहै अंङा कुरताऽ, ठेहुना में धोती
हांथे सोहै खनी मदारी, हो जो बीरमेई कलङीऽ।

("तुम्हारा नेत्र (पुत्र) कलंगी संवारता है, कितना अच्छा लगता है। बताओ वह कितने दिन पर तेल लगाता है, कितने दिन पर कंघी करता है और कितने दिन पर अपनी मांग संवारता है?" "वह दस दिन पर तेल लगाता है, बीस दिन पर कंघी करता है और एक-एक माह पर कलंगी संवारता है। यह सोलह वर्ष का बालक

संवर-सज कर निकलता है तो प्रभुजी का आसन भी डोल जाता है।" "यह धोती, कुर्ता और बंशी कैसे पहनता है ?" "इसके अंग में कुर्ता, ठेहुन तक धोती शोभा देती है और बंशी हाथ में लेकर बजाता है।")

—०—

बादी : गोदना

गोरी कहवां गोदवली हे गोदना..

"गोरी कहवां गोदवली हे गोदना ?"
"बहियां गोदवली, छतिया गोदवली।
बाकी रहल दूनों जोबना[1]।
पिया के पलङ पर रोदना[2] ॥
"गोरी कहवां गोदे हो तोहे गोदना ?
"अगल न गोदे बगल न गोदे—
गोदे बिचवां ठइयांऽ[3]।
गोरी अब ना गोदाइब गोदना ॥"
"गोरी आके गुदालेहु गोदना—
"गोदिया में लेके गोदब गोदनवां
करबू मइया-दइया[4] ।"

1—स्तन, 2—रोना, 3— जगह (यहां भाव गुप्तांग से है), 4—मां-बाप

(एक सखी गोदना गोदाकर आती है। उसे देखकर दूसरी पूछती—"तूने कहां-कहां गोदाया है ?" वह कहती, "बांह और छाती में गोदायी, लेकिन हे सखी ! क्या कहूं कुचों पर गोदायी ही नहीं, पिया के पलंग पर सोते समय रोना आयेगा।" सखी फिर पूछती—"बताओ और कहां-कहां गोदने वाले ने गोदा है ?" तो वह कहती है—"मेरी जांघों के अगल-बगल नहीं, बीच में गोदा है : आखिर मैं कर क्या सकती थी ?" इस बात को गोदने वाला कहीं से सुनरहा था, अतः बोला, "हेगोरी ! आकर छाती में पुनः गोदना गोदा लो। तुम्हें गोदी में बिठाकर गोदना गोदूंगा और तुम मइया-दइया करती रहोगी।")

विशेष—यह गीत दुद्धी की श्रमिक महिलाओं से संकलित है। वे पत्थर लाद कर जाती हुई एक ट्रक पर गारही थीं।

—०—

बादी : गोदना

सासू के दांत रे बतीसी

सासू के दांत रे बतीसी
बहू के बाहीं गोदनाऽ।
ससुर से बोले ससुवा तऽ
मोरे निहारे गोदनाऽ।
जो हम जानतीं कि ससुर निहरवा तूं गोदना—
ससुर नाहीं रे गोदइतीं—
आपन बाहीं गोदनाऽ।

(जब सास जी श्वसुर से हंसकर कहती हैं कि बहू की बांह में गोदना कितना अच्छा लगरहा है तो श्वसुरजी मेरी बाहों में गोदे गये गोदने को निहारने लगते हैं। से सखी ! यदि मुझे ज्ञात होता कि श्वसुरजी मेरे गोदने को निहारेंगे तो मैं गोदना गोदाती ही नहीं।)

विशेष—इसमें मर्य्यादा और भारतीय नारी की लज्जा का जो चित्र अंकित है, अन्यत्र दुर्लभ है।

—०—

माझी : विवाह-गीत

बिरीध बन चलऽलीन होऽ..

कउनो अइलिन हाथी चढ़ि के
कउनो अइलिन घोड़ाऽ
रनियां त अइलिन डोलिया समतुले[1] होऽ...ऽ
ससुर अइलन हाथी चढ़ि,

भसुर अइलन घोड़ाऽ
पियवा अइलन डोलिया फनाइ के होऽ...ऽ।
बिरीधाबन खेलऽलीन होऽ....ऽ
किया खाये के दिहलिन हाथी-घोड़ा ;
किया खाये के दिहलिन कहांर होऽ...ऽ
बिरीधावन खेलऽलीन हो ऽ...ऽ।
भइलन बियाह, बर कोहबर गइलन,
दुअरां[2] बराती भइलन ठाढ़े[3] होऽ...ऽ
बिरीधावन खेलऽलीन होऽ...ऽ
हरी-हरी बंसवा के डोलिया फनावइ[4],
ले के चलनऽ कहांर चार होऽ....ऽ।
विरीधाबन चलऽलीन होऽ...ऽ।
ससुर देनऽ धोती, भसुर धेनु गइया
भउजी लान देलिन[5] लहंगा पटेन[6] होऽ...ऽ

1—स्थिर होकर, 2—द्वार, 3—खड़ा, 4—लेचलूंगी, 5—लादिया, 6—पट्टेदार लहंगा।

(लड़का वाला लड़कीवाले के घर व्याह करने जाता है। कोई हाथी चढ़ कर जाता है तो कोई घोड़ा। ससुर जी हाथी पर, जेठजी घोड़ा पर और रानी साहिबा डोली में बैठ कर लड़के का व्याह रचाने जाती हैं। वरजी भी डोलीपर ही सवार होकर जाते हैं। विरीधावन में रुककर खेलते हैं। हाथी-घोड़ा और कहारों को खाने-पीनेका सामान देती हैं ? जब सब द्वार पहुंचते हैं और व्याह हो जाता है तो वरजी कोहबर चले जाते हैं, बाराती दरवाजे पर खड़े रह जाते हैं। बाद में हरे-हरे बांस की डोली बनाई जाती है जिसे चार कहार लेकर चलते हैं। ससुरजी को धोती, जेठजी को गाय और भाभी को पट्टेदार लहंगा दिया जाता है।

विशेष—इस गीत से आदिवासियों के वैवाहिक रीति-रिवाजों का पता चलता है।

—०—

बइगा : विवाह-गीत

बइगा लइका बियाहे चल देइ

सात खण्डा लकड़ी आठ खण्डा कपड़ा,
बइगा लइका बियाहे चली देऽइ।
माई मांगे दुधवा क मोलवा—
बहिना कहइ भउजी लेइब होऽ..ऽ।
भउजी क बाजी बिछुवाऽ...ऽ।
हमरे अंङनवां टिकुली क चमक दुअरा जाइ रे ऽ...ऽ
बहुटां[1] कऽ कुण्डी, भइया दिलवा में बदकी,
लहंङा क खरभर,[2] मोरे मनवा में हुलसी।
बइगा[3] लइका बियाहे चलि देऽइ।

1—बांह का चांदी या गीलट का आभूषण, 2—खड़खड़ाहट की आवाज, 3—जाति, आदिवासियों का पुजारी।

(सात खण्डा लकड़ी और आठ खण्डा कपड़ा लेकर बैगा लड़के की शादी करने चल पड़ा। मां के वास्ते दूध का मोल इससे बढ़कर और क्या हो सकता है। बहिन कहने लगी—'मुझे भाभी मिलेगी, भाभी का बिछुवा बजेगा।' उसकी टिकुली की चमक द्वार तक जायेगी। बहुटा की कुण्डी भैया के दिल में बैठेगी, लहंगे की, सरसराहट की आवाज मेरे मन में हुलास पैदा करेगी।)

विशेष—इस गीत में प्रतीकों का प्रयोग हुआ है। सात खण्डा लकड़ी, आठ खण्डा कपड़ा गरीबी का प्रतीक है तो बिछुवा प्रेम का, टिकुली सुहाग का, बहुंटा सहृदयता और लहंगा काम का प्रतीक है। विवाह के अवसर पर मां और बहिन के मन के हुलास का इससे मर्मस्पर्शी चित्रण और क्या हो सकता है!

—०—

भुइंहार : विवाह

माझि भवनवां रेऽऽ

माझि भवनवां रे केकर उठेले लगना
नाहीं ऊठै बड़की, नाहीं ऊठै छोटकी
मझिली के उठै लगना, त भाभी भवनवां रेऽ...ऽ
बड़की रोवैले पिछवारे[1]।

आवेदे सुदीना[2] अगहना रेऽ...ऽ
अबे से खोजि लेबे जोरी जवान[3]
खोजी लेबे जोरी-जवान, भाभी भवनवां रेऽऽऽ
चारी कोने नेवता घुमावै, भाभी भवनवां रेऽ...

कइसे नेवतइं बरियात[4]
दस-बीस नेवतल हथिया रे घोड़वा
बीस सै नेवतल बरियात
का रे खियावै हथिया रे घोड़वा—
का रे खियावै बरियात
घासे—पुआरे खाने हथिया रे घोड़वा
माड़ि-भाते लागल बरियात
माड़े-भाते लागल बरियात रेऽ...

चुरू लागे चूरे रे दमाऽद
सासु ओकर देले सुन्नरि बेटी
ससुरा दियाले धेनु गाइ
सार ओकर देले लाल-पियर धोतिया
ससुरा दियाले धेनु गाऽइ
ले जो पूता[6] डोलिया फनाऽइ
आगे-आगे जाले नावा रे दुलहिया
पीछे चले रे धेनु गाइ
कइसे के जाले नावा[7] रे दुलहिया
कइसे के जाले धेनू गाऽइ
रोवति-रोवति जालै नावा रे दुलहिया
मुसुकत दुलरू दमाऽद।
तेकरे पीछे चले धेनु गाऽइ।

1—घर के पीछे, 2—मुहूर्त, 3—युवा-युगल, 4—बारात, 5—सुन्दर, 6—पुत्र, 7—नयी-नवेली।

(लगन के दिन आ गये, लेकिन बड़ी-छोटी बहिन के विवाह के मुहूर्त ही ठीक नहीं हैं, केवल माझिल बहिन के विवाह का मुहूर्त ठीक बैठता है। फलतः बड़ी-छोटी दोनों घर के पिछवाड़े जाकर रोने लगती हैं। तब उसकी भाभी उसे सांत्वना देती हुई कहती है, "रोओ मत, अगहन आने दो, विवाह हो जायगा। तुम अभी से अपने लिए जोड़ी ढूढ़ती रहो।" समय आते विवाह के निमंत्रण घुमाये जाते हैं। दस-बीस

हाथी घोड़े और बीस सौ बाराती आते हैं, उन्हें घास-पुवाल और माड़-भात खाने को दिया जाता है। दामाद रूठ जाता है तो सास सुन्दरी बेटी देकर, श्वसुर धेनुगाय देकर, साला लाल-पीले रंग की धोती देकर वर-वधू को विदा करते हैं। डोली फना कर दुल्हन को आगे-आगे, उसके पीछे धेनुगाय को ले करके वर चलता है। दुल्हन रोती हुई चलती है तो वर (दामाद) मुस्कराता हुआ।)

—०—

घसिया : बेटी की बिदाई

निरखे गोरी अंमां तले होऽऽऽ

किया[1] गइले मइया बाबू,
किथा फइले पिठिया कऽ भाई ?
निरखे[2] गोरी अंमां तले[3] होऽ...

बने छूटे मइया—बाबू,
घरे छूटे भइया–बाबू।
देसवां छूटे पीठी क भाई
निरेखे गौरी अंमां तले होऽ...

भूते[4] देले मइया–बाबू,
ज्ञान दे सङ्घतिया[5]।
ढाल ओजे[6] पिठिया क भाई,
निरेखे गोरी अंमां तले होऽ...

1—कहां, 2—देखे, देखती है, 3—आम के नीचे, 4—जन्म, 5—साथी, 6—रोकती है, रोकता है।

(गांव की गोरी ससुराल जाकर आम के छाँव तले अन्यमनस्क भाव से बैठी सोचती है कि मेरे मां-बाप, पीठी का भाई क्यों छूट गये ? मां-बाप तो वन में, सगा भाई घर पर छूट गया। मां-बाप जन्म देते हैं, सखी-सहेलियां ज्ञान देती हैं, सगा भाई शत्रु के सामने आने पर ढाल के सामने पीठ ओज लेता है। फिर भी आज उनका साथ छूट ही गया और मुझे एक अनजान परदेशी के घर आना ही पड़ा।)

—०—

पौसीना[1] भात के खवासी[2] लागी होऽऽऽ

पौसीना भात के खवासी लागी हो ऽ...
ई तऽ तिरिया देख के रोवासी[3] लागी होऽ...

खाटी डोलल पउवा डोलल—
डोलल सुतवइया।
मलवा[4] में तेल लेके खोजे मिसवइया
खोजे मिसवइया भइया खोजे मिसवइया।
खुत्था के दाबि के हम निकलि गइली पतेरा
ई खुथवा के दावि देली निकली गयल बघेला[5]
देखत मारे पेलि परइली[6], बघेला देखल होऽ...
पहिली खबर तूं त नइहर देतू होऽ...

बर पाके पीपर पाके कउवा रोरी देत
सब चिरइया ऊड़ि गइनी बकुला अकेल
अमवां कोइलार में परेवा ढूढ़ैं होऽ...
पौसीना भात क खवासी लागी होऽ...
ई त तिरिया देखि के रोवासी लागी होऽ....

माई रोवे तीन मास भाई चौमास
मेहर[7] ताकी तीन दिन खोजी दूसर आसा होऽ...

कोसे के कोस वनाईदा आधा कोसे थाना,
तिरिया कराना जेहल खाना भइनऽ होऽ....
ई तिरिया देख के रोवासी लागी होऽ...

हाथे में हथकड़ी पहिरइं गोड़े में जंजीरा,
रेंगत-रेंगत गोड़ खियाईगल चोला भयगल हीर
तोहे जाना पड़ी होऽ....
मिरजापुर एक थाना ओपर जाना पड़इ होऽ...

कोसे-कोसे जेल बनइला, आधा कोसे थाना
जेहल जाना पड़ी होऽऽ
ई त तिरिया[8] देख के रोवासी लागी होऽ...

1—पसन्द, 2—खाना, 3—रोना, 4—कोसी (काठ की बनी), 5—बाघ, 6—भाग गयी, 7—स्त्री, पत्नी, 8—स्त्री।

(भात का खाना तो अच्छा लगता है; किन्तु इस स्त्री को देखकर न जाने क्यों रोना ही आता है। चारपाई बोलती है, उसके पावे बोलते हैं, कोसी में तेल लेकर स्त्री उसपर सोनेवाले को तेल लगाने के लिए खोजती है, लेकिन मैं नजरअन्दाज करके लकड़ी का खूथ लेकर जंगल निकल जाता हूं। इस खूथ को जंगल में पटकता हूं तो बाघ निकल आता है जिसे देखते मैं भाग निकलता हूं और जिसकी खबर पत्नी नैहर भेज देती है।

वर-पाकड़ पकता है तो कौवा आवाज देता है जिसे सुनकर अन्य छोटी चिड़ियां उड़ जाती हैं, किन्तु बगुला रह जाता है। वह आम के बगीचे में परेवा पक्षी को ढूढ़ने लगता है। यानी सभी बड़े अपने से छोटों को मार खाते हैं। मुझे भी बाघ जंगल में मारकर खा जाता तो मैं क्या करता। मां तीन माह, भाई चार माह रोता और स्त्री तीन दिन के बाद अपने लिए दूसरा सहारा खोज लेती। आधा-आधा कोस पर थाना बना है, स्त्री के कारण जेल जाना पड़ता है। क्या कहूं इस स्त्री को देखकर तो रोना ही आता है, यह कुलटा जो है। इसके कारण हाथ में हथकड़ी और पांवों में बेड़ी पहना दी गयी, चलते-चलते पांव घिस गये, चोला कठोर हो गया, लेकिन आखिर मिरजापुर के थाने में तो जाना ही पड़ेगा।)

विशेष—इस गीत में बताया गया है कि कुलटा स्त्री मिल न जाय, वर्ना रोना ही आता है। उसके कारण दुःख भोगना और जेल तक जानापड़ जाता है।

—०—

घसिया : वियोग-शृङ्गार

का जानी चलऽ चलीं रेहला बजार

का जानी चलऽ चलीं रेहला बजार
जनियां संहा तोरा ना छोड़तीं होऽऽऽ।

बीचे बजरिया पनेरिया दुकनियां
कि एको बीरा पनवां खिया दा
कि संहां अब ना छोड़ति बा होऽऽऽ।
कि चला चलीं रेहला बजार ।

बीचे बजरिया हलुवइया दुकनियां
एको पउवा बुनियां[1] खियावऽ—
कि संहां तोरा ना छोड़तींऽ होऽऽ।
चलऽ चलीं रेहला बजार
कि संहां तोरा ना छोड़तींऽ होऽऽ

बीचे बजरिया दरजिया दुकनियां
लेकिन चोलिया सियइबा बूटेदार[2]
कि संहां तोरा ना छोड़तींऽ होऽऽ।

बीचे बजरिया सोनरवा के दुकनियां
नथिया गढ़इबा नागिनदार[3]
कि संहां तोरा ना छोड़तींऽ होऽऽ
कि जानी भागि चलतूऽ होऽऽ।

का जानी सइयां मोर बिचवां बीमार
कि का जानी छोड़ता तूं बरवा का डेरा
कि बिसधर नागिन आवत वा होऽऽ।

1—बुंदिया, 2—कामदार बूटेवाली, 3—नागिन की तरह घुमावदार।

(पति काम पर जाना चाहता है, किन्तु पत्नी उसे अकेले जाने नहीं देती, साथ लग जा ी है। कहती है, "मैं भी रेहला बाजार चलूंगी, तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूंगी। बीच बाजार में पनेरी की दुकान है, वहां चलकर मुझे भी एक बीड़ा पान खिला देना, फिर मिठाई की दुकान से एक पाव बुंदिया खिला देना, दरजी की दुकान पर बूटेदार चोली सिला देना, सोनार की दुकान से नागिनदार नथिया गढ़ाकर मुझे वापस कर देना।" इतनी बातें नायिका कहती है कि नायक बीमार पड़ जाता है। उसका डेरा वर के उस वृक्ष-तले है जिसमें नागिन रहती है। वह नायक को काटने दौड़ती तब तक नायिका उसे जगा देती है।)

—o—

सीता भउजी झूलि-झूलि जाइ

हिया हो सिया भउजी झूलि–झूलि जाइ—
हिया हो झलुवा के टूटे ले बंड़ेर ।
हिया रे सीता भउजी गिरइ अनाचेत[1]
हिया हो तिरनी[2] गइले छितिराइ
किया हो उठावै आठ मुठा तिरनी—
किया रे उठावै लामी केस ?
नददी उठावै आठ मूठा तिरनी
किया भउजी हो उठावै लामी केस ?
कहां रे धोवावै आठ मूठा तिरनी—
कहां रे धोवावै लामी केस ?
झरिया[3] धोवावै आठ मूठा तिरनी
पोखरा धोवावै लामी केस
कहां रे झुरावै आठ मूठा तिरनी—
कहां रे झुरावै लामी केस ?
टटरा[4] झुरवावै आठ मूठा तिरनी
खोपवां[5] सजावै लामी केस ।

1—अचेत होकर, 2—फुफुती, स्त्रियां धोती पहनते समय सामने गांठ बांधती हैं, 3—झरना, 4—टट्टर, 5—घर के छाजन का कोना ।

(सीता भाभी झूला झूलने गयीं, झूलने लगीं तो बंड़ेर टूट जाने से गिरीं, और अचेत हो गयीं । फुफती छितरा गयी और केश भी बिखर गये । मालूम होने पर ननद-भाभी वहाँ पहुंच गयीं। एक ने फुफती उठा ली तो दूसरी ने केश। उसे लेकर झरना और पोखरा पर धोने चलीं गयीं । फिर जाकर टट्टर और घर के खोंपे पर सुखाया । सीता सचेत हो उठीं ।)

—०—

कवन नदी बहै इरहिर–झिरहिर

कवन नदी बहै इरहिर–झिरहिर[1], कालर मैना होऽऽऽ।
कवन नदी बहै निराधार ?
रेंड़ नदी बहै हऽलकि–मलऽकि हो[2]—
गपत[3] बहैले निराधाऽर ।
कवन नदी चढ़ै सिघरी मछरिया हो—
कवन नदी चढ़ै घरियार ?
रेंड़ बिजुल न चढ़ै सिधरी मछरिया हो—
गपत चढ़ैले घरियाऽर ।
कवन केंवट मारै सिधरी मछरिया हो—
कवन केंवट मारै घरियाऽर ?
जाति केंवट मारै सिघरी–मछरिया हो—
चइयां त मारै घरियाऽर ।
काहे बदे मारे सिधरी मछरिया हो—
काहे बदे मारे घरियाऽर ?
खाये बदे मारै सिधरी मछरिया हो—
तेल बदे मारे घरियार ।

1—झिरझिर–झिरझिर, 2—रेण, बिजुल मिर्जापुर दक्षिणांचल की दो नदियों के नाम, 3—एक अन्य नदी ।

(रेण, बिजुल और गपत नदियाँ बहती हैं । उनमें मछली घड़ियाल बहते हैं जिन्हें केंवट और चाई खाने और तेल निकालने के लिए मारते हैं ।)

विशेष—इस गीत में आदिवासी-जीवन का यथार्थ चित्र अंकित है । शिकार ही उनका जीवन और जीविका है, चाहे वह मछली का हो चाहे जानवर का ।

—०—

अगरिया : तीरंदाजी

सरर—सरर बान मारेऽऽ''''

सरर सरर बान मारेऽ···
देखत हनुमान हार मानेऽ···
काहेन क धनुस—बान ?
काहेन क तीर कमान ?
अब ओही पर गोलिया लगावेऽ···
बांसेन क धनुस—बान
सरपत क तीर—कमान,
लोहे क गोलिया लगावे
सूखे बिरिछ तर दियना लेसावै
संजीवन चीन्हीं न आवेऽ···।

(आदिवासी ऐसा बाण चलाते हैं कि उसे देलकर हनुमान जी भी हार मान जाते हैं। हनुमान जी का धनुष-वाण बांस का बना होता है और आदिवासियों का तीर-कमान भी बांस और सरपत ही का बना होता है। लोहे की गोली बनी है। संजीवनी बूटी खोजने के लिए सूखे वृक्ष के नीचे दीपक जलाया जाता है, लेकिन संजीवनी का फिर भी पता नहीं चलता।)

विशेष—आदिवासियों का एक विशेष प्रकार का तीर-कमान होता है जिसे प्रायः अगरिया बनाते हैं। उससे वे भागते शेर और उड़ती चिड़ियों को मार गिराते हैं।

—०—

झील : वर्षागीत

भरि गइले तलवा !

भरि गइले तलवा, मछरिया लगलि डांकइ,
रे छैला। चनवां पर बदरा मेंड़राला[1]।
पुरुबा करेजा में तीर अस[2] समाला॥
हमके भुलाई तोइं गइले परदेसवां

भीलनी परेमवां[3] भुलाई के खोजले सहरतिया[4] ।
कैसे भेजाई रे सनेसवा । भरि···
सवनवां जाला बीतल उमिरिया जाला बीतल,
कऽब जिया हुलसाई ऽ रे मोरे छैला ।

1—घेरता है, 2—तरह, 3—प्रेम, 4—शहर का, प्रसन्न होगा, 5—तृप्त होगा ।

(ताल भर गया, मछलियां उछलने लगीं, सिर के ऊपर बादल मड़राने लगे । पूर्वा हवा कलेजे में तीर की तरह लगने लगी और हे स्वामी ! आप हमें भूल कर परदेश चले गये ! मुझ भिलनी के प्रेम को ठुकराकर तुम किसी शहराती के साथ हो लिये । मैं तुम्हारे पास सन्देश किससे भेजूं ? सावन के साथ-ही-साथ उम्र भी बीतती जा रही है । अब हे बालम ! तुम्हारे साथ रहकर जिया हुलसाने का अवसर कब आयेगा ?)

विशेष—भीलनी का प्रेम छोड़कर किसी शहर वाली से प्रेम करने की बात पर तीखा व्यंग्य है ।

—०—

शीतगीत

माघ क लुक्की अस दीन भइल

माघ क लुक्की[1] अस दीन भइल,
तबउ न सुहाइ रे ।
राति पड़े पाला हाथ ठिठुरल जाइ रे ।
ससुवा पथावे हमसे गोबरा,
ननदा हेरावइ हमसे ढील[2] ।
बिछुवा क भार ले के, रतिया करमा गाऊं--
मैं ना रेऽ ।
तोर सुधि बचपन क साथ बुलावइ रे ।
मतरा[3] क बोली कपार[4] मोर खाइ रेऽ ।
तुरही से जीउ पगलावे रेऽ ।
माघ क··· ।

1--तिनके की आग, 2--जुयें, 3--माता, सास, 4—सिर ।

(माघ का दिन लुक्की (तिनके की आग) जलने की तरह अत्यन्त छोटा हो गया है। तब भी मन नहीं लग रहा है। रात में पाला पड़ने से हाथ ठिठुर जा रहा है तब भी सास गोबर पथा रही हैं। ननद भी जुएं खोजवा रही हैं, सिर से जुएं निकलवा रहीं हैं। बिछुवा भी इतना भारी हो गया है कि उसे पहिन कर करमा गाने में जी नहीं लग रहा है। तुम्हारे बचपन का साथ बार-बार याद आ रहा है। मां की बोली तो जैसे सिर खाने वाली लगती है। तुरही की आवाज पागल बना देती है। अर्थात् हे प्रिय ! तुम्हारी अनुपस्थिति के कारण सभी सुखद वस्तुएं दुखद हो गयी हैं।)

—•—

भुंइहार : पक्षी-प्रतीक

कहवां न सुइया[1] तोहरी जनमा भल ?

"कहवां न सुइया तोहरी जनमा भल ?
कहवां न लिहले बसे ऽ ऽ र[2] ।"
"तोहरी जनमा भल सरगुजा राज होऽ···
नदिया के तीरे लिहले बसेऽर ।"
"लेबा तूं सुइया साठ रुपइया हो
छोड़ि देबा नदी न बसेऽर ।"
"साठ रुपइया हमर घर अहइ हो ऽ
ना छोड़ब नदी क बसेऽर ।"
"लेबा तूं सुइया बहुरी ननदिया
छोड़ि देबा नदी क बसेऽर ।"
"बहुरी ननदिया सगइ[3] रे बहिनियां
ना छोड़ब नदी क बसेऽर ।"
"लेबे तूं सुइया हमारे जियादान[4] हो ऽ
छोड़ देबे नदी क बसेऽर ।"

1–एक चिड़िया विशेष, 2–बसेरा, 3–सगी, 4–प्राणदान ।

(सरगुजा राज्य में पैदा हुई 'सुइया' चिड़िया ने नदी के किनारे डेरा डाल दिया। गाँव की एक स्त्री वहां स्नान करने आयी तो चिड़िया को देखकर उससे पूछा, "बताओ तुम्हारा जन्म कहां हुआ था और बसेरा कहां है ?" उसने कहा, "सरगुजा राज्य में मेरा जन्म हुआ था और यहीं मेरा बसेरा है।" 'तो साठ रूपये मुझसे लेलो और इस स्थान को छोड़ दो।" "नहीं, साठ रुपये मेरे घर हैं और मैं इस स्थान को नहीं छोड़ूंगी।" "तो लहुरी ननद लेलो, लेकिन छोड़ दो।" "नहीं, यह भी मेरी सगी बहिन ही है, नहीं चाहिए" "अच्छा तो मेरी जान ही ले लो और इस स्थान को छोड़ दो।" उसने उसकी जान ले ली और स्थान छोड़ दिया।)

विशेष—इस गीत से पुनर्जन्म की पुष्टि होती है। चिड़िया को आत्मा का प्रतीक माना जा सकता है।

—o—

गोंड : टिकोरा-प्रतीक

होऽ. . गोर सांवरि

छोटि-मोटी अमवां हो नवले टिकोरवा—
साहजन ओही तरी गोरी सांवरि पलङ बिछावे
—गोर साहजन।

कचि-कचि अमवां खोइंछि[1] धइ लिहले—
पाकल अमवां चुहत[2] घर चऽले, हो गोर साहजन।
जाइ देखे गोर सांवरि बजरी[3] केवारे, हो गोर सांवरि।

"खोलु-थोलु सइयां रे बजरी केवरिया—
अडने में ठाढ़[4] बाटै धनियां तोहार।"

"कइसे के खोलीं बजरी केवरिया—
होऽ सङ में सोवल बाटइ सवती तोहार।"
अतना क बतिया सुनाई नाहीं पवले
मारे ले एंड़ा फटकि बेंड़ा जाले।
—हो गोर सांवरि॥

भितरी महले हो गोरि सांवरि--
धइ झोंटा फेंकि दिहले मांझे[5] अङने।

देतऽ तूं सासू ठूंठी मुसरवा[6]--
मारबइ सवती क माड फोरबइ कपार[7]।
--हो गोर सांवरि॥

1—आंचल, 2—चूसती हुई, 3—बज्र, 4—खड़ो, 5—बाच में, 6—लकड़ी का बना मूसल, 7—सिर।

(आम में टिकोरे आते गोरी अगोरने चली गयी। आम की छाया में पिया के लिए उसने पलंग भी बिछा दिया और कच्चे-कच्चे आमों को आंचल में लेकर पके आम चूसती घर चली तो देखा घर का दरवाजा बंद था। उसने स्वामी को पुकारा; "खोलिए, मैं द्वार पर खड़ी हूं।" लेकिन वहां तो सौत-संग सोयी थी, अतः पति ने कहा, "कैसे खोलूं? यहां तो तुम्हारी सौत साथ सोई है।" इतना सुनना था कि उसने पांव से जोर से प्रहार किया और किवाड़ खुल गयी। उसने उसके केश पकड़ कर उसे आंगन में पटक दिया और सास से मूसल माँग कर उसका सिर फोड़ डाला।)

विशेष—यह गीत करमा करते समय प्रायः भोर में गाया जाता है।

—o—

कोल : जीवन-चित्र

होऽ जात नाहीं बने हमके

टेढ़ी मारे भौंरा ताके नजर भर
कहां पाके पकरी कहां पाके गुरसकरी। टेढ़ी...
तीन दल में दला बटुरावे, जात नाहीं बने हमके।
केहू के बाघ धरे केहू के तेनुआं
केहू के सामर धकियावे—
होऽ जात नाहीं बने हमके।

रामा के बाघ धरे, लछिमन के तेनुआं
सीता के सामर धकियावे। होऽऽ जात...
कै दिन बाघ धरे कै दिन तेनुआं
कै दिन सामर धकियावे हो
कि जात नाहीं बने हमके।
दस दिन बाघ धरे, बीस दिन तेनुआं
सारो दिन सामर धकियावे हो—
कि जात नाहीं बने हमके।

(बिच्छी मारती है, भौंरा नजर भर देखता है। पाकर और गुरसकरी पकती हैं। हमारा दल तीन भागों में बंट गया है, अब हमसे जाया ही नहीं जा रहा है। क्योंकि जंगल में किसी को बाघ पकड़ कर खा जायगा तो किसी को तेनुआं और किसी को सामर धक्का देकर मार डालेगा, हम वन में कैसे जायं ? राम को बाघ पकड़ता है, लक्ष्मण को तेनुआं और सीता को सामर धक्का देता है, इसलिए हमसे वन में जाते नहीं बनता। "कितने दिन बाघ पकड़ता है, कितने दिन तेनुआं पकड़ता है और कितने दिन सामर धक्का देता है ?" "दस दिन बाघ पकड़ता है, बीस दिन तेनुआं और सामर तो रोज ही धक्का देता है, हम वन कैसे जायं ?)

विशेष—इस गीत में जंगल-जीवन का चित्र प्रतीकों के माध्यम से अंकित है। भाव यह है कि राम-लक्ष्मण-जानकी जैसे लोगों को वन में जानवर सताते हैं तो हमारी क्या गणना है ?

—०—

भुइंहार : देवर-भाभी का सम्बन्ध

आगी-काठी बारि केऽ...

आगी-काठी[1] बारि के खपरि[2] चढ़ावै
भूंजै लागलि सांवरि चन्नन बटुरा[3]
सासु हींसा बांटैं हो ससुर हींसा बांटैं
लहुर देवर हींसा बांटि भुलावैं

पाछे-पाछे देवर ठुनकत[4] आवँ—
"हमारे हींसा भउजी चनन बटुरा ?"
"जीनि भइया रोया जीनि कटोरा आंसु ढारा[5]
भादों मासे हम तोहार करब बियाह ।"
"काजन भउजी करबा जे नाहीं—
हमार जीया नाहीं पतिआय[6] ।"

1—लकड़ी, 2—खपड़ी जिसमें दाना भूना जाता है, 3—चंदन की तरह सफेद मटर, 4—अपमानित होकर रोते हुए, 5—कटोरा भर आंसू बहाना, 6—विश्वास करता है ।

(सांवली ने आग जलाकर खपड़ी में दाना भूनना आरंभ किया (मटर सफेद) । भूनकर सास, ससुर, लहुरा देवर को जब बांट दिया तो दूसरा देवर रोता हुआ आया और कहा, "भाभी तूने मेरा हिस्सा क्यों नहीं लगाया ?" इस पर भाभी ने कहा; "भादों आने दीजिए मैं आपका विवाह ही कर दूंगी, रोइए मत । देवर ने कहा, "मुझे विश्वास नहीं होता ।")

विशेष—यह गीत करमा नृत्य के अन्त में गाया जाता है ।

—०—

धांगर : देवर-भाभी का सम्बन्ध

देवरा दुलारू हवंऽ होऽ..

देवरा दुलारू हवंऽ होऽऽऽ ।
काहे के आवें आधी रतिया—
देवरा दुलारू हवंऽ होऽऽऽ ।
घरवा में सुतल रहली
एक दिन दुपहरिया[1]
देवरा खिड़किया में ठाऽढ़ ।
तूं तऽ बइठऽ देवरा माया[2] के पलङिया

देवरा दुलारू कहें—
भउजी हम त बइठब तोहरे पलङिया
भउजी बइठावे देवरा होऽऽऽ
देवरा दुलारू तूं अइसन मजा पइबा
बहरां[3] तूं घूमता अकेऽल
घरवां में गावऽला[4] गीत होऽऽऽ
देवरा दुलारू हवं[5] होऽऽऽ।

1—दुपहर में, 2—माता, 3—बाहर, 4—गाते हो, 5—हैं।

(दुलरुवा देवर आधी रात में भी भाभी के पास पहुंच जाता है। एक दिन भाभी घर के अंदर दुपहरिया में सोयी हुई रहती है कि देवर खिड़की पर खड़ा हो उसे निहारने लगता है। इतने में भाभी की नींद खुलती है, "तुम मां की पलंग क्यों नहीं जाकर सो जाते?" देवर कहता, "नहीं, मैं तो तुम्हारी पलंग पर ही बैठूंगा।" इस पर वह मुस्कराती और उसे अपनी जांघ पर बिठा लेती है। देवर भी विचित्र है कि वैसे तो बाहर घूमता रहता है, जब घर आता है तो गीत गाने लगता है जिसे भाभी पसंद करती है। वह दुलरुवा जो है।)

विशेष—यहां देवर-भाभी के सम्बन्ध को पुत्र और माता के सम्बन्ध जैसा पवित्र बताया गया है।

—०—

खरवार : ग्राम्य-रुचिबोध

बाजा में कवन बाजा भारी ?

बाजा में कवन बाजा भारी,
ढोल बाजा मउर[1] बाजा सब फुसारी ?
बाजा में ओखरी, मूसर बाजा भारी,
रंग में कवन रंग भारी,
कवन रंग नीक[2] लागी ?
रंग में हरदी रंग भारी,
ऊहइ रंग नीक लागी।

फूल में कवन फूल भारी,
कवन फूल नीक लागी ?
बेला अ चमेली फूल सब फुसारी,[3]
फूल में भारी कपासी[4] फूल भारी,

1—आदिवासियों का वाद्य विशेष, 2—अच्छा, 3—महत्वहीन 4—कपास।

(वाद्यों में कौन वाद्य सर्वश्रेष्ठ है ? ढोल मोर और वाद्य। ओखरी और मूसल का बाजा भी उत्तम है। इसी प्रकार रंगों में हल्दी का रंग, फूलों में बेला, चमेली के फूल और उससे भी बढ़कर कपास का फूल सुन्दर है।)

—०—

धांगर : देवर-भाभी-सम्बन्ध

देवर चलचलु डहियन खेते

देवर चलचलु डहियन खेते
देवर कतहूं न डहियन खेत

एक कोस जाये दूसर कोस जाये। देवर कतहूं···।
एक ही न बचनियां सांवर बोलहीं न पावें
पहुंचल डहियन खेत, देवर पहुंचल डहियन खेत
घूम फिर देखल खेत।

देवर गाढ़ गयल मैना साल कांटे होऽऽऽ
देवर के न कढ़िहैं मोर कांट। देवर कांटे होऽऽऽ।
देवर गढ़ गइले करवन[2] कांट। देवर कांटे होऽऽऽ।
देवर केन मोर हरिहैं दरदिया। देवर कांटे होऽऽऽ

1—खेत जिसे उपजाऊ बनाने के लिए जलाया गया हो, 2—एक वृक्ष।

(भाभी देवर से डहिया लगे खेत में लकड़ी काटने के बहाने इसलिए ले चलती है कि मार्ग में कुछ खास बातें होंगी, लेकिन ऐसा नीरस देवर है कि दो कोस चलने के बाद भी कुछ बोला नहीं। करवन का कांटा गड़ा जिसे देवर ने नहीं निकाला।

जंगल में पहुँच कर उसने लकड़ी गढ़ी और फिर बोझा बनाकर सिर पर रख दिया। मैं घर चली आयी, लकड़ी लाने के कारण सिर-दर्द करने लगा। लेकिन क्या कहूं। मेरा दर्द दूर करने वाला (पति) भी तो नहीं है ?)

—०—

नारी-चरित्रादर्श

होऽ.. फूल लोरे गइलीऽ...

होऽऽऽ फूल लोरे गइलीऽऽऽ
डारी भरे[1] लोइली[2] ढोछवा[3]।
दसों पनथ[4] जी कऽऽ
चोलिया सिवावे।
बीसों पनथ जी कऽऽऽ। बंड़िया[5]
केऽऽऽ छैला[6] मोरे आंचर धरे—
आंख तोर फूटेऽऽऽ।
जवानी घून लागे होऽऽऽ रेऽऽऽ।
होऽऽ रेऽऽऽ फूल लोरे[7]ऽऽऽ॥

1—आंचल भर, 2—लिया, 3—खोइंछा, आंचल के अर्थ में आंचलिक शब्द है। खोइंछा भरना, भराना एक मुहावरेदार प्रयोग है, मांगलिकता का प्रतीक। 4—पंथ, मार्ग, 5—एक प्रकार की बनियान, गंजी, 6—रसिया, नव युवक, 7—तोड़ना, फूल लोढ़ने के अर्थ में।

(फूल तोड़ने गई, डाली से फूल तोड़कर आंचल भर लाई। मेरे प्रियतम ने मेरे लिए दस रंग की चोली और बीस रंग की बंडी सिला दी थीं। उसे पहिन कर मैं बाहर ही निकली थी कि मनचले छैला ने मेरा आंचल पकड़ लिया। उस समय तो मेरे मुख से बस यही निकला कि तुम्हारी आंख फूट जाय, तुम्हारी जवानी में घून लगे।)

विशेष—इस गीत में गांव की युवती के चरित्र का चित्रण है, साथ ही सामन्ती व्यवस्था का विरोध भी। जमींदारी प्रथा में गांव के छैल-छबीले इसी प्रकार गांव की गोरी की इज्जत पर खेल जाते थे।

—०—

खरवार : सौंदर्य-बोध

तोर केसिया बा जइसे कारी बदरिया

होऽऽऽ राम क रमइया।
तोर केसिया वा जैसे कारी बदरिया।

बहुतइ नीक लागे।
हो गोरी बहुतइ नीक लागे॥
टपर-टपर महुआ[1] टपके,
तोरे संङ बीनब पियार[2] हो गोरी।
चनवां क टेमवां[3] धुमिलायल[4] तोरे मुंहें आगे—
तोरे से लगन बइठवाइब होऽ गोरी॥

1—महुआ चूने की आवाज, 2—चार, 3—प्रकाश, 4—धूमिल हुआ।

(हे गोरी ! तेरे केश काली बदली की तरह बहुत अच्छे लग रहे हैं। टप-टप महुआ चू रहा है, तुम्हारे साथ पियार (चार) बीनूंगी। तुम्हारे मुख की सुन्दरता के सामने चांद का रंग भी फीका पड़ गया है। हे गोरी ! अब तो तुम्हारे लिए शुभ लग्न खोजी जानी चाहिए।)

—o—

पठारी : दर्शन

खाटी डोले पउवा डोले

खाटी[1] डोले पउवा[2] डोले डोले सुतवइया,
मलवा[4] में तेल लेके ढूंढ़े मिसवइया[5]।
टांड़[6] डोले बंसी[7] डोले डोले तलइया,
सात खण्डा मछरी मारे डोले ला समइया।
कोई रोले सीर भरे, कोई चौमास भरे,
माई रोले सीर भरे, बहिन सारी मास डरे।

मेहरि फूहरि तीन दिन,
रोके रहि जाय।
पथरा में लग्गी डारि,
जोहे के कनाई।
लेवे के लिट्टी[8] हो, तवा थामि जरि जाय हो।
रोटी के खवइये[9] लाल कइसे क खाय हो॥

1—चारपाई, 2—पाया, 3—सोने वाला, 4—कोसी, कटोरी काठ की, 5—मीसने वाला, 6—लग्गा, 7—मछली फंसाने वाली वस्तु विशेष, 8—रोटी, लोई, 9—खाने वाला।

(चारपाई हिलती है, उसके साथ उसके पावे भी हिलते हैं। उस पर सोने वाले हिलते हैं। मीसने वाली, कोसी में तेल लेकर खोज रही है। मछली मारने की कटिया, उसकी डंडी और ताल का पानी भी डोल रहा है। पानी चंचल है, वैसे ही, यह शरीर भी नाशमान है। इसके समाप्त होने पर सगे सम्बन्धी रोकर शान्त हो जाते हैं। वे सभी दिखावे के लिए हैं। यहां तक कि अपनी पत्नी भी तीन दिन मोह दिखा कर शान्त हो जाती है। रोटी तवे पर जल जाती है, खाने वाला निराश हो जाता है।

—o—

परहिया : पातिव्रत-धर्म

सइयां मोर अंखिया सोहाला रेऽ..

डाइन[1] के मइ मुर्गी डेना,
काटइ के बसखारि[2] हो रेऽऽऽ।
मीजइ के रहरी[3] कऽ दाना,
ठोंकइ के संवई[4] कुवार रेऽ होऽऽऽ।
मोरे कमवां से खूस मोरा छैला रे,
हंसि-हंसि पिढ़वा बईठि के खाला
का करी देवरा हमार रेऽऽऽ।
सइयां मोरा अंखिया सोहाला रेऽऽऽ।

1—प्रेत, एक पक्षी; 2—बांस की कोठी, 3—अरहर, 4—सांवां।

(मुर्गी का डेना (पंख) फेंकना, बसखार काटना, अरहर का दाना मींजना और कुवार की संवई ठोंकना ही हमारा काम है। यह सब करने से मेरा पति खुश रहता है। वह हंस-हंस कर पीढ़ा पर बैठकर खाता है तो मैं देवर के आंख की किरकिरी बन जाती हूं। फिर भी मुझे तो मेरे प्रियतम ही आंख सुहाते हैं।)

—०—

गृहस्थ-जीवन

अंङना बटोरऽलीन होऽ...

गोरिया अंङना बटोरऽलीन होऽऽऽ
बटोरती बढ़नियां[1] टूटि जाला गोइयां[2]
अऽऽ बटोरती बढ़नियां होऽऽऽ
लगे रिसियाइ[3] सासू-ननदिया। लगे···
केकरी दुकान से आयी होऽऽऽ ?

"मति तू रिसिया सासू तूं ननदिया
बढ़नी मंङाई देऽब हो ऽऽऽ।"

सासु मारे मुकवा ननद खींच झोंटा
सइयां मारे सोंटा चार हो ऽऽऽ।
गोरिया अंङना बटोरऽलीन हो ऽऽऽ।

गोरिया सनेसा नइहर भेजऽलीन होऽऽऽ।
माई-भइया दूनो रोवऽलीन हो ऽऽऽ।

दुवरे में उतरे ला भइया असवरिया
बहिनी देखि दउड़त बाऽलीन होऽऽऽ।

बहिनी के देखे भइया बढ़नी के बरवा
बहिनी तोहके[4] बड़ा दूख बा होऽऽऽ।

बहिनी तूं घरे चल ऽ हो
गोरी नइहरे में चलि जाऽलीन होऽऽऽ।

1—बटोरनी (सींक की बनी), 2—सखी, 3—नाराज, 4—तुम्हें।

(नव व्याहिता आंगन बटोरती है, बढ़नी (बटोरनी) टूट जाती है जिसके कारण सास, ननद तथा पति तीनों ताड़ना देते हैं। वह दुःखी होकर नैहर सन्देश भेजती है। भाई आता और पीटे जाने के कारण बहिन के शरीर पर पड़े दाग को देखकर दुःखी होता तथा अपने साथ बहिन को घर लिवा जाता है।)

विशेष—इस गीत में भाई-बहन के प्रेम का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया गया है।

—०—

बैगा : नारी-उपेक्षा

किया कुल बोरनी

किया कुल बोरनी, बरबस कइलेस ससुरार होऽऽ
सरसों क तेलवा महंङ भइल होऽ रेऽऽ।
पनियां मंङिया, सजाउ कुलबोरनी[1]।
घरवा में धान कुटे डहरी[2] में भूंसा बीगे ।
अइसन फुहरि,[4] हम रखाउब रेऽऽऽ कुलबोर ी।
मड़वा में आग लागे, कलस में धुइयां ठे,
गोंइड़[5] में बोले सियार रे कुलबो नी।
न ई जाने[6] धान कूटे, न ई जाने सइयां के परोसे रे, कुलबोरनी
ससुरा के बाघ धरे, भसुरा के किरा[7] काटे,
घर पहुंचे देवर, मरि जाला रे कुलबोरनी ॥

1—कुल की मर्यादा नष्ट करने वाली, 2—रास्ता, गली, 3—फेंकती है, 4—गन्दी रहने वाली स्त्री, 5—गांव का एक बाहरी छोर, 6—नहीं जानती है, 7—सांप।

(कुलबोरनी व्यर्थ ही ससुराल आयी। उसके ससुराल में पांव रखते ही सरसों का तेल महंगा हो गया और उसे पानी से मांग संवारनी पड़ी। घर में धान कूटती है, मार्ग में भूंसा फेंकती है। अब ऐसी फूहरी को मैं अपने घर नहीं रहने दूंगा। उसके विवाह के समय ही कुलक्षण दिखलाई पड़ने लगे थे। मड़वे में ही आग लग गई थी, कलश में धुआं उठने लगा था। गांव के बाहर सियार बोलने लगा था।

(ये सब अशुभ सूचक हैं) उसके स्वामी की दशा खराब हो गयी। जेठको बाघ ने पकड़ लिया, श्वसुर को सांप ने डस लिया है और उसके घर पहुंचते ही देवर का स्वर्गवास हो गया।)

विशेष इस गीत में गांव की बालिकाओं के दुःखद जीवन का चित्रण है। इसी लोक-मान्यता के कारण उन्हें अपमानित होना पड़ता है।

—o—

कोल : ग्रीष्म

दिनवां में घाम लागेऽ..

दिनवां में घाम लागे, रतिया बरसे आगी,
चलु छैला परदेस भागीं।
ईहां[1] नाहीं कोइला मिले,
नाहीं मिले काठी[2]।
ईहां नाहीं चिरवजी मिले,
नाहीं मिले भंवर[3] रेऽ....ऽ
गुलरी[4] कऽ पेंड़ नाहीं,
कइसे टिकुली लसाइ[5] रेऽ···ऽ

1—यहां, 2—लकड़ी, 3—मधु, 4—गूलर, 5—साटना, चिपकाना।

(दिन में घाम लगता है, रात में आग बरसती है। इसलिए हे छैला ! आओ परदेश भाग चलें। यहां न तो कोयला मिलेगा, न लकड़ी मिलेगी। यहां चिरौंजी नहीं मिलेगी और न ही भंवर (शहद) मिलेगा। यहां तो गूलर का पेड़ भी नहीं है तो भला बताओ कि टिकुली कैसे चिपकाई जायेगी।)

विशेष–इसमें अकाल का चित्रण है। आदिवासी अकाल-दुकाल में गांव छोड़कर भीख मांगने निकल जाते हैं पर बाहर शहर का जीवन उन्हें पसंद नहीं आता, क्योंकि पसंद की वस्तुएं वहां नहीं मिलती।

—o—

भुइंहार : कृषि

ससुरा-दमाद मिलि जोतल बारी

ससुरा-दमाद मिलि जोतल बारी
जोतल खेते देबे महियाइ
बोइ दिहले राई उपजल सरसों
साग लूहा-लुहिया फेंकऽले कड़ारी
ससुर जी क बेटवा बइठै रखवारे
साग खोंटइ गइले ससुरा जी के बारी
ससुर जी क बेटवा लपकि धरेले बाहें।
छोड़-छोड़ु रसिया छोड़ ले रंगीला
अब्बरि-दुब्बरि हम टूटि जइहें बाहें
छैला मस्ते जवान हकर आकर देहीं
कपारे हरदी पीसी छोपल बाहें।

(श्वसुर और दामाद दोनों मिलकर खेत जोतने गये, खेत को महिया दिये तथा सरसों भी बो दिये। जब साग हराभरा हो गया तो श्वसुर के बेटे ने उसे अगोरना शुरू किया। जब गोरी साग खोंटने गयी तो श्वसुर के बेटे ने उसकी बांह पकड़ ली। गोरी बोली; "अरे छोड़ो मेरी बांह, पतली है, टूट जायगी", लेकिन वह मस्त जवान था। क्यों मानता ? उसने बरजोरी की तो सिर फट गया और फिर घर आकर हल्दी लगानी पड़ी।)

—०—

घसिया : हांका

हंकावे ननदा हो रेऽ..

हंकावे ननदा होऽऽ·· रेऽऽ···
बघरू[1] चरना हम जाब रेऽऽ···
हांका ननदो सातो कियारी—
सूगा[2] लागे होऽऽरेऽ···

दीदी गे भरतो कहां गयलन हेऽ···
झलगा[1] मलल धोती कांचे रे ऽ···
झिलगा पिछोरी[4] गो साजन[5] हेऽ···

1—गायों के बच्चे, 2—तोता, 3—कुर्त्ता, 4—ओढ़नी, 5—स्वामी।

(भाभी ननद से कहती है, "हे ननद ! खेत पर चल कर चिड़िया हांको, मैं बछरू चराने जा रही हूं। हे ननद ! तुम सातों क्यारियों में हांका करना, क्योंकि तोते लग रहे हैं। मैं बछरू चरा कर लौटूंगी तो साजन की धोती और कुर्त्ता फींचने जाऊंगी।)

—०—

घसिया : जीव-दया

ले ले मैना होऽऽऽ आपन मैनाऽऽऽ

आपन मैना हो मैनाधन, काहे मैना होऽऽऽ
मैना भूंजि गइलऽ[1] होऽऽऽ।
काहे भूंजि गइलऽ मैना भुटाना[2] होऽऽऽ। काहे होऽऽऽ
भूंजि देला तीला चउरवा,
मैना आइ गइला होऽऽऽ
हो देली सइयां लियावत मैना होऽऽऽ
आइ जइबा गोरी सइयां लियावत आपन मैनाऽऽ
ओइ पारी[3] बङ्गाली क डेऽरा
एइ पारी[4] बंगालिन क डेरा
बिचवां में सिपाही बा ठाढ़[5] मैना होऽऽ
ओइ पार देवाने क डेरा
एइ पार देवानी क डेरा
लेकिन भूलि गइलिन सिपाही बाजार होऽऽ
गंगापुर सहर मैदान गंगा चलऽ होऽऽ
आइ गइनऽ मथुरा लियाव हो, मैना होऽऽ

1—भूनगया, 2—भुट्टे की तरह, 3—उस पार, 4—इस पार, 5—खड़ा।

("मेरे पास एक ही मैना रूपी धन था जिसे न जाने किसने भून खाया, भुट्टे की तरह भून डाला। मैं तिल-चावल देती हूं, हे स्वामी ! जाकर मैना ले आओ। देखना मार्ग में बंगाली, बंगालिन और देवान-देवानी भी मिलेंगे, सिपाही मिलेगा, कहीं वे उसे छीन न लें।" उसके स्वामी जाते और फिर दूसरा मैना खरीद लाते हैं, तभी उसके मन को समाधान मिलता है।)

विशेष—मैना को भुट्टे की तरह भूनने की बात बड़ी मार्मिक है। मैना को कहीं-कहीं स्त्री (पत्नी) का प्रतीक माना गया है। मैना कोमलता का प्रतीक भी है।

—०—

अगरिया : अतिथि-सत्कार

पूरुबे पछिमवां से आवे ला जोगिया

पूरबे पछिमवां से आवेला जोगिया
बइठा जोगी हमरे ओसारी
दुपहर गंवाइ ले।

ऊठि-बईठि जोगी भइला समुतलवा[1]
पूछे लागे घरे क चरित्तर—
पराबूधनी[2] कहां बाटे ?

माई जाले अनिजा बहिनी हमार बनिजा
हमार धनी राजा कचहरिया
हमार धनी एकै सारे।
ये जोगी क जियरा थरहरै[3] कंपला
जरै जोगी ओहरे अकिलिया
आवे जीवा बांचे।

हंथवा में धरे जोगी चिपरी गोइठिया
आगी के बहाना जोगी भागे जीवा बांचे[4]
आगे-आगे जोगी जाला पीछे ले गरदवा[5]
धूरे-गरद[6] उड़ि जाय जोगिया समाय के रह जाय
कइसे जीवा बांचे ? धरती माता सात खण्ड भइले
जोगिया समाइ के मरि गइल

1—स्थिर, 2—पति, 3—थरथर, 4—जान बच गयी, 5—गर्द, 6—धूलगर्द

(पूरब-पश्चिम से एक जोगी आया। उसे गांव की एक स्त्री ने बिठाया और कहा, "दुपहर बिता के जाओ।" जोगी बैठ गया और घर का समाचार पूछने लगा। स्त्री ने कहा, " मां-बहन कमाने गयी हैं, पतिजी राजा की कचहरी गये हुए हैं। मेरे पति का एक जोगी साला है।" इतना सुनते ही जोगी आग लेने के बहाने भाग गया (इस जोगी का ही भाई राजा के यहां नौकर था)। आगे-आगे जोगी भाग रहा था, उसके पीछे धूल उड़ती जा रही थी। उसने धरती से प्रार्थना की, "हे धरती माता ! किसी प्रकार जान बचाओ।" पृथ्वी फटी और वह धरती में समा गया।)

—०—

अगरिया : अहेर

भउजे बगिया में खेले ले गुलेल होऽऽऽ

भउजे[1] बगिया में खेले ले गुलेल[2] हो—
भउजे राम-लखन धनुष चढ़ाये।
रामा पोसले[3] सुगनवां मारि दिहलें,
रामा रनियां क जिउवा उदाऽस॥

भउजी पोसले बा दूसर सुगनवां--
भिनुसर[4] बोले सीताराम
रामो बइठे भउजी, सुगना पढ़ावें
भउजे पोसले हिरन सुगनवां हो। भउजे बगिया॥

1—भाभी, 2—गोटी- गुलेला (आदिवासी इसी से चिड़ियों का शिकार करते हैं), 3—पाला हुआ, 4—भोर में।

(गांव, घर के सामने बाग है, उस पर बैठे तोते को भाभी गुलेला से मारना चाहती थी, कि राम-लक्ष्मण ने धनुष-बाण से उसे मार गिराया। अरे, वह तो पाला हुआ तोता था, यह जानकर रानी का जी उदास पड़ गया। भाभी ने दूसरा तोता पाल लिया जो भोर ही में उठकर 'सीताराम' बोलता था। भाभी प्यारे तोते को पढ़ाया करती "परबत्ते सीताराम कहो।")

विशेष—तोता संदेश-वाहन का काम भी करता रहा है।

—०—

भुइंहार : अहेर

चकड़-मकड़[1] ढोंकि के आगी सुलगावै[2]

चकड़-मकड़ ढोंकि के आगी सुलगावै
लेसऽ ले[3] केदली-बन अगिया हे राम
सब रे पंखियरिया[4] ऊड़ि-पूड़ि जालै
सोवति आवे बनसत्ती।
चिंउटी[5] के भरना होले हे राम
राजा के पूतवा अ तीरे बहेलिया
दूध सींचि अगिया बुझावे।
अपनाऽ बन छोड़ि के दूसरा बन पकड़ै
चल भइलें परही अहेर।
घमवां के छतवा छवावइ
खाइ ही के लीहा सीधा सम्हराई
चलि भइले परही अहेर।
छोट भइया जाले घाटे-घटवरिया[6]
बड़ भइया हरिना बिडोरै[7]
हरिना के सबदे खेहा[8] उधिराये[9]
दरियां के सबदे मराले जेठ भइया
रामइ रमइया कहि गीरै जेठ भइया
पइयां तोरे लागूं ऊगत सुरुजा जी
घमवां जीनि कुम्हिलाया
पइयां तोरे लागूं माई धरतिया
चिंउटी जीनि बगराये
पइयां तोरे लागूं राई गिधिनियां
गिधवा जीनि बगराये

1—चकवड़, 2—जलाता है, 3—जलाता है, 4—पांखें, 5—चींटी, 6—नदी के घाट, 7—भगाता है, 8—धूल, 9—उड़ती है।

(दो भाई जंगल गये। जंगल में आग लग गयी। उन्होंने किसी तरह रोझिन के दूध से आग बुझाये और दूसरे जंगल चले गये। वहां जाकर एक भाई ने हरिणों को घेर लिया और दूसरा नदी के तीर चला गया। झाड़ी के बीच से आवाज आयी तो

दूसरे भाई ने हरिण के भ्रम से अपने भाई को ही मार गिराया। वह राम-राम कहते गिरा तो उठा ही नहीं। दूसरा भाई अब सूरज से प्रार्थना करता है कि हे सूरज देवता ! तेज घाम मत करना, वर्ना मेरा भाई कुम्हला जायगा। धरती माता से प्रार्थना करता है कि मां ! तुम चींटी मत बगराना वर्ना वे उसे चाल जायंगी। वह गिद्धराज से भी प्रार्थना करता है कि तुम मेरे ऊपर कृपा करके गीधों को मत झपटने देना। इतना कहकर वह घर जाता और सगे-सम्बन्धियों को लाकर भाई का अंतिम संस्कार करता है।)

विशेष-इस मार्मिक गीत में भाई का भाई के प्रति प्रेम का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है।

—०—

पठारी : जीवन-चित्र

तोका देखे जइबो

तोका देखे रइहों पेंड़रा बजार
सावन में सांवां[1] फरे--
भादों में कासी[2]
भउजी बरेला लुगा[3]
मेहर[4] बरे सांफी
तोका देखे जइहों पेंड़रा बजार।

1--एक प्रकार का अनाज, 2--कास, 3--धोती, साड़ी, 4--पत्नी।

मैं पेंडरा बाजार देखने जाऊंगा। सावन सावां और भादों में कास फलता-फूलता है। उसकी आय से भाभी लाल कपड़े तैयार करती है और पत्नी तौलिये बनाती है। उसे लेकर मैं पेंड़रा बाजार करने जाऊंगा।

—०—

पठारी : जीवन-चित्र

कौन तोर पीसे कूटे ?

"कौन तोर पीसे-कूटे,
कौन तोर पानी भरे ?
कौन तोर अंङना लटोरे हे sss।
"रामनन्दन पीसे-कूटे,
मेघनन्दन पानी भरे,
पवन मोर अंङना बटोरे हेsss।

(एक व्यक्ति पूछता है कि तुम्हारा पीसने-कूटने का काम कौन करता है ? कौन तुम्हारा पानी भरता है ? और तुम्हारा अंगना कौन बटोरता है ? तो दूसरा उत्तर देता है—"रामनन्द तो पीसता-कूटता है, मेघनन्दन (बादल) पानी भर जाता है और पवन आकर मेरा घर बटोर जाता है।)

—०—

परहिया : गरीबी

हाथ में आरा चूरा

हाथ में आरा-चूरा,[1] बिछुवन में काला डोरा
सीस गो फेनूसा-फेनूसा[2]
रे परवाला[3] जिउवा फंसे।
उठि गयो ब्यौपारी डेरा,
जगरनाथ ब्यौपारी, मुर्गी कऽ अंडा लेके,
जल्दी बोलावे।
पोया[4] बइठि गल देवान,
खोरी-खोरी हंसा मुसूकि चले।

ममई के खोरे में भुलाइल।
केहू के बाघ धरे, केहू के भवानी खायं
केहू के पलकी उठाइ के, चहुंदिसि में नजर चलाई ।।
तुर तुरती[5] ढोका[6] गोरी
चमकत आली सान मैदान ।।

1--हाथ का आभूषण विशेष, 2--फूलों का गजरा या गहना, 3--सौंदर्य-प्रेमी, 4--ड्योदी, 5--करमा नृत्य करते समय नर्तकों के पैर का गहना, 6--पैर की थाप।

(हाथ में कंगन, पांव में बिछुवा, सिरपर फूलों का गजरा पहिने करमा नृत्य के लिए तैयार युवती को देखकर प्रेमी का मन डोल उठा, वह उसके सौन्दर्य-जाल में फंस गया। व्यापारी का डेरा गांव से उठ गया, उसका ऋण बोझ बन गया। देवान ड्योढ़ी पर आकर बैठ गया। उसके डर से कर्जदारा गांव की गली में जाकर मेहुड़ी की झाड़ी में छिप गया। लगा, जैसे किसी को बाघ ने पकड़ लिया, किसी को देवी ने खा लिया। चारों ओर नजर उठाकर देखा गया तो सजी संवरी गोरी करमा नृत्य के लिये तैयार थी।)

—०—

अगरिया : भाग्य का फेर

करम भयल पातर[1] रीऽ..

करम भइले पातऽरीऽऽऽ।
चलले जोगिया भीच्छा मांङेऽऽ।
चलले लउड़िया[2] भीच्छा देवे
करम भइले पातऽरीऽऽ।
हाथ-हाथ तिल-चाउर
जोगी दिहले छितराय[3]
लेउड़िया के मारे घूसा[4] चार
करम भयल पातऽरीऽऽ।

रोवत लंउड़ी घरे ढूंके[5]
मरोरी-सरोरी रानी दिहले उठाय
चलल रनियां भीच्छा देवे
करम भयल पातऽरीऽऽ।

1—हीन, 2—सेविका, 3—बिखेर दिया, 4—थप्पड़, 5—प्रवेश करती है।

(तकदीर ही में आग लग गया, क्या करें ! किशोरी उस योगी को भिक्षा देने लगी तो भिक्षान्न (तिल-चावल) जमीन पर गिर पड़ा जिसके कारण योगी क्रुद्ध हुआ, रानी ने भिक्षा देने वाली सेविका को डांटा और वह रोती घर भाग चली। रानी को स्वयं उठकर भिक्षा देना पड़ा, यह भाग्य का ही न फेर है ! रानी की मनोकामना पूरी न हुई।)

—०—

घसिया : महंगाई

कलयुग अइसन आइल होऽ..

बड़का के पांव लगली छोटका असीस दिहलंऽ
मरदा मत करी रीस
राजा के राज गइल, धनी के खजाना
गरीबन के दुख भइ गल दोना भर क दाना[1]
सासू जी नइकन[2] पतोहुवन के सेवा करें होऽ..।
कलयुग अइसन अइला होऽऽ।

केहू खाइ दाल-भात,
केहू घीउ खिचड़ी,
रोटी पानी में चुराइ[3] के होऽऽ।
कलजुग अइसन अइला होऽऽ।

अइसन तूं जनम देला—
छोड़ि के पहारे डेरा डालीं होऽऽ।
कलजुग अइसन अइला होऽऽ।

राजा खाला दाल-भात,
बाबू-भइया थिचड़ी,
गरीब खाई कोदई क रोटी,
पाते में चुराइ के,
अइसन जमाना, अइसन जनम देला होऽऽ।
जग छोड़ि के पहारे डेरा । अइसन···।
एक पइला चाउर[4] के पियरी रंङाइल
कबों ना नेवता[5] दियाला, पथर दिलवा भइल होऽ..।
कलजुग अइसन आइल होऽऽ।

1—अधिक, न समाप्त होने वाला, 2—नयी, 3—पकाकर, 4—चावल, 5—निमंत्रण।

(बड़ों के चरणस्पर्श किया तो छोटों ने आशीर्वाद दिये। हे मर्द ! तू क्रोध मत करो। यहां कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है। राजा का राज्य और धनी का खजाना खत्म हो गया और गरीबों का दुःख दोना भर का दाना हो गया। ऐसा कलयुग आया कि सासुओं को भी नयी पतोहुओं की सेवा करनी पड़ गयी। कोई दाल-भात खा रहा है तो कोई घी-खिचड़ी, रोटी को पानी में पका कर खा रहा है। और हे भगवान् ! हमारा तो जन्म ही व्यर्थ हो गया जो गरीबी के कारण घर छोड़ कर पहाड़ के ऊपर डेरा डालना पड़ गया। क्या कहूं, ऐसा कलयुग आ गया। एक ही जगह राजा दाल-भात खाते हैं। बाबू-भैया खिचड़ी खाते हैं। हम गरीब कोदई की रोटी-पत्ता (साग) में पकाकर खाते हैं। ऐसा जमाना आया है कि पहाड़ के ऊपर डेरा डालना पड़ा। एक पइला (बांस की बनी कुरुई बर्तन) चावल देते हैं तो एक पियरी रंगने भर के लिए रंग मिलता है। ऐसी महंगाई निगोड़ी आयी कि व्याह के अवसर पर भी अपने इष्ट-मित्र या सगे-सम्बन्धी को निमंत्रण देना कठिन हो गया है। हमारा दिल पत्थर हो गया है क्या कहें कलयुग का जमाना ही ऐसा आ गया है।)

विशेष—इस गीत में आदिवासी-गैरआदिवासी सम्बन्धों का चित्र अंकित है। महंगाई, गरीबी, अकाल, भुखमरी उन्हें मार गयी है। वे उसके शिकार बार-बार होते रहते हैं।

—०—

कि हां बयरा बहति पुरवइया

कि हां-हां बयरा बहति पुरवइया
निरेखत[1] तिरिया मरि जाति बाइ होऽऽ
कहवां हम चलि दिहली भाई-बाप कोरवां[2]
कहवां भइया चिठिया भेजला—
हम दूर देस पर परली अकेला होऽ... ।
बचपन में छोड़ि देहली माई-बाप क डेरा
भइया चिठियन क नाहीं बा अन्देसा[3]
हम दूर देस पर परली अकेला होऽ.. ।
का करी माई-बाप, का करी संङतिया[4]
का जान का करी पिठिया क भइया[5]
दूर देस पर परली अकेला होऽ..
बुढ़िया हमइं बा गियान[6] पर सङ्गतिया
लेकिन ढाल बाटइ पिठिया क भइया
हम दूर देस परली अकेला होऽ.. ।

1—देखती है, 2—गोद, 3—आशा, 4—साथी, 5—सगाभाई, 6—ज्ञान ।

(नायिका का नैहर किसी पूरब दिशा में स्थित है, अतः जब पुरवइया हवा चलती है तो वह जल मरती है । "भाई-बाप की गोद छोड़कर मैं यहां चली आयी थी । आशा चिट्ठी की थी जिसे भाई ने नहीं भेजी । क्या कहूं मैं यहां दूर देश में अकेली पड़ी हूं, दुखी हूं लेकिन मेरे माता, पिता, भाई कर भी क्या सकते हैं ! तब भी, बुद्धि ही मेरी संगिनी है जो धीरज बंधाती है । भाई की याद मेरे लिए यहां भी ढाल का काम करती है ।)

विशेष–इस गीत में किसी बिधवा के जीवन का चित्र अंकित है जो अकेले किसी दूर देश में पड़ी है । भाई, बाप, माता उसकी खोज खबर नहीं लेते तब भी, बुद्धि ही उसकी जीवन संगिनी बन गयी और भाई की याद जैसे ढाल बन गयी है और इसलिए वह कुमार्गगामिनी होने से बच जाती है ।

—o—

दून देस में परली अकेल होऽ..

दून[1] देस में परली अकेल होऽ..,
लालन[2] से पड़ि गल जोऽड़।
का करिहैं माई बाप,
का करिहैं पीठी क भाई होऽ..

नान्हन[3] से पड़ि गल जोऽड़,
दून देश में परली अकेल होऽ..
भल बाटें[4] माई-बाप,

भल बाटें सङ्ङी साथ।
भल बाटें पिठिया[5] क भाई होऽ..
नान्हन से पड़ि गल जोऽड़।

कलजुग में पड़ली अकेल होऽ..
मार करिहैं माई-बाप,
सङ्ङ दीहें सङ्ङी-साथ
ढाल ओजिहें[6] पिठिया क भाई होऽ...।

1—दूर, 2—कम उम्र का बालक, 3—बालपन, 4—हैं, 5—सगा भाई, 6—रोकेंगे।

(दूर देश से आकर मैं अकेली पड़ गई हूं, यहां भी लड़के ही से पाला पड़ गया। इसमें मां-बाप, संगी-साथी या पीठी का भाई भी क्या कर सकते हैं। वे सभी अच्छे हैं, लगता है मेरे भाग्य में यही बदा था। फिर भी, माई-बाप मेरा साथ देंगे, सगा भाई मेरे ऊपर वार होने नहीं देगा, इसलिए मुझे चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।)

विशेष—इस गीत में अनमेल विवाह की त्रासदी का सजीव चित्रण किया गया है।

—o—

अवारा : पति

मोर राजा छइला रेऽ..

मोर राजा छइला[1] रेऽ..
बऽसि गइले चिकनी बजारेऽ.।
बसि गइले चिकनी बजारे रेऽ...।
बेचइ लगिले भंगिले[2] पान।
झुलनी बेचि पान खाइ गइले,
नथिया बेचि पान खाइ गइले,
खरपा[3] बेचि बंड़िया सिअउले—
गरमी में गोड़वा[4] जरइ मोर रेऽ...॥

1—छैला, 2—भांग, 3—चप्पल, 4—पैर।

(मेरा पति ऐसा छैला निकल गया कि क्या कहूं ! जाकर चिकनी बाजार में बस गया। भांग और पान खाने लगा। परिणाम यह हुआ कि मेरी झुलनी भी बेचकर पान खा गया, नथिया बेचकर पान खा गया, और तो और चप्पल बेचकर बंडी सिला लिया जिसके कारण मेरे पांव जलने लगे।)

विशेष—इसमें प्रेम और गरीबी के एक साथ चित्र अंकित हैं। मनःस्थिति और अन्तर्द्वन्द्वों का इससे अच्छा चित्र और क्या हो सकता है !

—०—

खरवार : गरीबी

केहू रोवै खेतवा तरे

केहू रोवै खेतवा तरे, केहू रोवै खरिहाने,
केहू रोवै सांझ डगरिया।
बुढ़वा रोवै खेतवा, बुढ़िया खरिहाने
सांवरी रोवै सांझ डगरिया।
केहू रोवै छिउला तरे, केहू रोवे सिवाने,
केहू रोवै बीच बजरिया।
भइया रोवै छिउला तरे, बहिनी रोवै सिवाने
तिरिया रोवै सांझ बजरिया।

(गरीबी के कारण बूढ़ा वन में, बुढ़िया आंगन में, बहिन सिवान में, तथा बहू ड्योढ़ी पर बैठकर रो रही है, क्योंकि आज उनके घर खाने को कुछ भी नहीं है। भाई छिउला के नीचे बैठा रो रहा है।)

—०—

खरवार : ग्वालिन

महना–महना दूध बइठावे

महना–महना दूध बइठावे,
अमिरित घड़िला दहिया जमावे।
हरिहर में गोकुला नारी खेलत हैं॥
दधि कांड़ि बरतने, बिछुवा सजावे,
सिर पर बिठई[1] बइठाये,
मटकी भरि दहिया बेचन जाय होऽऽऽ॥

1——बिड़ई, जिसे सिर पर रखकर उस पर कोई बोझ रखा जाता है।

(गोकुल गांव की नई-नवेली महना भर-भरके दूध बैठाती है, अमृत घड़े में दही जमाती है। गोकुल की नारी ऐसा करते कितना सुख पाती है। पांवों में बिछुवा सजाकर सिर पर बिठई रखकर मटकी भर दही लेकर जब वह बेचने निकलती है तो लोग देखते ही रह जाते हैं।)

—०—

बैगा : अभावग्रस्तता

बिकि गल महुअवा

बिकि गल महुअवा, बेचाइ गल सेखुववा,
कइसे क जीयइ आजु क बइगवा ?
बंसवा में आगि लागी,
भउका[1] में बाधा लागी।

मानर क दाम अब,
कहंवां से देइ रेऽ...।
आजु क बइगवा ॥
मोरवा न मारे देंइं,
तेनू[2] न खाये देंइं।
मोरछल कहंवां से लियावे रेऽ....
आजु क बइगवा ॥

1—अनाज रखने का पात्र, 2—तेन, फल विशेष जिसे आदिवासी खाते हैं।

(महुआ बिक गया, साखू भी बिक गया, अब आज का बैगा अपना जीवन-यापन कैसे करे ? बांस में आग लग गयी, भौका बनाने में भी बाधा पड़ गई, अब मादल के दाम का भुगतान कैसे किया जायगा ? अब वन में मोर का शिकार करने नहीं दिया जाता, तेंदू का फल भी खाने नहीं दिया जाता, भला अब आज का बिचारा बैगा मोरछल कहां से लायेगा ?)

विशेष—इस गीत में लाचार आदिवासी-समाज के जीवन का सजीव चित्र उपस्थित हो गया है। जंगल पर रोक लगने से उसकी जीविका चली गयी।

—०—

नशेबाज पति

मोर राजा छइला रेऽ..

मोर राजा छइला रेऽ...।
लेइ बिजुल डहिया ठोकावेंऽ..।
डहिया ठोंकाइ के भइले समतुला[1] रे,
मोर राजा छइला रेऽ..।
बेचि - बेचि लत्ता[2],
खाये लगले भांगि रेऽ..।

सुरती अ तमाखू[3] खाइ,
भइले मझमेला रेऽ . . ।
खाये लगिले भंगिले पान रे,
मोर राजा छइला रेऽ . . ।

1—निश्चित, 2—कपड़ा, 3—तमाखू, चीलम पर चढ़ाकर पीते हैं।

(मेरा पति छैला निकल गया। वह खाये-पीये मस्त रहता है। घर का सामान बेचकर, भांग, तमाखू, पान खा जाता है। क्या कहूं, मैं तो उससे तंग आ गई।)

—०—

घसिया : भुखमरी

रापटगज बजार में टीवां[1] मारिन होऽऽऽ

आवति बा फटफटिया[2] गाड़ी चढ़ि भागऽ हो !
आगे-आगे रेल चले, पीछे ले ढकेल गाड़ी-[3]
पीछे ले ढकेल ।

टिकस बाबू टिकस नाहीं मिलै—
रापटगज बजार में टीवां मारिन हो ।
एक पइला चाउर मांङल,
आधा पइला[4] दाल
बांटत-बांटत भात ओराइ गयल—
डउका[5] मारै लात ।
अब कइसे के बहाना डालीं हो ?
रापटगज बजार में टीवां मारिन हो ।

1—पड़ाव डालकर भीख मांगना, 2—मोटरसाइकिल, 3—ठेला, 4—बांस का छोटा पात्र, 5—पति ।

(फटफटिया गाड़ी (मोटर साइकिल) आ रही है, चढ़कर भाग चलो। आगे-आगे रेलगाड़ी चल रही है और उसके पीछे ढकेलगाड़ी (ठेला) चल रही है। टिकट बाबू ने टिकट नहीं दिये, इसलिए राबर्ट्सगंज बाजार में रुककर डेरा डालकर

भीख मांगना पड़ा। भिक्षा में कुल एक पैला (सींक या बांस का बना छोटा पात्र) चावल मिला और आधा पैला दाल मिली। उसे लाकर जब अपने पति और पुत्रों को खिलाने लगी तो बांटते-बांटते भात घट गया जिस पर क्रुद्ध होकर डउका (पति) ने लात मारी। मैं उनसे कौन सा बहाना करूं ?

विशेष—इस गीत में आदिवासियों की गरीबी, परिवार के प्रति दायित्व निर्वाह की भावना, पातिव्रत धर्म तथा बेटिकट यात्रा न करने की ईमानदारी का एक साथ परिचय मिलता है।

—०—

कोल : भुखमरी

भूख बिन जरत बाय छतिया

केकरे घरे रोटिया मांङे जाईं रेऽ . . ।
भूख बिन जरत बाय बतिया ।
कइसे क दुधवा पियाईं रेऽ . . ।
परिगल सूखा, पानी नाहीं कुइयां-
कइसे क सइयां बदे-
पनियां लियाईं रेऽ . . ।

(मैं किसके घर रोटी मांगने जाऊं ? भूख के बिना छाती जल रही है। पेट खाली होने के कारण स्तनों में दूध नहीं है। मैं बेटे-बेटी को दूध कैसे पिलाऊं ? सूखा पड़ गया है, कुएं में पानी नहीं हैं, फिर स्वामी को पिलाने के लिए पानी कहां से लाऊं ?)

—०—

श्रम-गीत

तेनुवां क पतवा लोरत

तेनुवां क पतवा लोरत गरि गल कंटवा रेऽ. . ।
चिलकत घमवां,
नाहीं मिले छउवां रेऽ. . ।
पसीनवां में भींजल चोलिया,
देहियां में चिपकल जाला रेऽ. . ।
मेझरी क रोटिया,
दंतवा में लसके,
खावत मनवां बिदकाला रेऽ. . ।

(तेंदू का पत्ता तोड़ने गयी तो कांटा गड़ गया। धूप चिलक रही थी और कहीं छाया नहीं मिल रही थी। चोली अतिशय गर्मी के कारण पसीने में भींग गई थी। मिलेजुले अनाज की रोटी दांत में लग जाती है, उसे खाते मन बिदक जाता है।)

विशेष—यह श्रम-गीत हैं। गांव की गोरी निर्धनता के कारण तेंदू का पत्ता तोड़ने जाती है, कड़ी धूप सहती है और जब घर आती है तो निकृष्ट कोटि के अनाज की रोटी खाने को मिलती है।

—०—

अकाल : भुखमरी

अइसन अकाल परि जाइ होऽऽऽ

के जानीं अइसन ई अकाल परिजाइ होऽ . . ।
पहुना आवऽनऽ टापक टोहेर[1],
पहुना बइठाइब झूर भुइयां[2] ।
ना मोरे खटिया[3], ना मोरे मचिया[4],
अइसन अकाल परि जाला होऽ . .,
पहुना आवऽनऽ टापक टोहेर ।

सखुआ-परास सब सूखल जानी
अइसन अकाल परि जाला होऽ . . ।
थोड़इथोड़ खाना खिआइब हो,
पहुना भगाइब बड़े भोर हो,
पहुना भागल चलि जाइ भोर होऽ . . ।
अइसन ई अकाल परि जाय होऽ . . ।

1--क्रमवार, लगातार, 2--सूखी जमीन पर, 3--चारपाई, 4—बाधी की कुर्सी।

(कौन जानता था कि ऐसा अकाल पड़ जायगा। अकाल पड़ने से मेहमानों का तांता लग गया है क्या करूंगा, उन्हें सूखी जमीन पर बिठा भर दूंगा, क्योंकि अकाल के कारण घर का सारा सामान बिक गया है, और मेरे पास उन्हें देने के लिए चारपाई और मचिया भी नहीं रह गयी है। साखू पलाश सभी सूखते चले जा रहे हैं। मेहमानों को थोड़ा-थोड़ा भोजन दूंगा और भोर होते उन्हें भगा दूंगा। क्या करूं ऐसा अकाल ही पड़ गया है।)

विशेष—अकाल में आदिवासी साखू का फल और महुआ खाकर जीते हैं जो अखाद्य है।

—०—

अकाल : भुखमरी

मरधा मत करिहा रीस

कवन गइल आला-माला,
कवन गइल माला।
कवर लीहल पांच लाख,
तुलसी क माला।
सिर बृन्दावन में गियानो धारा।
साधू गइल आला-माला, जोगी गइल माला।
लल्लू लीहल पांच लाख तुलसी कऽ माला।

सिर बृन्दावन में गियानो धारा।
बड़का के पांव लागै, छोटका असीर दीहल,
माता-पिता चरन दावैं, ओहू बड़ा नीक।
मरधा मत करिहा रीस,
हिरदय लगाई के दूसर गइबा गीत।

(इस गीत में अकाल की स्थिति का चित्रण है। अकाल पड़ने पर आदिवासी परिवार तितर-बितर हो जाता है। परिवार के कुछ लोग भीख मांगने के लिए बाध्य हो जाते हैं तो कुछ लोग विरागी (असमर्थ) होकर जंगल-पहाड़ में चले जाते हैं। भुखमरी की दशा में बहुत से लोग तुलसी की माला लेकर, सन्यासी होकर वृन्दावन चले जाते हैं। साधु-संन्यासी हो जाने के बाद छोटे-बड़े सभी आदर तो दे रहे हैं पर यह अजीब स्थिति उत्पन्न हो गई है।)

—०—

बैगा : शोषण

मिरिजापुर के थाना मोके जाना परी यार

हू हू हू हांका मोके जाना परी यार,
मिरिजापुर के थनवां में जाना परी यार।
आगे—आगे जाज साहब,
पीछे—पीछे चले सिपाही।
मोके जाना परी यार।
मिरिजापुर के थाना मोके जाना परी यार।
हाथ में हथकड़ी बान्हे,
गोड़े में जंजीर,
मोके जाना परी यार
मिरिजापुर के थाना मोके जाना परी यार।
कोड़इ कोड़ा मारत जइहै,
ठुमुक—ठुमुक रेंगल जाब,
मिरिजापुर के थनवां में जाना परी यार।

(मुझे मिरजापुर के थाना में जाना पड़ेगा। आगे-आगे जज और पीछे-पीछे सिपाही चल रहे हैं। वे हाथ में हथकड़ी और पांव में जंजीर बांधे हुए हैं और ऊपर से कोड़ा-कोड़ा मार रहे हैं। मैं ठुमक-ठुमक मिरजापुर के थाने चला जा रहा हूं।)

विशेष—इस गीत में आदिवासी-जीवन का दर्द अंकित है। पुलिस प्रशासन उन्हें आये दिन परेशान करता रहता है। अपराध कोई करता है, पर बेचारे पकड़े और सताये वे ही जाते हैं।

—०—

सामन्ती व्यवस्था का विरोध

कूजा गढ़े राजा राउर सार दरिया

कूजा गढ़े राजा राउर सार दरिया।
जब ले लेबे राजा लोहे सार बारिया,
बेड़ा ले राजा गाइ भइंसिया
जब कहीं न लगी राजा गाइ भइंसिया।
काही खातिर राजा हांसा राज छोड़बा,
दूध खातिर बेड़ा गाइ भइंसिया।
चढ़े खातिर राजा हांसा राज छोड़बा॥
कइ दिना राजा बेड़ल न गाइ भइंसिया ?
कइ त दिन राजा हांसा राज छोड़बा ?
जनम दिन राजा बेड़ल न गाइ भइंसिया,
दस दिन राजा हांसा राज छोड़बा।

(राजा ने गाय-भैंस सब छीन लिये, नजर में ले लिये। अब, जब प्रजा के पास कुछ न बचा तो बेसहारा हो गयी। जब प्रजा ने राजा से पूछा कि हे राजा ! आपने ऐसा क्यों किया ? तो राजा ने कहा; "दूध के लिए तो गाय-भैंसों को बेढ़ लिया और चढ़ने के लिए हंसो को बेढ़ लिया।" प्रजा फिर पूछती है, "हे राजा !

हमारी गायें-भैंसें आप कब तक बेढ़ते रहेंगे और हंसों को भी कब तक अपने उपयोग (चढ़ने) के लिए लेते रहेंगे ?" तो राजा फिर जबाब देता है, "आजीवन गाय-भैंसे बेढ़ता रहूंगा, और दस दिन तक हंस की सवारी भी करता रहूंगा।")

विशेष—इस गीत में सामन्ती व्यवस्था की नीतियों का उल्लेख है। राजा के कारण प्रजा त्रस्त थी।

—०—

शोषक के प्रति दया

डढ़िया कटवै राजा

डढ़िया कटावै राजा डढ़िया झकावै
राजा हो पायल कैदा सहर मैदान
पायल रहै दा हो, बसि गयल बनियां बकाल।
रहै दा हो बेचै लागे सोरतिया-गुर-नून॥
राजा हो गहंकी नऽ हलरति आवै।
घटिया सेर बांधै घटिया पसेरी
राजा हो गहंकी लवटि घर जाय।
पूरा सेर बांधै पूरा हो पसेरी
राजा हो गहंकी न हलरत आवै।
के तोर खात है सुरती—तम्माखू
राजा हो के खाया बीरा पान
सारो सिपाही खाले सुरती-तम्माखू
राजा हो कइसे के खाले बीरा पान।
पलि मिसिर खाले सुरती-तम्माखू
राजा हो कतरि-कतरि बीरा पान
राजा हो थूके रक्त पान।

राजा हो कहां हो लगउला बीरा पान
हमरे पिछवारे बा दस घर मालिन
राजा हो कहां लगवली बीरा पान
हम जब होब एक बालक बिटिया
त भादों में मलिनि उजार के छोड़ब
हम जब होब एक साव क॰ऽ बेटवा
राजा हो अवर बसाइब घर चार।

(इस गीत में प्रजा वर्ग के लोग राजा से निवेदन कर रहे हैं कि हे राजा ! गांव के लोगों को मत उजाड़ो। बनियां सुरती-तमाखू, नून-गुड़ बेचता है। यह सच है कि वह कम तौलता है, लेकिन इससे तो उसी की हानि है क्योंकि ठीक तौलेगा तो ग्राहकों की भरमार रहेगी। वह नहीं रहेगा तो आपको बीरा का पान भी कहां मिलेगा ? हमारे घर के पीछे मालिनों का घर है, उन्हें भी न उजाड़ो, क्योंकि वे भी पान देती हैं। हम आपकी तरह आपके बेटे-बेटी की तरह होते तो दस घर और बसा देते।)

विशेष—यह गीत राजा साहब बड़हर के यहां आयोजित करमा के अवसर पर गाया गया था।

—०—

पठारी : महंगाई-सुराज

गान्हीं बाबा क सुरजिया

गान्ही बाबा क सुरजिया महंङा कइले रेऽ....
तेलवा-नुनवां क भउवा असमान रेऽ...।
कइसे क ढूंढ़ीं माई अपना सङ्हतिया—
अपनेउं जिउवा पहार भयल रेऽ...।

गइया बेचली, बरधा बेचली—
थरिया गइल बेचाइ।
मानर भी बेचि देइ,
बिरदरी क नाक कटाइ रेऽ...
गान्हीं बाबा क सुरजिया महंङा कइले रेऽ...।

(गांधी बाबा का स्वराज्य (स्वतन्त्रता-सुन्दर राज्य) महंगा पड़ गया, क्योंकि स्वराज्य मिलते तेल-नमक के भाव आकाश छूने लगे। नायिका कहती है कि हे मां ! मैं अपने लिए पति कैसे खोजू, जब अपना जी जिलाना ही पहाड़ हो गया है। गाय बिक गयी, बैल बिक गया, यहां तक की थाली भी बिक गयी, अब मादल भी बेचने की नौबत आ गयी है, लेकिन इससे तो बिरादरी की नाक ही कट जायगी। क्या कहूं यही तो गांधी बाबा का 'सुराज' या स्वराज्य है।)

विशेष—मादल वह वाद्ययंत्र है जिससे वह भीख मांग कर विषम से विषम परिस्थितियों में जी लेते हैं, अकाल के कारण वह भी बिक गया।

—०—

अकाल - यात्रा

खेती के करन होऽ ..

खेती के करन होऽ . . ।
केहू रोवै खेते केहू खरिहान होऽऽऽ।
केहू रोवै आधे अंङने होऽ . . ।
माई रोवै खेते, बहिन खरिहान,
सइयां रोवैं बीचे अंङना होऽ . . ।
खेती के करन होऽ . . ।
लड़िका खोजे ला बासी भात हो रेऽ . . ।
कइसे क परोसब लड़िका भात होऽ . . ।

चलऽ चलीं सरगुजा के राजि होऽऽऽ।
लेला सांवर हंसुआ के बेंट होऽ . . ।
केहू तरे लड़िका जियाइब होऽ . , ।
ई दुख समाला खेती कइल होऽ . . ।
चलऽ चलीं सरगुजा के राजि होऽ . . ।
मोरे मन बसि गइल चलऽ चलीं सरगुजा के राजि होऽ . . ।

(खेती के कारण (आकाल पड़ जाने से) कोई खेत, कोई खलिहान और कोई बीच आंगन रो रहा है। भाई खेत में, बहिन खलिहान में और स्वामी जी बीच आंगन रो रहे हैं। भूखा बेटा बासी भात मांग रहा है, उसे कैसे परोसूं ? हे स्वामी ! आओ, अब सरगुजा-राज भाग चलें। तुम हाथ में हसिया-बेंट ले लो, चल के किसी प्रकार लड़के (बेटे) को तो जिलाऊंगी ही। अब मेरे मन सरगुजा चलना ही बस गया है।)

—०—

धरकार : बेकारी

नजरिया ! नजरिया !! नजरिया !!

नजरिया ! नजरिया !! नजरिया !!!
हमरा लागल बा बिदेसी पर नजरिया।
जाये के बिदेस रहे—
काहे कइला सदिया ?
चढ़ती जवानी पिया !
कइले बरबदिया
मोरा लागल बा परदेसी पर नजरिया।
रहरी के दाल पकवली,
चउरा बसमतिया।

खइबो में बड़ा नीक,
ककरी[1]क बतिया ।
हमरा लागल बा परदेशी पर नजरिया ।
ईह बीह पास कइली,
ना मिली नोकरिया
टेसन पर से गाड़ी खूलल,
ढोये के मोटरिया ।
मोरा लागल वा परदेसी पर नजरिया ।

(मेरी नजर परदेशी से लग गयी है । हे परदेशी ! अगर तुम्हें परदेश जाना ही था तो तुमने मुझसे प्रीति क्यों की ? तूने तो मेरी चढ़ती जवानी को ही बर्बाद कर दिया । अरहर की दाल, बासमती चावल का भात तो ठीक है, लेकिन ककड़ी की बतिया सबसे अच्छी लगती है । इण्टर, बी० ए० पास कर लिया लेकिन नौकरी नहीं मिली, फिर करता क्या ! स्टेशन पर कूली का काम ही अपना लिया ।

विशेष-इस गीत में बेकारी और प्रशासन पर करारी चोट है ।

—०—

वियोग : वनजारा

दुनू तन आना निरमोहे

दुनू तन आना निरमोहे[1], कलपत जिया जाय
जब त पिहा[2] रहले लड़िका नदान[3] हो—
तब पिहा रहले अगोऽर[4] ।
आजु जब भइले मस्त जवान हो—
छोड़ि के चलल बनजार ।
मांझे सहर रानी कुइयां खोदावै हो
तबो न अइले पिहा घरे होऽ . . । कलपत···· ।

कुइयां क पनियां रानी करे असनान हो—
खजुरी चढ़इया केस झारै—
तबउ न अइले पिया मोऽर ।
दिनवां जोहत-जोहत अङुरी पिराये
बतिया जोहत नैना ढारै[5] होऽ . .
न संझा[6] ले अयनऽ पिहा मोऽर ।

1—निरमोही, 2—पिया, स्वामी, 3—मासूम, 4—रक्षक, 5—आंसू बहाती है, 6—सायंकाल ।

(निरमोही स्वामी चले गये तो अभी तक न आये, मेरा जी कलप रहा है और प्राण जाना चाहते हैं । जब मैं मासूम-अल्पवय की थी तब तो वह मेरे साथ रहे और आज जब मस्त जवानी आयी तो वनजारा बन गये। बीच शहर में रानी ने कुआं खोदवा दिया, तब भी मेरे प्रियतम घर नहीं आये । कुआ पर स्नान करके खजूर के वृक्ष पर चढ़ कर अपने केश संवारती रही, आने के दिन की गणना करते अंगुली दूखने लगी, आंसू ढ़ारती रही तब जाकर सायंकाल स्वामी का आगमन हुआ ।)

—०—

निखट्टू पति

एइसे निखट्टू कमवां न करे रेऽ . .

एइसे निखट्टू कमवां न करे रेऽ . .
ससुवा के तनवां[1] जियरा में गड़ि जाय रेऽ . .
बाबुला[2] बियहलेस देखि घर-बरवा—
फूटि गइले मोरे करमवां रेऽ . .
एइसे निखट्टू[3] कमवां न करे रेऽ . .
केकरे घरे रोटिया माङे जाई रेऽ . .

भूख बिन जरत बाय छतिया—
कइसे के दुधवा पियाईं रेऽ . .
परिगल सूखा पानी नाहीं कुइयां[4]
कइसे क सइयां बदे पनियां लियाईं[5] रेऽ . .
एइसे निखट्टू कमवां न करे रेऽ . . ।

1—ताना, व्यंग्य, 2—पिता ने, 3—बेदर्दी, नालायक, 4—कुआं, 5—ले आऊँ ।

(ऐसा निखट्टू पति मिला कि कुछ काम ही नहीं करता। उसके कारण सास की लगने वाली बातें सुननी पड़ती हैं । क्या कहूं । पिताजी ने तो देखकर ही (घर-वर) व्याह रचाया था, मेरा ही करम फूट गया । किसके घर रोटी कमाने जाऊँ. भूख के मारे छाती जल रही है, दुधमुहें बच्चे को दूध कैसे पिलाऊं ! सूखा पड़ जाने के कारण कुएं का पानी भी सूख गया है, मैं स्वामी के लिए पानी कहां से लाऊं ! क्या करूं, ऐसा निखट्टू मिल ही गया तो क्या करूं ?)

—०—

वियोग : शृंगार

अब दिल टूटऽल होऽ . .

के राजा घूमऽनऽ अकेल दिल टूटऽल हो ।
अब दिल टूटऽल होऽ . . ।
ईहइ सनेसा लेले जाइब अब दिल टूटऽल हो ।
नैहर के आवा-जाही छूटि गयऽल
हमके डेरवा में खबवा अकेल
अब दिल टूटऽल होऽ . . ।

केकर राजा घूमल अकेल, अब दिल टूटऽल होऽ . . ।
कैसे सिकार के जाऊं, अब दिल टूटऽल होऽ . . ।
अब ईहइ सनेस लेले जाइब
नैहर के अब माया छूटऽल
अब दिल टूटऽल होऽ . . ।

नरायन पत्थर भगवान, अब दिल टूटऽल होऽ . . ।
करम देवता हो, आजु काहे आंङन में ठाढ़ ?
चरना में रहली उपासे, करम देवता होऽ . . ।
आजु काहे अंगना में ठाढ़, करम देवता होऽ . . ।
लेकिन पलना में खइली दूध-भात, करम देवता होऽ . . ।
तोहरे चरना में रहली उपासे, अब दिल टूटऽल होऽ.. ।
आजु काहे अंङना में ठाढ़, करम देवता होऽ . . ।

(मेरे पति न जाने कहां अकेले चले गये, इससे मेरा तो दिल ही टूट गया । वे मिल जाते तो मैं उनको उलाहना देती कि आप के लिए मेरा नैहर छूटा, सब सखी-सहेलियां छूट गयीं, अब डेरा में अकेले बनाना-खाना अखरता है । मैं शिकार के लिए केसे जाऊं ? नैहर का माया छूट गया क्या करूं, मेरा भगवान भी पत्थर हो गया है ।

हे कर्मदेव ! तुम आँगन में खड़े हों मैं तो व्रत रहती हुई तुम्हारे चरणों में लीन थी । जब मैं पलने में थी तो दूध-भात खाती थी और आज तुम्हारे चरणों में उदास पड़ी हूं और तब भी तुम पत्थर बने हुए हो ! मेरा पति न जाने कहां अकेला घूम रहा है । तुम उससे मुझे मिलाओ, वर्ना दिल टूट जायगा ।)

—०—

वियोग शृंगार

बहुत दिन बीतल बाऽ होऽऽऽ

आगे-आगे रेल चले बोहला में गाड़ी
आवेदा पसिंजर भागि चलऽ होऽ.... ।
सरसो के घेर पाला मारे तेलवा, महंङ भयल होऽ...।
पहुना रसोईं घरे बइठावऽ ला होऽ...
छोड़ी गइल ऽ परदेस बहुत दिन बीतलऽ हो ।
तुहूं त गइलऽ राजा पुरुबे बनिजिया[1]
पिछवां कहेला एक बतिया, बहुत दिन बीतल होऽ....।

सासू संङ खाईला ननद संग सोईला
भइया लहुर देवर रखवार बा–
बड़ा माया लागत बा होऽ... ।
लहुरा देवर जइसे बेटवा बराबर
मइया सइयां बगर सेजिया उदाऽस
बहुत दिन बीतल होऽ... ।

दिनवां गिनत राजा अंगुरी पिरयनी
फटहा लहंगा भयल जात बा होऽ...
सोने गिलसिया गङ्गा जल बा पनियां
पनियां पीये ना राजा अइला होऽ....।

सोने थरिया[2] में जेवना जुड़वतीं–
भइया जेवना जेवे के कहां गइनऽ होऽ... ।
बहुत दिन बीतल होऽ... ।

सेजिया लगवली अ फूल छितरवली
सेजिया सोवइ कहां गइला––
ना राजा अइला होऽ...।
बहुत दिन बीतल होऽ... ।

दिनवां गिनत राजा अंङुरी पिरावै[4]
बतिया जोहत रहली अकेल, जुग नाहीं बीतत होऽ...

सबके बलम रहे घरवां–दुवरवां
हमरे बलम परदेस होऽ··· ।
थहुत दिन बीतल बा होऽ... ।
कैसे के करी सिंङार होऽ.... ।
जब से बलम हमार परदेसवां—
दिनवां ना बीतत बा होऽ.... ।

हथवा धऽरु भउजी छतवा तउली
लेकिन धरऽता मरद का भेस हो भउजी
तूं तनी देखि आवऽ होऽ.... ।
दिनवां गिनत मोर अंगुरी पिरइनी[4] —
बतिया जोहत दिन बीतल होऽ...।

सासु पुरानी हमार हेरि—हेरि जानी,
ननदी चमकि घर जाइं
अकेले घर कइसे बीतत बा होऽ.. .।
तुहूं राजा हो घरे रखवरिया[5]
हम जाबे राजा के खोजारे
बराभिन[6] के माया लागत बा होऽ..।
बहुत दिन बीतल होऽ....।

1—कमाने के लिए 2—थाली, 3—बिखरायी, 4—दुखायी, 5—रक्षक, 6—ब्राह्मणी।

(बहुत दिन बीत गये, स्वामी नहीं आये। बोहला में रेलगाड़ी आगे-आगे चली जा रही है। सरसों का तेल महंगा हो गया, मेहमानों को घर में बिठा दिया, क्या कहूं, कैसे उनका सत्कार करूं, पिया तो घर पर हैं ही नहीं। बहुत दिन हुए, वे छोड़ कर परदेश चले गये। हे स्वामी ! तुम तो पूरब देश कमाने गये थे, फिर आये क्यों नहीं ? शीघ्र आनें का वादा करके गये थे नऽ, फिर इतने दिन कैसे बीत गये ? मैं सास जी के संग खाती और ननद के संग सो रहती हूं, लहुरा (छोटा) देवर मेरा रक्षक बना हुआ है, लेकिन अब बड़ी माया लग रही है। मेरा छोटा देवर बेटे के समान है, स्वामी के बिना सेज उदास है। दिन गिन उंगलियां दूखने लगीं, लहंगा फटता जा रहा है। हे स्वामी ! तुम्हारे लिए सोने की गिलास में गंगाजल लेकर और सोने की थाल में जेवना सजा कर उसे जुड़ा रही हूं क्या करूं जेने के समय तुम न जाने कहां चले गये और इतना ही नहीं, तुम्हारे लिए सेज लगा कर उस पर फूल बिछा कर प्रतीक्षा कर रही हूं, उस पर कोई सोनेवाला ही नहीं है। सबके स्वामी अपने घर हैं और मेरे स्वामी परदेश हैं, फिर अपना शृंगार भी कैसे करूं ? हे भाभी ! उनका छाता और उनकी तौलिया हाथ से पकड़ो, क्योंकि जब भी मैं इन्हें देखती हूं, उन्हीं की मूर्ति सामने आ जाती है। बुड्ढी सास जी खोजती हैं, ननद चमक कर घर चली जाती हैं, मैं घर अकेले कैसे रहूं ? उसकी दशा को देख कर उससे दु:खी होकर उसकी पड़ोसी ब्राह्मणी अपने स्वामी से कहती, "अब आप घर देखिये मैं, उसके पति को खोजने जाती हूं।" ब्राह्मणी को उसकी दीन-दशा पर तरस आती है।)

विशेष—इस गीत में वियोग शृंगार का बहुत ही मार्मिक चित्र अंकित है जो अन्यत्र दुर्लभ है।

—०—

वियोग - शृंङ्गार

आवसु ना बेदर्दी छैला रेऽऽऽ

अंखिया दहके नयना दुहरे,
आवसु ना बेदर्दी छैला रेऽ . . ।
लकड़ी गढ़त मोरा बिछुआ टूटल,
महुवा बिनत मोरा लहंगा छूटल ।
आवसु ना बेदर्दी छैला रेऽ . . ।
कहि गल आउब ओइ चउमासे,
बीतल दुइ चउमासे रेऽ . . ।
तेनुईं क पतवा तोड़त मोर चुरिया फूटल,
कोइना[1] बिनत मोरा चोलिया फाटल ।
आवसु ना बेदर्दी छैला रेऽ . . ।
संसिया टंङल मोर बंसवा के पोरवां,
अंखिया टंङल मोर बनवां के छोरवां ।
कइसी क आई मोरा बेदर्दी छैला रेऽऽऽ ।
सङ्घतिया बहुरियन[2] के,
भरनऽ छोकड़वा[3] के रेऽ . . ।
आपन कोखिया न एकउ छोकड़िया[4] रेऽ . . ।
आवसु ना बेदर्दी छैला रेऽ . , ।

1—महुआ का फल, 2—दुल्हनें, 3—बालक, 4—बालिका ।

(अंखियां दहक रही हैं, प्रतीक्षा करते नेत्र थक गये हैं पर मेरे छैला (प्रियतम) नहीं आये। लकड़ी काटते मेरा बिछुवा टूट गया, महुवा बीनते लहंगा फट गया, तब भी मेरे प्रियतम नहीं आये । वे कहते गये थे कि मैं अगले चौमास जरूर आ जाऊंगा, लेकिन दूसरा चौमास भी बीत गया, वे नहीं आये । तेंदू का पत्ता तोड़ते मेरी चूड़ी चटक गई, चोली फट गयी, तब भी मेरे बेदर्दी बालम नहीं आये । मेरी सांसें बांस के पौर पर और आंखें वन के छोर में जा टंगी हैं, नहीं जानती कि मेरे बेदर्दी बालम कैसे आयेंगे । सहेलियों को छोकरे पैदा हो गये, लेकिन मेरे भाग्य में छोकरी भी नहीं बदी । काश ! प्रियतम आ जाते ।)

—०—

वियोग - शृंगार

सावन क चलइ पुरवइया पहार होऽ . .

सावन क चलइ पुरवइया पहार होऽ . .,
छैली तोरो बिन सून अंङनवां हमार होऽ . .।
केतक आस लेइ तोहके बियहली,
काहे बइठलि नइहरवां होऽ . .।
बिजुली चमकइ बदरा गरजइ,
भइया मोर हरकइं बाप मोर बरजइं।
जिनि गाउ अइसन करमवां होऽ...।

(सावन की पूरवा हवा चल रही है। हे छैल-छबीली ! क्या कहूं, तुम्हारे बिना तो आंगन ही सूना हो गया है। कितनी आशाएं लेकर तुम्हें ब्याहा था, लेकिन तुम तो नैहर बैठ गयी। बिजली की चमक, बादलों की गरज अच्छी नहीं लगती। माता पिता करमा गाने से मना करते हैं।

—०—

वियोग - शृंगार

सांयां मोरा गइले परदेस

होऽ . . रेऽ . .
सांया[1] मोरा गइले परदेश
केतक दिनवां बीतेऽ . . रेऽ . . ।
ओकरे बिना सासु गरियावें[2],
ननदा झोंटा धइ घड़िलावें[3]
केतक दिनवां बीतेऽ . . रेऽ . . ।

हे डीह[4] बाबा तोके मुर्गा चढ़ाइब,
मोरे छइला के पठावा
चउतरा लिपाइब, ओके बुलावा हो रेऽ . . ।

1—स्वामी, 2—गाली देती हैं, 3—घिसलाते हैं, 4—आदिवासी-देवता ।

(पतिदेव को परदेश गये कितने दिन बीत गये । सास जी गाली देती हैं; ननद बाल खींच कर घसीटती हैं । हे डीह बाबा ! मेरे स्वामी को भेजो, मैं तुम्हें मुर्गा चढ़ाऊंगी, चौतरा लिपवा दूंगी, किसी तरह उन्हें शीघ्र भेजो ।)

—०—

2507

कोरवा : निरगुन

असुर कंदा खेले बंसा डारेऽ . .

असुर कंदा खेले बंसा डारेऽ . .
एसे जियरा[1] हारेऽ . .
आइ त गइले चांदे के डेरा
झमारेझम आइ त गइले ।
केकर डेरा परिगल रूखा[2] हो बिरिछतर[3]
केकर डेरा जमुना किनारे ?
राजा डेरा परिगल रूखा बिरिछतर
रानी क डेरा परिगल जमुना किनारे । असुर··· ।
केकर डेरा बोलइ ढोल-दमउरे
केकर डेरा नाचे नाच धारे ।
राजा डेरा बोलइ ढोल-दमउरे[4] ।
रानी डेरा नाचे नाच धारे ।

1—जी, जान, 2—सूखा, 3—वृक्ष के नीचे, 4—ढोल-दमामा ।

(जंगल में नदी के किनारे एक साधु धुइँ रमा कर रहता था। वहाँ एक बार राजा-रानी पहुंच गये और सूखे वृक्ष के नीचे डेरा डाल दिये। रानी ने भी अपना डेरा यमुना-तट डाल दिया। राजा के डेरा के पास ढोल-मजीरा बजता तो रानी के डेरा के पास नाच होता। फलतः साधु को भाग जाना पड़ा।)

विशेष—यह गीत करमा क्रते समय आधी रात गाया जाता है।

—०—

वियोग : शृंङ्गार

अमवां के बगिया...

अमवां के बगिया चारिगो नेबुइया,
तोरत नीक लागे रेऽ . .
खण्डा-टुक्का खाइके,
पेंड़वा लगउले रे।
खाये के दइयां छोड़ गल,
परदेसी रेऽ . .।
बेचि-बेचि लकड़ी घरवा बतउले रेऽ . .।
रहइ के दइयां छोड़ गल देस रेऽ . .।

(आम के बाग में चार पेड़ नीबूके हैं। उन्हें तोड़ते अच्छा लगता है। खण्ड टुक्का खाकर उन वृक्षों को रोपा था। जब पेड़ बढ़ कर बड़े हुए, उसमें फल आने का समय हुआ तो मेरे बालम परदेश चले गये। लकड़ी बेच-बेच कर घर बनवायी तो रहने के समय भी वे घर छोड़ कर विदेश चले गये।)

—०—

एकनारी ब्रह्मचारी

उढ़री कराना हम बियाही छोड़ली यार

उढ़री कराना हम बियाही[1] छोड़ली आर
तिरिया[2] कराना हम पहाड़ी डेरा आर ?
नाधली नाग भइंसा बरधन[3] क लेखा नाहीं
बछवन[4] के कवन भरोसा

नाधाली माल बाघ
जोतइ कहइं हमके
खोदि[5] दिहली जदा-बदा
त काटइ दउड़इं हमके
आन लेहन बर-बियाही
अरघिन के लेखा नाहीं
उढ़री के कवन भरोसा।

1—ब्याही, विवाहित, 2—स्त्री, 3—बैल, 4—बछड़े, 5—अरई लगाना।

(उढ़री (दूसरे की पत्नी लो भाग कर आयी हो या भगा कर लायी गयी हो) के लिए मैंने अपनी विवाहिता पत्नी को त्याग दिया और स्त्री के कारण मुझे पहाड़ी पर डेरा डालना पड़ा।

बैलों की क्या गणना, मैंने तो नागदेव तथा भैंसों को नाथा है, उनसे हल चलाया है। बछवों की भी क्या बात जब मैंने बाघों को नाध कर उन्हें अंट-संट खोद दिया तो वे काटने के लिए दोड़ पड़े। उढ़री के आने पर लोगों ने हक-पद तो ले ही लिया, लेकिन उढ़री का भरोसा क्या है।[२])

विशेष—१—इस गीत का नाम 'दुइदुई' यानी 'दोहा' है।

२—आदिवासियों में उढ़री को रख लेने की प्रथा प्रचलित है।

—०—

सर्प-दंश : शोक-गीत

रसिया[1] के काहें नागा डंसल रेऽ[2]..

रसिया के काहे नागा डंसल रेऽ..
भाई रोवे गोड़तर[3]—
बहिन रोवे मुड़तर[4]। काहे···।
धनियां रोवल पटसार[5]। काहे···।

चारों कुटुम मिल एकमत होबे
ले चल जमुना किनारे असनान करे
काटी-काटी डंसना[6] बनावे । काहे... ।
भुइयां सारंग मेड़रावे
काहे नाना डंसन रेऽ

1—रसिक, प्रेमी, 2—डंसलिया, 3—पैताने, 4—सिरहाने, 5—पाटी पर 6—विस्तर ।

(रसिया को नाग ने क्यों डस लिया ? उसके कारण भाई पैताने बहिन, सिरहाने और उसकी पत्नी चारपाई की पाटी पकड़ कर रो रही है । उसके कुटुम्ब के लोग यमुना स्नान करने जाते हैं, फिर घर आकर पुवाल पर बैठ कर शोक मनाते हैं । क्या करें नाग ने तो डस ही लिया ।)

विशेष—यह गीत सिल्थम ग्राम में अनन्त चतुर्दशी के अवसर पर आयोजित करमा नृत्य से संकलित है ।

—०—

शोक-गीत : गरीबी

केतक[1] राति आवरो[2] रे सखि

केतक राति आवरो रे सखि ।
भिनुसहरां छूटे ला परान ।
काहे खातिन जिया मेड़राये[3] ?
काहे खातिन अगिया लगाये ?
बहिनी रोवे मूड़े तरे, भाई रोवे पाटी लागि
तिरिया गोड़े[4] तरे जाई हो । केतक··· ।
हंसुली बेचि हम लकड़ी गढ़उबे,
बिछुवा बेचि अरथी सजउबे,
ठुमकिय[5] बेचि मुख आगि लगउबे । केतक··· ।

1—कितनी, 2—और, 3— मोह करे, 4—पैर-पांव, 5—आभूषण विशेष ।

(भिनुसारे (भोर) प्राण छूट गये, रात कैसे बीते ? सबने भीड़ लगा लिये। आग कैसे लगाई जाय ? बहिन सिरहाने रोने लगी, भाई पाटी पर बैठ कर रोने लगा, स्त्री पांवों के पास बैठ कर विलाप करने लगी। घर में तो कुछ है नहीं कि दाह-संस्कार की सभी क्रियाएं पूरी की जायं। अतः उसकी पत्नी कहती है, "हंसुली बेच कर मैं लकड़ी गढ़ाऊंगी, बिछुवा बेच कर अरथी सजाऊंगी और ठुमकी बेच कर मुख में आग लगवा दूंगी। शेष क्रियाएं हों या न हों।

विशेष—गरीबी का इससे मर्मस्पर्शी चित्र और क्या हो सकता है।

—०—

जीवन : दर्शन

जीवा माहुर भइले रेऽ..

कवन नगरिया सूना कइले—
जीवा माहुर भइले रेऽऽऽ।
हरदी नगरिया के सखी सहेलर,
सहर नगरिया कइले जालू,
जीवा माहुर भइले रे।
केहू त खोजत एहरी-देहरी
केहू त खोजत खोरिया घूमे रेऽऽऽ
जीवा माहुर भइले रेऽऽऽ।
माई खोजत एहरी—
बहिन खोजत देहरी
तिरिया खोजत खोरिया घूमे रेऽऽ
जीवा माहुर भइले रेऽऽ।

(तुम किस नगर को सूना करके चली गयी ? इससे जीवन जहर हो गया। हरदी नगर की सखी-सहेलियां भी नगर को सूना करके चली गयीं। जीवन जहर हो गया। कोई देहरी पर खोजता है तो कोई गलियों में खोजता फिरता है। मां देहरी तक खोजती है तो स्त्रियां गांव की गली तक खोजकर थक जाती हैं, पर वह कहीं मिलती नही है।)

—०—

तोहि बिन रे गढ़ सून रे परेवना

तोहि बिन रे गढ़ सून रे परेवना । तोहि··· ।
के तोरा पोसे पेड़कू-परेवना
के तोरा पोसे ला कोइल-बाज—
रे परेवना, के तोरा पोसे कोइल-बाज ।
राजवा त पोसे पेड़की-परेवना
रनियां पोसे ला कोइल बाज । रे परेवना··· ।
कारे खियावे पेड़की-परेवना
कि कारे पियावे कोइल बाज । रे परेवना··· ।
दनवां खियावे पेड़की परेवना
दुधवा पियावे रे परेवना ।
कहवां रखले पेड़की-परेवना
कहवां सोवावे परेवना
पिजड़ी ही रखते पेड़की-परेवना
सेजिया सुवावे रे परेबना
तोहि बिना गढ़ भइले सून रे परेवना । तोहि बिना···· ।

(हे परेवा ! (प्राण) उसी दिन से तुम्हारे बिना यह गढ़ (शरीर ?) सूना हो गया जिस दिन तुम उड़ गये । हे पेडुकी ! (चिड़िया) परेवा ! बताओ तो सही, तुम्हारा पालन-पोषण किसने किया था ? हे कोयल !, बाज ! तुम भी बताओ कि तुम्हारा पालन-पोषण कौन करता है ? लगता है, राजा पेंडुकी और परेवा का पालन-पोषण करता है और रानी कोयल तथा बाज का । ये इन्हें खिलाते-पिलाते क्या हैं ? ऐसा प्रतीत होता है कि राजा पेडुकी-परेवा को दाना खिलाता है और रानी कोयल-बाज को दूध पिलाती है । आखिर वे उन्हें पिजड़े में बन्द करके रखते हैं, किन्तु रानी कोयल-बाज को अपनी सेज पर सुलाती है । तुम क्यों उड़ गये ? तुम्हारे उड़ जाने से गढ़ सूना हो गया ।)

विशेष-इस गीत से दार्शनिक भावना का परिचय मिलता है । पशु-पक्षियों को प्रतीक रूप में ग्रहण किया गया है ।

—०—

धरकार : क्षणभंगुर संसार

बरम्हा लीखइ बनरबास[1]

"केकर सिरजल[2] काठ क गउरा
केकर[3] सिरजल राज
केकर सिरजल राई रतनपुर
कलपइ दीना-रात[4]
बरम्हा लीखइ बनरवास ।"
रानी क सिरजल काठ क गउरा
राजा क सिरजल राज
लल्लू क सिरजल राई-रतनपुर
कलपइ दीना-रात ।
बरम्हा लीखइ बनरबास ।

1—वनवास, 2—बनाया, 3—किसका, 4—दिन-रात ।

(इस संसार मैं कुछ भी स्थायी रहने वाला नहीं है । कोई भव्य प्रासाद बनवाता है, कोई राज्य स्थापित करता है, कोई रत्नों के नगर बसाता है, लेकिन अंत समय क्या होता है ? कुछ स्थिर रह जाता है ? नहीं, ब्रह्मा (भाग्य) उसे भी वनवास लिख देते हैं । फिर, इस नश्वर संसार के प्रति मोह क्यों ? परसेवा, परोपकार सबसे बड़ा धर्म है ।)

—०—

संसार से विरक्ति

माटी देहियां माटी मिलि जानी

माटी देहियां माटी मिलि जानी
माटी के काया माटी मिलि जानी
अइसन परान उड़ि गइनऽ होऽऽऽ ।
मति रनियां रोइबा हो मति पछितइबा
ई त परान-पंछी उड़ि जाई रेऽऽऽ ।

तर भइलिन खटिया उपर भइलिन पटिया
गुन-गुन के नेहियां लगावऽ होऽऽऽ
मसुआ त सड़ि-सड़ि भुइयां गिरि जाई रे
हड़वा त बनारस चलि जाई रेऽऽऽ।
ई त परान पंछी उड़ि जाई रे।
माटी देहियां माटी मिलि जाई रेऽऽऽ।

(मिट्टी का शरीर मिट्टी में मिल जाता है। शरीर का इतना सुन्दर प्राण उड़ ही जाता है। हे रानी ! रोओ, पछताओ मत। मरने के बाद तिलठी पर सबको जाना है, इसका विचार करके ही संसार से नेह लगाना। मरने के बाद मांस सड़ जायगी, हड्डी बनारस चली जायगी, प्राण-पक्षी उड़ जायगा फिर इससे मोह क्यों किया जाय।)

—o—

दुर्गा : पूजा

मङिया एंङुर ढारत बाय

नीचे से उतरइ चर कुतरइया
एङुर ढारल बाय
सेज ओरी बइठइं राजा दसरथ
पगिया संवारत भोर परि गयल
गड़ि गयल अङुरिया में फांस।
मंङिया एंङुर ढारत बाय।

(रानी ने मांग में सिन्दूर, एंगुर पहन रखा है। राजा दशरथ ऊपर से नीचे रानी के महल में जब प्रवेश करना चाहते हैं तो रानी को मांग संवारते देख ठिठक जाते और अपनी पगड़ी संवारने लगते हैं। इतने में भोर हो जाता है। पगड़ी संवारते उनकी उंगली में फांस गड़ जाता है।)

—o—

बन केदली सेऽ

बन केदली से सजै हंथिनियां
बन केदली से सजै नथुनियां
अल्हा भयल असवार हो माऽऽइ।
एक परे लादै झण्डा
एक परे लादै निसान हो माऽऽइ।

(केदली-वन से हाथी सज कर चला, जत्थे के साथ चला, उस पर आल्हा सवार हो गया। एक हाथी पर झण्डा और दूसरे पर निशान (विजय की पताका) लेकर चल पड़ा।)

विशेष—आल्हा दुर्गा-भक्त था।

—०—

खरवार : नारी-चरित्र

रापटगज क सिपहिया होऽ..

रापटगज क सिपहिया होऽऽऽ
हमसे पानी मांङे।
दूरी से पनियां टेकाइब हो
नियरे नाहीं जाब।

(राबर्ट्सगंज स्टेशन पर आदिवासी-परिवार टिका है। एक युवती को देख कर सिपाही की नीयत खराब हो जाती है। अतः युवती कहती है "राबर्ट्सगंज का सिपाही मुझसे पानी मांगता है। मैं उसकी नीयत को जानती हूं इसलिए दूर ही से पानी टेकाऊंगी, पास नहीं जाऊंगी।)"

विशेष—इस छोटे से गीत में रक्षक का ही भक्षक होने की भावना, ऐसे भक्षक के भी आतिथ्य की भारतीय परम्परा और आदिवासी युवती के चरित्र-बल का एक साथ परिचय मिल जाता है।

—०—

रामायण - प्रसंग

तैं रावन बड़े गारभी होऽ..

तैं रावन बड़े गारभी हो,
आवत हैं दूनों तापसी।
का करिहैं अगिन-बान,
का करिहैं चाकरा-बान।

मारिहैं अगिन-बान,
भुजिहैं चाकरा-बान ।
जिउ लेइहें ऊहइ बांसुरी हो,
तैं रावन बड़े गारभी हो ।
आवत है ··· ··· ··· ।

(तुम रावण बड़े घमण्डी हो, रुको, दोनों तापसी (राम-लक्ष्मण) आ रहे हैं । तुम्हारा अग्निबाण और चक्रबाण उनके सामने नाकामयाब रहेगा । वे तापसी तुम्हें जान से मार डालेंगे ।)

—o—

मंत्र-गीत

बिच्छी उतरइ कान-कपार

बिच्छी उतरइ कान-कपार !
पर्वत उपरां सुरही गाइ
ओकरे गोबरे बिच्छी बियाइ ।
छू काली, छू गोरी,
छू कूहूं का बाहु ।
जेकर झारइ बिच्छी ओकर उतारइ
दोहाई गौरा पारवती की—
दोहाई पांचों पाण्डवों की ।
सोने क बिच्छी, रूपे क हार
बिच्छी उतरइ कान-कपार ।।

(पर्वत के ऊपर सुरही ग्राम है, उसी के गोबर से बिच्छी पैदा होती है । काली-गोरी की छू-मन्तर, दोहाई गौरा पार्वती की, दोहाई पांचों पाण्डवों की, सोने की बिच्छी, चांदी का हार चढ़ाया जायगा । हे बिच्छी ! कान-कपार (सिर) से उतर जा ।)

विशेष—गोबर से बिच्छी का पैदा होना प्रामाणिक सत्य है । उसको देवी पार्वती की दोहाई देकर इसी मन्त्र से बिच्छू झाड़ा जाता है । इसी प्रकार सर्प-दंश, बुखार, बात, टोना-भूत आदि बाधाओं से बचने के लिए आदिवासी ऐसे मन्त्रों का प्रयोग करते हैं ।

—o—

परिशिष्ट—१

स्वरलिपि

रे करम देवता हो ।
बनवां में रहली उपासे
रे करम देवता हो ।।

स्थायी : रे ऽ म गरे रे ग रे ऽ सा ऽ ऽ ऽ ऽ

रे ऽ क रम् दे व ता ऽ हो ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा : साऽ रे म ग ऽ रे गरे सा

बन् वां में र ह ली उपा से

म ग ऽ रे ग ऽ ग रे सा ऽ ऽ ऽ ऽ

रे क र म दे ऽ व ता हो ऽ ऽ ऽ ऽ

करमा गायकी में केवल शुद्ध स्वरों का प्रयोग किया जाता है—षड्ज, ऋषभ, गान्धार तथा मध्यम । इसका गायन केवल मध्य सप्तक के द्रुत लय में होता है तथा दोनों अंगों—स्थायी और अन्तरा में समान स्वरों का प्रयोग किया जाता है । भाव-प्रधान इस गायकी के साथ मादल (मानर) नामक वाद्य बजाया जाता है । मादल पर बजने वाला ताल दादरा (धा धी ना धा तू ना) के काफी निकट है लेकिन बोल केवल 'धा धि न्ना' ही बजते हैं ।

करमा गीत की प्रस्तुति में स्वर-वाद्य का प्रयोग नहीं किया जाता । गायक मध्य षड्ज में मिले हुए ताल-वाद्य 'मादल' को स्वयं बजाकर गायन करता है, जिससे उसकी स्वर और लय की जानकारी का भी सही परिचय मिलता है ।

● कमलेश कमल

परिशिष्ट–२

करमा-गायक-गायिकाओं की सूची

क्रमांक	नाम	पता	जाति	अवस्था	क्या पेशेवर हैं ?
1	अम्बेलाल	ओबरा, मिरजापुर	घसिया	16	हाँ
2	ईसरलाल	अनपरा, मिर्जापुर	धरकार	80	हाँ
3	कौशिल्या	सिल्थम, रामगढ़ मिर्जापुर	धांगर	40	नहीं
4	गुलबिया देवी	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	30	नहीं
5	जवाहिर	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	40	नहीं
6	दुलारी देवी	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	25	नहीं
7	देवचन	छपका, मिर्जापुर	भुइंहार	50	नहीं
8	धनई	टिहरी डांड, अगोरी	अगरिया	50	नहीं
9	नरेश	चिरुई मड़कुडी, चोपन	मांझी	2	हाँ
10	धमरी देवी	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	20	नहीं
11	परमेश्वर	पटना, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	30	नहीं
12	बदरी	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	50	हाँ
13	बच्चन	मन्ठहवां, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	35	नहीं
14	बन्हिया देवी	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	50	नहीं
15	भगावन	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	38	हाँ
16	भुवनेश्वर	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	48	हाँ
17	मुन्नी	परसीला, अगोरी, मिर्जापुर	भुइंहार	45	हाँ
18	मेघू	मन्ठहवीं, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	40	हाँ
19	मुधनी देवी	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	40	हाँ
20	राजनाथ	दुरदुरा, रीवां बार्डर, मिर्जापुर	धांगर	55	हाँ
21	राम मन	बसखरिया, मिर्जापुर	भुइंहार	45	हाँ
22	रामबरन	कोटा, मिर्जापुर	पनिका	48	हाँ
23	राजकुमार	चिरुई मड़कुड़ी, मिर्जापुर	मांझी	11	हाँ
24	रामचरन	ओबरा,मिर्जापुर	पठारी	14	हाँ
25	रासबिहारी	अनपरा, मिर्जापुर	पनिका	70	हाँ
26	रामप्रसाद	हरिनाडार, मिर्जापुर	लोहार	42	हाँ
27	राजदेव	सिल्थम, राजगढ़, मिर्जापुर	धांगर	50	हाँ
28	रामदास	भीखमपुर, रामगढ़ मिर्जापुर	धांगर	45	नहीं
29	लालधारी	मन्ठहवाँ, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	40	हाँ
30	लालमन	चाइमपुसरेंव, रीवां बार्डर	भुइंहार	50	हाँ
31	शंकर	ओरमौरा, राबर्टसगंज	बियार	50	हाँ
32	शिवदास	पटना, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	30	नहीं
33	सुक्कर	भीखमपुर,रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	35	नहीं
34	सुखनी देवी	सिल्थम, रामगढ़, मिर्जापुर	धांगर	50	हाँ
35	सरजू	जोंगइल, अगोरी,मिर्जापुर	खरवार	45	हाँ

परिशिष्ट—३

सन्दर्भ-ग्रंथ (हिन्दी)

सहायक और सन्दर्भ ग्रंथों की सूची

1—अमरकोश
2—अवधी लोकगीत एवं परंपरा : इन्दु प्रकाश पाण्डेय
3—कविता कौमुदी (ग्रामगीत) : राम नरेश त्रिपाठी
4—भोजपुरी ग्रामगीत : डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय
5—छत्तीसगढ़ : लोकगितों का परिचय : श्यामाचरण दुबे
6—बघेली लोकगीत : लखन प्रताप उरगेश
7—बुन्देलखण्ड के लोकगीत (दस भाग) : उमा शंकर शुक्ल
8—भोजपुरी लोकगीत, : डॉ० कृष्ण देव उपाध्याय
9—भोजपुरी संस्कार गीत : हंस कुमार तिवारी
10—भोजपुरी ग्रामगीत : आर्चर डब्ल्यू० जे० और संकठा प्रसाद
11—भोजपुरी लोकगीत : डॉ० उदय नारायण तिवारी, विद्यानिवास मिश्र
12—मैथिली लोकगीत : राम इकबाल सिंह 'राकेश'
13—मैथिली लोकगीतों का अध्ययन : तेज नारायण लाल
14—लोकगीतों की सामाजिक व्याख्या : श्रीकृष्ण लाल
15—लोरिकायन : अर्जुनदास केसरी
16—विन्ध्य प्रदेश के लोकगीत : श्रीचन्द जैन
17—हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य : शंकर लाल यादव
18—हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास : राहुल सांकृत्यायन

(अंग्रेजी)

1—क्लाजिकल डांस एण्ड कस्टम्स ऑफ इण्डिया—लन्दन 1951, डांसिंग फूट डेलदी 1657
2—हिन्दी फोकसांग्स : शेरिफ, ए० जी०
3—फोकसांग्स ऑव छत्तीसगढ़ वेरियर एल्विन
4—फील्ड सांग्स ऑव छत्तीसगढ़ : ए० सी० दुबे
5—फोकसांग्स आफ मिरजापुर : मजूमदार डी० एन०
6—फोक ओरिजिन्स ऑफ इण्डियन आर्ट : कर्ट मौरी
7—फोक ब्रान्जैज ऑफ नार्थ-वेस्टर्न इण्डिया रीडिंग आन म्युजिक के० सी० आर्यन
8—फोकडांस एण्ड म्युजिक ऑफ उड़ीसा सम्भलपुर : धीरेन्द्रनाथ पटनायक 1952
9—पापुलर रेलिजन एण्ड फोकलोर ऑफ नार्थ इण्डिया इलाहाबाद 1894
10—द डांस आर्ट इन आंध्र प्रदेश : बी० ए० राव
11—द प्रीमिटिव सांग्स : सी० एस० बोरा
12—द फोकसांग्स ऑफ इण्डिया : प्रोजेश बनर्जी
13—गजेटियर आफ मिरजापुर : डी० एल० ड्रेक, ब्राकमैन